चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 251, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 10 अक्तूबर 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

पांच राज्यों में चुनावी शंखनाद

सभी राज्यों के चुनाव परिणाम तीन दिसंबर को आएंगे, कुल 16.14 करोड़ मतदाता इन चुनावों में अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे

नई दिल्ली

निर्वाचन आयोग ने सोमवार दोपहर 12 बजे एक अहम प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान पांच राज्यों में होने वाले चुनावों का एलान कर दिया गया। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम विधानसभा चुनावों की तारीखों के बारे में विस्तार से बताया। सभी राज्यों के चुनाव परिणाम तीन दिसंबर को आएंगे।

कुल 16.14 करोड़ मतदाता इन चुनावों में अपने मताधिकार का उपयोग करेंगेः मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने बताया कि कुल 16.14 करोड़ मतदाता इन चुनावों में अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे। इनमें 8.2 करोड़ पुरुष मतदाता, 7.8 करोड़ महिला मतदाता होंगे। इस बार 60.2 लाख नए मतदाता पहली बार वोट डालेंगे।

60.2 लाख नए मतदाता पहली बार वोट डालेंगेः खास बात यह भी है कि 60.2 लाख नए मतदाता पहली बार वोट डालेंगे। इनकी उम्र 18 से 19 साल के बीच है। 15.39 लाख वोटर ऐसे हैं, जो 18 साल पूरे करने जा रहे हैं और जिनकी एडवांस एप्लीकेशन प्राप्त हो चुकी हैं।

पांचों राज्यों में कुल 679 विधानसभा सीटेंः पांचों राज्यों में कुल 679 विधानसभा सीटें हैं। मध्य प्रदेश में इस वक्त भाजपा की सरकार है। वहीं, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस शासन में है। तेलंगाना में के. चंद्रशेखर

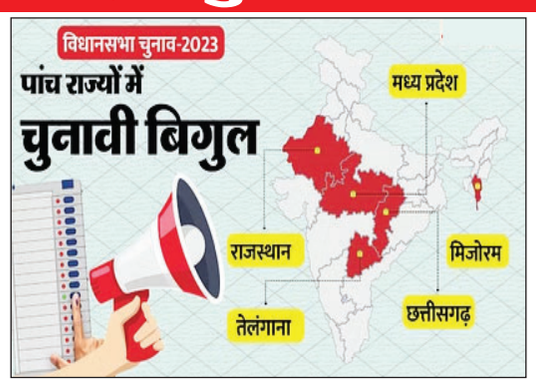

राव वाली भारत राष्ट्र समिति यानी बीआरएस की सरकार है। मिजोरम में जोरमथंगा की मिजो नेशनल फ्रंट सत्ताधारी पार्टी है। 2018 में पांचों राज्यों के विधानसभा चुनाव की तारीखों का एलान छह अक्तूबर को हुआ था। छत्तीसगढ़ में चुनाव दो चरणों में कराए गए थे। वहीं मध्यप्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में एक चरण में वोटिंग हुई थी। पांचों राज्यों के चुनाव नतीजे एक साथ 11 दिसंबर को आए थे।

पांचों राज्यों के चुनावी समीकरण

मध्यप्रदेश- राज्य में पिछला विधानसभा चुनाव 28 नवंबर 2018 को हुआ था। इस चुनाव के लिए कुल 2,899 उम्मीदवार मैदान में थे। चुनाव आयोग के मुताबिक, प्रति निर्वाचन क्षेत्र में औसतन 12 प्रत्याशी थे। राज्य में मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 3,78,54,811 थी। इनमें से 1,99,94,060 पुरुष, 178,60,401 महिलाएं और 350 थर्ड जेंडर्स ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था। पुरुषों के लिए मतदान 75.84%, महिलाओं के लिए 74.01% और कुल मतदान 74.97% रहा। एमपी में चुनाव नतीजे 11 दिसंबर 2018 को आए थे। 230 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस को बहुमत से दो कम 114 सीटें मिलीं थीं। वहीं, भाजपा 109 सीटों पर आ गई। हालांकि, यह भी दिलचस्प था कि भाजपा को 41% वोट मिले जबकि कांग्रेस को 40.9% वोट मिला था। बसपा को दो जबकि अन्य को पांच सीटें मिलीं। नतीजों के बाद कांग्रेस ने बसपा, सपा और अन्य के साथ मिलकर सरकार बनाई। इस तरह से राज्य में 15 साल बाद कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनी और कमलनाथ मुख्यमंत्री बने।

बॉक्स

राजस्थान में किसके सिर सजेगा ताज?

राजस्थान- राजस्थान में पिछला विधानसभा चुनाव 28 नवंबर 2018 को संपन्न हुआ था। इस चुनाव के लिए कुल 2,294 उम्मीदवार मैदान में थे। राज्य में प्रति निर्वाचन क्षेत्र में औसतन 11 प्रत्याशी मैदान में थे। मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 3,53,90,876 थी। इनमें से 1,83,44,351 पुरुष, 1,70,46,450 महिलाएं और 75 थर्ड जेंडर्स ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था। पुरुषों के लिए मतदान 73.49%, महिलाओं के लिए 74.67% और कुल मतदान 74.06 % रहा। राज्य में चुनाव नतीजे 11 दिसंबर 2018 को घोषित किए गए थे। अलवर की रामगढ़ सीट छोड़कर बाकी 199 सीटों पर मतदान हुआ। रामगढ़ सीट पर बसपा के प्रत्याशी लक्ष्मण सिंह के निधन के कारण चुनाव स्थगित हो गया था। इस चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा को पटखनी देते हुए 99 सीटें जीतीं। इसके साथ ही प्रदेश में हर पांच साल में सत्ता परिवर्तन का रिवाज कायम रहा। अब 2023 राजस्थान विधानसभा की बात करें तो इसको लेकर तैयारियां तेज हो चुकी हैं। इस बीच, राज्य में मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन कर दिया गया। अंतिम सूची के अनुसार प्रदेश में 5 करोड़ 26 लाख 80 हजार 545 मतदाता पंजीकृत किए गए हैं। इनमें से 2 करोड़ 73 लाख 58 हजार 627 पुरूष और 2 करोड़ 51 लाख 79 हजार 422 महिला मतदाता शामिल हैं।

छत्तीसगढ़: बघेल या रमन कौन जीतेगा जनता का भरोसा

छत्तीसगढ़- राज्य में पिछला विधानसभा चुनाव दो चरणों में कराया गया था। इस चुनाव के लिए कुल 1,269 उम्मीदवार मैदान में थे। राज्य में प्रति निर्वाचन क्षेत्र में औसतन 14 प्रत्याशी मैदान में थे।

मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 1,42,11,333 थी। इनमें से 71,36,626 पुरुष, 70,74,636 महिलाएं और 191 थर्ड जेंडर्स ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था। पुरुषों के लिए मतदान 76.58%, महिलाओं के लिए 76.33% और कुल मतदान 76.45% रहा। 2018 में राज्य में दो चरणों मतदान कराए गए थे। पहले चरण का मतदान 12 नवंबर 2018 और दूसरे चरण का मतदान 20 नवंबर 2018 को संपन्न हुआ था। छत्तीसगढ़ के चुनाव नतीजे 11 दिसंबर को आए थे। चुनाव नतीजे आए तो 90 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस को 68 और भाजपा को 15 सीटें मिलीं। जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) ने पांच सीटें जीते थीं और दो सीटें बसपा के खाते में गई थीं।

तेलंगानाः मतदाताओं की कुल संख्या में 5.8 प्रतिशत की वृद्धि

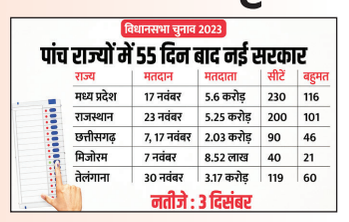

तेलंगाना- राज्य में पिछले चुनाव सात दिसंबर 2018 को हुए थे। इस चुनाव के लिए कुल 1,821 उम्मीदवार मैदान में थे। राज्य में प्रति निर्वाचन क्षेत्र में औसतन 15 प्रत्याशी मैदान में थे। मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 2,05,99,739 थी। इनमें से 1,03,28,078 पुरुष, 1,02,71,470 महिलाएं और 191 थर्ड जेंडर्स ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था। पुरुषों के लिए मतदान 72.90%, महिलाओं के लिए 73.86% और कुल मतदान 73.37% रहा।

मतदान केन्द्रों की संख्या 32,814 थी। 2018 में राज्य में सात दिसंबर 2018 को चुनाव संपन्न हुआ था। तेलंगाना के चुनाव नतीजे 11 दिसंबर को आए थे। इस चुनाव में 119 सदस्यीय विधानसभा में बीआरएस को 88, कांग्रेस को 19, आईएमआईएम को सात, टीडीपी को दो, भाजपा को एक, एआईएफबी को एक सीट मिली थी। इसके अलावा एक सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी को जीत मिली थी। इस बीच चुनाव आयोग द्वारा राज्य के लिए अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित कर दी गई है। यहां 3.17 करोड़ से अधिक मतदाताओं में से पुरुष और महिला मतदाता क्रमशः 1,58,71,493 और 1,58,43,339 हैं, जबकि 2,557 तीसरे लिंग के हैं। इस वर्ष की शुरुआत में 17,42,470 मतदाताओं की वृद्धि के साथ राज्य में मतदाताओं की कुल संख्या में 5.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

मिजोरम- राज्य में पिछले चुनाव 28 नवंबर 2018 को हुए थे। इस चुनाव के लिए कुल 209 उम्मीदवार मैदान में थे। राज्य में प्रति निर्वाचन क्षेत्र में औसतन पांच प्रत्याशी मैदान में थे। मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 6,20,008 थी। इनमें से 2,99,746 पुरुष और 3,20,262 महिलाओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था। पुरुषों के लिए मतदान 78.92%, महिलाओं के लिए 81.09% और कुल मतदान 80.03% रहा। मतदान केंद्रों की संख्या 1,170 थी।

पिछले चुनाव 28 नवंबर 2018 को हुए थे। इस चुनाव में 40 सदस्यीय विधानसभा में एमएनएफ को 27 सीटों पर जीत मिली थी। कांग्रेस ने चार सीटें, जबकि भाजपा को एक सीट पर विजय मिली थी। इसके अलावा आठ सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशियों को जीत मिली थी। इसके साथ ही राज्य में मुख्यमंत्री जोरमथंगा के नेतृत्व में एमएनएफ की सरकार बनी थी।

सुप्रीम कोर्ट ने कॉलेजियम की सिफारिशों पर केंद्र को फटकार लगाई

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजय किशन कौल की अध्यक्षता वाली बेंच ने कॉलेजियम की सिफारिशों पर केंद्र सरकार को फिर फटकार लगाई है। कोर्ट ने अटार्नी जनरल से कहा कि दशहरे की छुट्टियों से पहले जजों की नियुक्तियों से जुड़ा बड़ा हिस्सा खत्म हो जाए। जस्टिस संजय किशन कौल ने अटार्नी जनरल से कहा कि आप मुझे दशहरे के बाद अच्छी खबर देंगे। केंद्र सरकार जजों की नियुक्ति के मामले पर ऐसे बैठी नहीं रह सकती है। कोर्ट ने केंद्र

को आज फिर फटकार लगाते हुए अटार्नी जनरल आर. वेंकटरमणी से कहा कि हर बार आप कोर्ट को समझा नहीं सकते। कॉलेजियम ने जो नाम केंद्र सरकार के पास भेजा है या तो उनकी नियुक्ति करें या फिर उन्हें अपने विचार के साथ वापस सुप्रीम कोर्ट के पास भेजे।

सीडब्ल्यूसीः बैठक में कांग्रेस का चुनावी मंथन

पांच राज्यों में जीतने के लिए लगानी होगी पूरी ताकतः खड़गे

नई दिल्ली

दिल्ली के एआईसीसी के कार्यालय में कांग्रेस के कार्य समिति की अहम बैठक का आयोजन किया गया था। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को पार्टी कार्यकताओं से समन्वय, अनुशासन और एकता के साथ काम करने और पांच राज्यों में चुनाव जीतने के लिए पूरी ताकत लगाने को कहा। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की एक महत्वपूर्ण बैठक में पार्टी नेताओं को संबोधित करते हुए, उन्होंने एक बार फिर एससी, एसटी और ओबीसी को उनकी आबादी के अनुसार सामाजिक न्याय और अधिकार सुनिश्चित करने के लिए

देशव्यापी जाति जनगणना कराने की मांग उठाई।

महिला आरक्षण लागू करेंगेः खरगे ने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं में उचित हिस्सेदारी के लिए, समाज के कमजोर वर्गों की स्थिति पर सामाजिक-आर्थिक डेटा होना और उनके लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। कांग्रेस अध्यक्ष ने यह भी कहा कि अगर पार्टी 2024 के लोकसभा चुनाव में सत्ता में आई तो, महिला आरक्षण लागू करेगी।

'भाजपा के झूठे प्रचार को रोकना होगा': पार्टी नेताओं से सरकार की विफलताओं को उजागर करने के प्रयासों में तेजी लाने के लिए कहते हुए, उन्होंने कहा कि उन्हें सत्तारूढ़ भाजपा के झूठे प्रचार का तुरंत मुकाबला करना चाहिए, क्योंकि चुनाव नजदीक आने पर ऐसे झूठ बढ़ जाएंगे।

हाईकोर्ट से चंद्रबाबू को झटका, याचिकाएं खारिज

विजयवाड़ा

आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट से एक बार फिर पूर्व सीएम चंद्रबाबू नायडू को झटका लगा है। नायडू द्वारा विभिन्न मामलों में दायर तीन जमानत याचिकाएं खारिज कर दी हैं। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और तेलुगुदेशम पार्टी (तेदेपा) के प्रमुख चंद्रबाबू नायडू को 371 करोड़ रुपये के कौशल विकास घोटाले में गिरफ्तार किया गया है। राज्य के अपराध जांच विभाग (सीआईडी) ने उन्हें नौ सितंबर को सुबह करीब छह बजे ज्ञानपुरम में बस में सोते वक्त गिरफ्तार किया था। सीआईडी का दावा है कि नायडू के ही नेतृत्व में मुखौटा कंपनियों के जरिये सरकारी धन को निजी संस्थाओं में हस्तांतरित करने की साजिश रची गई।

नायडू ने शुक्रवार को नंदयाल जिले के बनगनपल्ली में जनसभा की थी। इसके बाद बस में आराम कर रहे थे। शनिवार तड़के करीब 3:30 बजे सीआईडी उन्हें गिरफ्तार करने पहुंची। लेकिन पार्टी कार्यकताओं और नेताओं ने वाहन को घेर लिया। इससे सीआईडी को गिरफ्तार करने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। हाल ही में अनंतपुर जिले के रायदुर्गम में एक सभा में नायडू ने कहा था ।

हमास के आतंक पर बोली बीजेपी मणिपुर पर मौन क्यों?

मुंबई

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) विपक्षी दल की भूमिका में अक्सर भाजपा को कठघरे में खड़ा करने के प्रयास करती है। इस्त्राइल में हमास के आतंकी हमले के मामले में शरद पवार की अगुवाई वाली-एनसीपी ने भाजपा की भूमिका पर सवाल खड़े किए। पार्टी ने कहा कि भाजपा नेता इस्त्राइल में हो रहे युद्ध पर तेजी से सवाल खड़े करते दिखे लेकिन पूर्वोत्तर भारतीय राज्य मणिपुर में हुई हिंसक झड़प के मामले में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के नेताओं ने मौन साध लिया। एनसीपी के प्रवक्ता क्लाइड क्रैस्टो ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म-

एक्स पर एक पोस्ट में कहा, इस्त्राइल और फलस्तीन में हो रही लड़ाई में कई मासूम लोगों की जान गई है। इस्त्राइल में हो रही हत्याओं के बाद बीजेपी नेताओं ने काफी तेजी से बयान जारी किए और आतंकी वारदात की निंदा की। ऐसा होना भी चाहिए। इसलिए हम एक विपक्षी दल के रूप में भाजपा को याद दिलाना चाहते हैं कि मणिपुर भारत का हिस्सा है।

भाजपा नेताओं का शर्मनाक रूख-

मणिपुर पर मौनः

उन्होंने कहा कि इस्त्राइल के मुद्दे पर भाजपा नेताओं ने तत्काल प्रतिक्रियाएं दीं। हत्याओं की कड़ी निंदा भी की गई। हालांकि, मणिपुर में हुई हिंसा पर शर्मनाक रूख अपनाते हुए भाजपा नेताओं ने मौन साध लिया। इस्त्राइल में आतंकी वारदात की कड़ी निंदा करने वाले बीजेपी नेता मणिपुर की जनता के दर्द और उनकी पीड़ा को समझने में नाकाम रहे।

कूटनीतिक रिश्ते जरूरी, लेकिन नागरिकों की जान...

एनसीपी प्रवक्ता क्रैस्ट्रो ने कहा कि मणिपुर मुद्दे पर भाजपा नेताओं का मौन काफी कुछ कहता है।

बिलकिस बानो केसः 11 अक्टूबर को अगली सुनवाई

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (9 अक्टूबर) को बिलकिस बानो सामूहिक दुष्कर्म और 2002 के गुजरात दंगों के दौरान उसके परिवार के सात सदस्यों की हत्या के मामले में 11 दोषियों की समयपूर्व रिहाई को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर अंतिम सुनवाई 11 अक्टूबर को करेगा।

जस्टिस बी वी नागरत्ना और उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि हम बुधवार (11 अक्टूबर) को सुनवाई करेंगे और कोशिश करेंगे कि उसी दिन मामले की सुनवाई समाप्त हो जाए। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि हमारे पास याचिकाकताओं की लिखित दलीलें मिली हैं जिन्हें रिकॉर्ड पर ले लिया गया है।

दोषियों के पास माफी मांगने का मौलिक अधिकार है?: पीठ ने कहा, "केस को 11 अक्टूबर 2023 को दोपहर 2 बजे सूचीबद्ध करें।" पीठ को दोषियों की समयपूर्व रिहाई का विरोध करने वालों की प्रत्युत्तर प्रस्तुतियां सुनने के लिए निर्धारित किया गया था। पीठ ने 6 अक्टूबर को बिलकिस बानो सहित याचिकाकताओं के वकीलों से अपनी संक्षिप्त।

संस्कृति विभाग और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के बीच हुआ एमओयू का हस्तांतरण

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास संभालेगा अयोध्या के राम कथा संग्रहालय की जिम्मेदारी

श्रीराम से जुड़े 1000 से ज्यादा प्राचीन और दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह भी ट्रस्ट को हैंडओवर

लखनऊ

अयोध्या में सरयू तट पर बना अंतरराष्ट्रीय राम कथा संग्रहालय और आर्ट गैलरी के संचालन, प्रबंधन और रख-रखाव की जिम्मेदारी अब श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास संभालेगा। सोमवार को संस्कृति विभाग और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के बीच एमओयू

हस्तांतरण हुआ। गोमतीनगर स्थित संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस करार के बाद भगवान श्रीराम से जुड़े 1000 से ज्यादा प्राचीन और दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह की जिम्मेदारी भी अब न्यास के हाथों आ गई है।

रंगारंग कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

कार्यक्रम में पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के मंत्री जयवीर सिंह और श्रीराम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र विशेष रूप से मौजूद रहे। इसके अलावा श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के महासचिव चंपत राय, मंदिर निर्माण समिति के सदस्य अनूप कुमार मित्तल, मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा, संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव मुकेश कुमार मेश्राम, संस्कृति विभाग के निदेशक शिशिर और विशेष सचिव राकेश चंद्र शर्मा की मौजूदगी में अंतरराष्ट्रीय राम कथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी के संबंध ।

जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में नाकाम विकसित देश

नई दिल्ली

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) ने हाल ही में एक रिपोर्ट जारी की है। जिसमें देशों और गैर पार्टी हितधारकों द्वारा की गई प्रस्तुतियों का सार दिया गया है। यूएनएफसीसीसी रिपोर्ट के मुताबिक, भले ही विकसित देशों के कारण कार्बन बजट में कमी आई, लेकिन 2020 से पहले की अवधि की अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में विकसित राष्ट्र विफल रहे हैं। वहीं रिपोर्ट में कहा गया है कि कई देशों ने

माना कि वैश्विक स्टॉकटेक परिणाम से यह भी सुनिश्चित होना चाहिए कि विकसित देशों को उत्सर्जन में कमी, परिचालन इक्विटी, सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

कृषि के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव उन्नति तकनीकी को अपनाने से ही संभव : चौधरी शीशपाल सिंह

कारडेट के 46वें स्थापना दिवस पर आयोजित हुई रबी फसल विचार गोष्ठी

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों को मिला निशुल्क जैव उर्वरक व सरसों का बीज

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। आज भारत विश्व में कृषि के क्षेत्र में जो सफलता प्राप्त किया है। उसके पीछे हमारे देश के कृषि वैज्ञानिकों की अच्छी सोच व दृढ़ इच्छाशक्ति रही है। जो बिना शिक्षा के संभव ही नहीं हो सकती। उन्नति तकनीक से ही कृषि में भी बदलाव हुआ है। यह बातें इफको कारडेट के 46 वें स्थापना दिवस के अवसर पर कोरडेट प्रबंध समिति के अध्यक्ष चौधरी शीशपाल सिंह ने उपस्थित कृषकों के बीच सोमवार को कहीं। उन्होंने कहा कि देश की उन्नति के लिए सहकारिता ही सफल माध्यम है। आज देश आजादी के बाद अन्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो चुका है। जिसकी श्रेय इफको कारडेट को जाता है। इफको के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक संजय कुदेशिया ने कहा कि सहकारिता देश के विकास में सहायक है। हम सभी सहकारिता के लिए समर्पित हैं। उन्होंने नैनो यूरिया व डीएपी का प्रयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम की शुरूआत प्रधानाचार्य कोरडेट डॉ हरिश्चंद्र शर्मा द्वारा अतिथियों को अंगवस्त्रम व माला पहना कर की गई। मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन के बाद कारडेट की गतिविधियां स्थापना से अब तक पर प्रकाश डालते हुए प्रधानाचार्य डा हरिश्चंद्र शर्मा ने विस्तार से सभी कृषकों को बताते हुए समय-समय पर मिट्टी की जांच कराने की सलाह दी। प्रधानाचार्य डॉक्टर हरिश्चंद्र ने रबी फसलों की टिकाऊ एवं वैज्ञानिक खेती के नए तकनीकी सलाह देते हुए समय-समय पर कारडेट में संपर्क कर उच्च गुणवत्ता की खेती के लिए प्रोत्साहित किया। राजेश कुमार सिंह विशेषज्ञ उर्वरक फूलपुर ने रबी फसलों में जैव उर्वरक के प्रयोग से उत्तम उत्पादन प्राप्त करने की व्यवहारिक तकनीकी जानकारी पर प्रकाश डाला। इस दौरान कारडेट प्रबंध समिति के सदस्य आर पी सिंह बघेल व पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बीडी सिंह ने भी कृषकों को संबोधित किया। गोष्ठी का संचालन मुकेश तिवारी ने किया। किसानों को उन्नतशील सरसों का बीज उपलब्ध कराया गया। इस मौके पर इफको फूलपुर इकाई के संयुक्त महाप्रबंधक वित्त एवं लेखा संतोष कुमार सिंह, इफको कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पांडेय, महामंत्री विनय यादव, अधिकारी एसोसिएशन के महामंत्री स्वयं प्रकाश, अंजली चौधरी,किसान राजकुमार यादव, संतोष कुमार, धर्मराज सहित सैकड़ों की संख्या में किसान व इफको कोरडेट के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

शंकरगढ़ पुलिस ने रेलवे का विद्युत पोल काटकर चुराने वाले गिरोह के सदस्य को दबोचा

पोल का टुकड़ा और मोटरसाइकिल बरामद

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से रेलवे विद्युत पोल का टुकड़ा और एक बाइक बरामद हुई है। एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि यह गिरफ्तारी शंकरगढ़ कस्बे के लखनपुर की तरफ सड़क किनारे से की गई है। पूछताछ के बाद आरोपी का चालान भेज दिया गया है।एसओ ने बताया कि दो अगस्त, 2023 की रात थाने की पुलिस टीम ने बदामा रेलवे लाइन के किनारे से गैस कटर से रेलवे का विद्युत पोल काटकर चोरी करते समय मोहित निषाद पुत्र अवधेष निषाद (अरैल, नैनी) और विकास केसरवानी पुत्र महेंद्र केसरवानी (गऊघाट, मुट्ठीगंज) को गिरफ्तार किया था। इनके कब्जे से आक्सीजन गैस कटर, सिलेंडर, काटे गए पोलके 30 टुकड़े, आक्सीजन पाइप आदि बरामद हुई थी। इस गिरफ्तारी के दौरान अभियुक्त मोहित निषाद ने पुलिस पार्टी पर बमबाजी भी की थी। इस दौरान अभियुक्त बबलू धरिकार और मोहित धरिकार मौके से भाग निकले थे। एसओ ने बताया कि सात सितंबर को बबलू धरिकार को लोहे के एक टुकड़े के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। इसी क्रम में बीती रात दूसरे आरोपी मोहित धरिकार पुत्र बाबूलाल निषाद (गऊघाट, मुट्ठीगंज) को गिरफ्तार किया गया। उसके कब्जे से काले रंग की अपाचे बाइक व रेलवे के विद्युत पोल का टुकड़ा बरामद हुआ है। सुसंगत धाराओं में आरोपी का चालान भेज दिया गया है। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई अमरेंद्र सिंह, एएसआई रामदुलार यादव आदि पुलिस कर्मी शामिल थे।

प्रत्येक विभाग के समन्वय से होगी सभी की तरक्की : राजमणि कोल

ब्लॉक मुख्यालय पर आयोजित हुआ संकल्प सप्ताह समावेश समारोह

सबकी आकांक्षाएं सबका विकास के तर्ज पर होगा काम - धीरेंद्र यादव

कोरांव। अति पिछड़े ब्लॉक कोरांव का संपूर्ण तरक्की तभी होगी जब सभी का समन्वय स्थापित होगा और प्रत्येक विभाग शहभागीदार होंगे। उक्त बातें विधायक राजमणि कोल ने समारोह में कही। विधायक ने पिछड़े ब्लॉकों को अग्रणी ब्लॉकों में शामिल कराने के लिए बोले कि मेरे ब्लॉक को नीति आयोग के द्वारा भी चयनित कर लिया गया है। सभी बुनियादी सुविधाओं पर विकास कार्य कराए जाएंगे। कोरांव विधायक राजमणि कोल ने ब्लॉक मुख्यालय पर नीति आयोग द्वारा आयोजित संकल्प सप्ताह समावेश समारोह सबकी आकांक्षाएं सबका विकास कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कहीं। विधायक राजमणि कोल ने अपने संबोधन में कहा कि चिंतन शिविर के जरिए जो भी निष्कर्ष निकले हैं, किस आधार पर हम पिछड़े ब्लॉक का संपूर्ण विकास कर सकते हैं, उन सारे बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित कर विकास कार्य कराए जाएं जिससे सरकार के लक्ष्य सबकी आकांक्षाएं सबका विकास धरातल पर सरकार हो सके। उन्होंने उपस्थित रहे सभी विभागों के अधिकारियों को नीति आयोग की नीतियों के आधार पर ब्लॉक के पिछड़ेपन को दूर करने की बात कही है। समारोह में विधायक राजमणि कोल के द्वारा संकल्प सप्ताह के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र कुमार यादव ने कहा कि हम सभी विभागों के सहयोग से ब्लॉक में बुनियादी सुविधाओं पर काम करेंगे। नीति आयोग के जो लक्ष्य दिए गए हैं उन लक्ष्य को पूरा करते हुए ब्लॉक को अग्रणी ब्लॉकों में शुमार करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहूंगा। उन्होंने विधायक राजमणि कोल से सहयोग की अपेक्षा जताई। जिन कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया उनमें शिक्षा विभाग से अजीत कुमार यादव प्रधान अध्यापक, अवधेश कुमार शारीरिक शिक्षा अनुदेशक, प्रतिमा श्रीवास्तव शिक्षामित्र, स्वास्थ्य विभाग से अतुल वर्मा सीएचओ, पूजा शुक्ला एएनएम, रन्नो देवी आशा, बाल विकास विभाग से एकता कुमारी कार्यकत्री, निर्मला देवी सहायिका, कृषि विभाग से प्रमोद कुमार, पंचायती राज विभाग से अशोक कुमार सहायक विकास अधिकारी, उदित नारायण सिंह सफाई कर्मचारी, सर्वेश कुमार विश्वकर्मा पंचायत सहायक, मनरेगा से सुरेंद्र लाल केसरवानी टीए, एनआरएलएम स्वयं सहायता समूह से उर्मिला देवी, सरिता देवी, रेखा देवी, पुष्पा देवी, रनिया बेगम को सम्मानित किया गया। समावेश समारोह में शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, बाल विकास समेत सभी विभागों के अधिकारी कर्मचारी अर्ध संगठन के लोग भी मौजूद रहे।

लायंस क्लब प्रयागराज रॉयल का अधिष्ठापन समारोह संपन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। लायंस क्लब प्रयागराज रॉयल के अधिष्ठापन समारोह का कार्यक्रम का कॉस्मो पॉलिटन होटल सिविल लाइन में किया गया जिसका उद्घाटन पास्ट इंटरनेशनल डायरेक्टर पी एम जे एफ लायन डॉक्टर जगदीश गुलाटी के कर कमलों द्वारा किया गया, तत्पश्चात पूर्व मंडल अध्यक्ष लायन नितिन यशार्थ के द्वारा नए सदस्यों को दीक्षा दिलाने का कार्य किया गया उसके पश्चात उप मंडलाध्यक्ष द्वितीय लायन डॉक्टर अर्पण धर दुबे द्वारा क्लब के सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी का अधिष्ठापन किया गया। इसके पश्चात की नोट स्पीकर के रूप में लायन अनिल जायसवाल (लाला भैया) के द्वारा आशीर्वचन दिया गया साथ ही डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन सतीश टंडन, रीजन चेयरपर्सन लायन यू सी कक्कड़ व जोन चेयरपर्सन नीरज अग्रवाल ने अपने आशीर्वचन से हमें अभिसिंचित किया। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान जोन चेयरपर्सन लायन नीरज अग्रवाल का मार्गदर्शन एवं सहयोग अतुलनीय रहा। अधिष्ठापन के दौरान ही क्लब के डायरेक्टर लायन डॉक्टर संतोष यादव ने एम जे एफ की सदस्यता स्वीकार की। क्लब के अध्यक्ष डॉ रमेश चंदा ने क्लब द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों का व्याख्यान दिया

एवं महासचिव के रूप में इंजीनियर संत कुमार वर्मा और कोषाध्यक्ष के रूप में डॉ सूर्यनाथ प्रजापति ने अपना अपना विचार प्रस्तुत किया। इंजीनियर रवि भूषण गुप्ता क्लब के एडमिन ने भी अपने विचारों को व्यक्त किया ।क्लब का अधिष्ठापन समारोह बहुत ही सुंदर तरीके से संपन्न हुआ और सभी लोगों के अंदर एक उत्साह दिखा। इसके अलावा क्लब में डॉ सुमित पटेल, रवि मिश्रा, सुनील, राजेश सुमन, सरिता राज, डेंटिस्ट अवधेश कुमार सिंह, आरती पटेल, सरिता पटेल, सुधा गुप्ता, अल्पना वर्मा, सुचित्रा मिश्रा ,अंजली यादव, रामभवती, सोनी यादव, माया के अलावा कई सदस्य गण उपस्थित थे।

गांवो मेरी माटी मेरा देश कलश में भरी गई मिट्टी को ब्लॉक में कराया गया संकलित

अखंड भारत संदेश

कोरांव। कोरांव मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम को लेकर गांवो में घर-घर से कलश में एकत्रित की गई मिट्टी के कलशों को सोमवार को ब्लॉक मुख्यालय पर संकलित कर दिया गया है। खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत गांवो में जिन कलशों में मिट्टी एकत्रित की गई थी उनको ब्लॉक मुख्यालय पर सोमवार को जमा कराया गया। अभी तक जिन ग्राम पंचायत के कलश ब्लॉक पर नहीं पहुंचे हैं। उनको मंगलवार को जमा कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि शासन की ओर से जब निर्देश आएगा तो ब्लॉक मुख्यालय से सभी गांवो के कलश जिला मुख्यालय के लिए भेज दिए जाएंगे। मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत अब भी गांव में लोग मिट्टी एकत्रित करने का काम कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं तथा पदाधिकारियों एवं ग्राम प्रधानों के द्वारा संग्रहित की गई मिट्टी के कलश ब्लॉक मुख्यालय पर जमा कराए जा रहे हैं। सभी ग्राम पंचायत के कलश ब्लॉक मुख्यालय पर ही रखे जाएंगे। निदेर्शानुसार जिला मुख्यालय पर भेजने का

काम किया जाएगा। सोमवार को समारोह के जरिए ग्राम प्रधानों एवं भाजपा के कार्यकताओं ने मिट्टी के कलश को उत्साहपूर्वक जमा किया ।गांवो में घर-घर से कलश में एकत्रित की गई मिट्टी के कलशों को सोमवार को ब्लॉक मुख्यालय पर संकलित कर दिया गया है। खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत गांवो में जिन कलशों में मिट्टी एकत्रित की गई थी उनको ब्लॉक मुख्यालय पर सोमवार को जमा कराया गया। अभी तक जिन ग्राम पंचायत के कलश ब्लॉक पर नहीं पहुंचे हैं। उनको मंगलवार को जमा कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि शासन की ओर से जब निर्देश आएगा तो ब्लॉक मुख्यालय से सभी गांवो के कलश जिला मुख्यालय के लिए भेज दिए जाएंगे। मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत अब भी गांव में लोग मिट्टी एकत्रित करने का काम कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं तथा पदाधिकारियों एवं ग्राम प्रधानों के द्वारा संग्रहित की गई मिट्टी के कलश ब्लॉक मुख्यालय पर जमा कराए जा रहे हैं। सभी ग्राम पंचायत के कलश ब्लॉक मुख्यालय पर ही रखे जाएंगे। निदेर्शानुसार जिला मुख्यालय पर भेजने का काम किया जाएगा। सोमवार को समारोह के जरिए ग्राम प्रधानों एवं भाजपा के कार्यकताओं ने मिट्टी के कलश को उत्साहपूर्वक जमा किया।

सहसों-हनुमानगंज पुरानी जीटी रोड खस्ताहाल राहगीर परेशान

अखंड भारत संदेश

सहसों। आजादी से पूर्व बनी सीमेंटेड सहसों चौराहा से हनुमानगंज पुरानी जीटी रोड आज गढढों में तब्दील होकर मरम्मत की बाट जोह रही है। इस मार्ग पर भारी वाहन, चार पहिया, दो पहिया से चलना तो दूर पैदल चलना भी राहगीरों को दुश्वार हो रहा है। लगभग तीन दशक पूर्व सीमेंटेड जीटी रोड को लोक निर्माण विभाग द्वारा तोड़कर चौड़ीकरण करते हुए गिट्टी एवं तारकोल से फिर से बनाई गई। कुछ दिन चलने के बाद टूटती रही तथा मरमत होती रही परंतु तकरीबन दो वर्ष से बिना मरम्मत के छोटे बड़े गड्ढों में तब्दील हो गई है। जिससे राहगीर हलकान हो रहे हैं। सहसों चौराहा से लेकर लगभग एक किलोमीटर दूर तक मार्ग पर छोटे बड़े मिलकर हजारों गड्ढे

हो चुके हैं। जिससे लोगों को आवागमन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में कई बार स्थानीय लोगों ने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारी को अवगत कराया परंतु आज तक मरम्मत नहीं हो सकी। जिसके चलते आए दिन लोग दुर्घटना का शिकार होते हुए चोटिल हो रहे हैं। जबकि सहसों चौराहा से हनुमानगंज की तरफ प्रारंभ में ही बहुत बड़ा गड्ढा होकर वर्षा हो जाने के कारण सड़क तालाब का शक्ल ले लिया है। उसके आगे लगभग 500 मीटर तक सैकड़ों की संख्या में गड्ढे होकर हर समय आवागमन होने के कारण दुर्घटना का दावत दे रहा है। जबकि इसी मार्ग पर चौराहे से लेकर नहर की पुलिया के बीच तक भक्त जनों के लिए दर्शनार्थ पूजा पाठ के लिए तीन मंदिर स्थापित हैं और जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस चौकी है तथा एक महाविद्यालय, एक इंटर कॉलेज, एक प्राथमिक विद्यालय एवं 2 निजी चिकित्सालय भी संचालित हैं। जिससे आम जनता के साथ-साथ छोटे-बड़े विद्यार्थियों एवं व्यापारियों, किसनो, महिलाओं, मरीजों एवं बच्चों का दिन-रात आवागमन लगा रहता है। परंतु लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों की नजर इस खस्ताहाल सड़क पर नहीं पड़ रही है। जिससे मार्ग की मरम्मत हो सके एवं राहगीर बिना चोटिल होते हुए उनका राह आसान हो सके। इस खस्ताहाल मार्ग को लेकर स्थानीय लोगों सहित क्षेत्र के काफी लोगों में आक्रोश व्याप्त है।

सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान चयन में ब्लाक कर्मचारियों की हीलाहवाली, ग्रामीणों में आक्रोश

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। विगत एक वर्ष से पतवां, मुतफर्का गांव की सरकारी गल्ले की दुकान निलंबित चल रही है और पड़ोसी गांव चौका से सम्बद्ध है। ग्रामीणों को राशन लेने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा दूसरे गांव से राशन लाने में, इसलिए ग्रामीणों की मंशा है कि पुनः गांव का कोटा गांव में खुल जाए।प्रधान एवं गांव के विभिन्न लोगों ने प्रयास किया ब्लाक एवं तहसील स्तर तक परंतु कोटे का चयन अभी तक नहीं हो सका है। निलंबित कोटेदार ने याचिका हाईकोर्ट में दाखिल किया था कि मेरी सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान बहाल किया जाए जिस पर हाईकोर्ट ने 17 अगस्त को आदेश दिया था कि पतवां मुतफर्का गांव में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान का चयन खुली बैठक में किया जाए। जिसके अनुपालन में प्रतापपुर ब्लाक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा 23 सितंबर को गांव की खुली बैठक में कोटेदार का चयन किया जाना था लेकिन ब्लाक कर्मचारी नहीं आए। दूसरी खुली बैठक 29 सितंबर को होनी थी फिर भी नहीं आए। तीसरी खुली बैठक 6 अक्टूबर को तय थी सुबह से ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय नेवादा पर जुटे थे लेकिन चुनाव अधिकारी गिरीश पांडेय तीन बजे आए और कहा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है और बमुश्किल से पांच मिनट रुके और चले गए।बार बार कोटा चयन में हो रही हीलाहवाली से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है।10 अक्टूबर को पुनः सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान को खुली बैठक में चयन किए जाने तिथि तय हुई है यदि ब्लाक कर्मचारी इस बार भी हीलाहवाली करेंगे तो ग्रामीण धरना प्रदर्शन करने के साथ-साथ न्यायालय की शरण लेंगे।

न्यूज झरोखा

बीआरसी प्रतापपुर में विज्ञान एवं गणित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतापपुर। बीआरसी प्रतापपुर में राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के अंतर्गत सोमवार को विज्ञान एवं गणित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन खंड शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार यादव के निर्देशन में सम्पन्न हुआ ।विकास खंड प्रतापपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों की गणित, विज्ञान की क्विज प्रतियोगिता में 204 छात्रों ने प्रतिभाग किया ।जिसमे प्रारंभिक परीक्षा में 204 छात्रों के सापेक्ष 75 सफल हुए छात्रों की मुख्य परीक्षा के उपरांत 20 सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का साक्षात्कार किया गया ।जिसमे पाँच सर्वाधिक अंक पाने वाले प्रतिभागियों में कक्षा आठ के छात्र छात्राओं में श्रेयांश तिवारी खानपुर डांडी, अनिल मौर्या सोरों, रिया यादव एवं स्वाती गुप्ता सिरसा, आंशिक यादव खानपुर डांडी रहे ।परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने हेतु सतेंद्र द्विवेदी, पंकज श्रीवास्तव, रविराज तिवारी को नोडल अधिकारी नामित किया गया था ।उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए ललित कुमार यादव, अशोक कुमार, सुरेंद्र कुमार यादव, चंद्रकांत पटेल, अनुराधा, साधना सिंह, कविता त्रिपाठी, प्रमोद कुमार गिरी, नेहा गौड़ को नियुक्त किया गया था।

अरैल में पितृ पक्ष में सरस्वती सामाजिक सेवा संस्थान स्वच्छता अभियान चलाया

नैनी। नैनी अरैल में पितृ पक्ष माह में सरस्वती सामाजिक सेवा संस्थान अरैल नैनी द्वारा कार्यक्रम अधिकारी महेश प्रसाद केसरवानी के नेतृत्व में अरैल स्थित स्कन्द पुराण वर्णित श्री शूलटंकेश्वर मंदिर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। कनिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील कुशवाहा ने कहा कि विगत पांच वर्षों से सरस्वती परिवार गंगा तटों पर एवं प्राचीन मंदिरों पर स्वच्छता अभियान चलाता चला आ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्था का उद्देश्य है, कि आम जनमानस सार्वजनिक स्थानों एवं धार्मिक स्थलों पर गंदगी न फैलाएं, स्वच्छता के प्रति सभी सचेत होवे। कार्यक्रम में संतोष तिवारी अध्यक्ष, कुंवर जी तिवारी, धीरज यादव,सुनील कुशवाहा,सुबेंदु घोष,संदीप सिंह,डां प्रमोद मिश्रा,ओम प्रकाश श्रीवास्तव, बबुवाहन सिंह, ज्ञान प्रकाश मिश्रा,आत्म प्रकाश यादव, राजेश सिंह राठौर,विनोद गुरानी, गोविंद सिंह,प्रवीण तिवारी, संदीप केसरवानी,कार्तिकेय तिवारी, समरेंद्र मिश्रा,आर्यन यादव, सौरभ यादव, उज्जवल यादव,सनी यादव,गौरव यादव, तुलसी तिवारी,रिद्धि मिश्रा,शामवी मिश्रा,निर्मल कुशवाहा आदि उपस्थित रहे

डीसीपी मुख्यालय ने किया फ्लैगमार्च

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र में सोमवार को डीसीपी मुख्यालय श्रद्धा एन पांडेय ने एसीपी करछना अजीत सिंह चौहान के साथ पैदल गस्त किया। नैनी के शंकरढाल होते हुए नैनी बाजार, स्टेशन रोड, हनुमान नगर, मेवालाल की बगिया, सब्जीमंडी होते हुए पुनः शंकरढाल पहुंची। इस दौरान डीसीपी ने आभूषणों की दुकान पर लगे कैमरे चेक किये साथ ही व्यापारियों से बात कर उनकी समस्याएं जानी। इस मौके पर इंस्पेक्टर नैनी यशपाल सिंह समेत कोतवाली की महिला दारोगा व सिपाही मौजूद थे।

सभी जाति धर्म का सम्मान सिर्फ भाजपा में : जय सिंह पटेल

जसरा। काशी क्षेत्र के सभी जिलों की मेजबानी करेगा प्रयागराज जनसभा को सफल बनाने के लिए सभी कार्यकर्ता अभी से कर लें चिंतन उक्त बातें जसरा में आयोजित भाजपा कार्यकताओं को संबोधित करते हुए जिला उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल ने कही ।कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला ने पार्टी के सभी कार्यकताओं को अभी से तैयारी करने के लिए कहा। संचालन मंडल महामंत्री भूपेंद्र पाठक ने किया व कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों एवं कार्यकताओं का मंडल महामंत्री नीरज केसरवानी ने अभिनन्दन किया। अनुसुचित मोर्चा के जिलाध्यक्ष राजमणि पासवान ने होने वाली जनसभा की रूपरेखा तैयार करने के लिए सभी कार्यकताओं का सहयोग मांगा। प्रमुख रूप से जिला पंचायत सदस्य सुरेंद्र सिंह पटेल, योगेंद्र पासी, अभिषेक शुक्ला, शंकर लाल गुप्ता, आदित्य पासवान, बच्चा मालवीय, वीरेन्द्र पाठक, अवध बिहारी मिश्रा, प्रीतम केसरवानी, आशीष सोनकर, दीप चंद गुप्ता, गोपाल केसरवानी, अर्जुन विश्वकर्मा, पंकज सिंह, सुबोध जायसवाल, कमला द्वेदी, अशोक तिवारी, संदीप दुबे, सरिता देवी, रीना देवी, देवराज सिंह, शशिकांत पांडे, रामसागर दुबे सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

सीरत उन नबी (स०) क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

नगर पंचायत मऊआइमा के दर्सगाह इस्लामिया में सम्पन्न हुआ

मऊआइमा। मऊआइमा नगर पंचायत के हाजियाना में दर्सगाह इस्लामिया जमाअत इस्लामी हिन्द की ओर से सीरत मुहिम रहबरे इंसानियत (मोहम्मद सल्लल्लाह अलैहवासलम) 17 सितम्बर से 16 अक्टूबर के अन्तर्गत शीर्षक सीरत उल नबी(स०) क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जूनियर स्तर के कक्षा पांच से आठ तक ,सीनियर स्तर के कक्षा नौ से इंटरमीडिएट के आस पास क्षेत्रों के छात्र छात्राओं ने बडी संख्या में भाग लिए। इस मौके पर संस्थान के प्रबंधक सालिम अंसारी, प्रधानाध्यापक अब्दुल अहद, परीक्षा व्यवस्थापक मास्टर सलीम, मकबूल अहमद, जावेद आलम, महताब, अकील आसिम, आदि ने सुचारू रूप से सम्पन्न कराया। जिसमें मोहम्मद अदीब, मोहम्मद इब्राहिम, मोहम्मद कामिल, अल्ताफ हुसैन, मोहम्मद जहीब, मोहम्मद कैश, अजहान, शाइस्ता बानों, प्रिया गौतम, मिस्बाह हारुन आदि छात्र, छात्रों ने भाग लिए।

माफिया अतीक अहमद के बेटे बाल गृह से रिहा

सीडब्ल्यूसी ने बुआ को सुपुर्द करने का दिया आदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के चौथे बेटों को सोमवार को बाल संप्रेषण गृह से रिहा कर दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर बाल कल्याण समिति ने एहजम को रिहा करने का आदेश जारी किया। देर शाम एहजम और उसके छोटे भाई को उनकी बुआ शाहीन परवीन को सुपुर्द कर दिया गया। रिहाई की प्रक्रिया सुबह से ही चल रही थी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर बाल कल्याण समिति ने यह निर्णय लिया है। इसी साल एहजम चार अक्तूबर को 18 साल का हो चुका है और ऐसे में नियमानुसार उसे बाल संप्रेषण गृह में नहीं रखा जा सकता।बता दें कि उसकी बुआ शाहीन की ओर से सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर दोनों बच्चों को उन्हें सौंपने की मांग की गई थी। मामले में सुप्रीम कोर्ट की ओर से बाल कल्याण समिति को विचार कर रिपोर्ट देने के लिए कहा गया है। मामले की अगली सुनवाई 10 अक्तूबर को होनी है। सोमवार को देर शाम उनको बाल संरक्षण गृह से रिहा करते हुए उसे उसकी बुआ को सुपुर्द कर दिया गया।

उमेश पाल की हत्या के बाद पुलिस ने किया था बरामद

उमेश पाल की हत्या के बाद पुलिस ने अतीक अहमद के दोनों नाबालिग बेटों को चकिया इलाके से बरामद किया था। दोनों की उम्र 18 वर्ष से कम होने के कारण उन्हें कोर्ट के आदेश पर बाल संरक्षण गृह में रखा गया था। यह दोनों बच्चे चौथे और पांचवें नंबर के हैं। एहजम इसी महीने 18 साल का हो गया है। नियमानुसार उसे अब बाल संरक्षण गृह में नहीं रखा जा सकता।

प्रधान के दरवाजे से मोटर साइकिल चोरी, रिपोर्ट दर्ज

मेजा। क्षेत्र के ग्राम पंचायत गुनई के प्रधान के दरवाजे के बाहर खड़ी बाइक चोरी हो गई।मामले की मेजा कोतवाली रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है।मिली जानकारी के अनुसार मेजा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम पंचायत गुनई के प्रधान पंकज राव के भाई सूरज कुमार राव पुत्र कमलेश कुमार ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि रोज की भांति वह घर के सामने अपनी टीवीएस कंपनी के सफेद रंग की अपाची बाइक खड़ी कर-के सोने के लिए घर के अंदर चला गया। रात में करीब साढ़े बारह बजे घर के मुख्य दरवाजे से खटखटाने की आवाज आई जिसको सुनकर वह घर के बाहर निकलने के लिए आ ही रहा था कि तब तक उसको अपनी बाइक स्टार्ट होने की आवाज सुनाई दी ।जब पीड़ित ने मुख्य दरवाजा खोलने का प्रयास किया तो बाहर से दरवाजा बंद होने के कारण नहीं खुल पाया।पीड़ित सूरज ने मोबाइल के माध्यम से अपने पड़ोसी से बात करके बाहर से दरवाजा खुलवाया। बाहर आकर देखा कि उसकी बाइक चोर उठा ले गए है।मामले की सूचना मेजा कोतवाली में देकर रिपोर्ट दर्ज करा दी है।

एशियन गेम्स विजेता अजय की तीन साल बाद वापसी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। चीन में आयोजित हुए एशियन गेम्स में 1500 मीटर की दौड़ में सिल्वर मेडल जीतने वाले अजय कुमार सरोज आज सोमवार को अपने गृह जनपद प्रयागराज पहुंचे। वह 03 साल बाद अपने परिवार के बीच पहुंचे तो परिवार वालों को सीना गर्व से चौड़ा हो गया। पहले वह वंदे भारत ट्रेन से प्रयागराज जंक्शन पहुंचे तो खिलाड़ियों और चिर परिचितों ने स्टेशन पर ही उनका स्वागत किया। इसके बाद वह मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में भी पहुंचे जहां पर खिलाड़ियों की ओर से उन्हें सम्मानित किया गया।यहां उन्होंने कहा ह्लमंजिल पाने के लिए मेहनत तो जरूरी है लेकिन इसके साथ जुनून और पागलपंती भी जरूरी है। जिस मंजिल की तरफ बढ़ रहे हैं उसे लेकर हमारे अंदर जुनून होना चाहिए। कोच पर आंख बंद कर विश्वास करना होगा क्योंकि वही मार्गदर्शक है जो आपको आगे बढ़ने के लिए सही दिशा देगा। पूरी ईमानदारी से मेहनत से करने से सफलता अवश्य मिलेगी।ह्व अजय ने कहाह्व आगे ओलंपिक को लेकर तैयारी करनी है जिसमें मेडल लाना है।

अजय सरोज के घर सम्मानित करने वालों की भीड़

आज सोमवार को जब अजय सरोज सोरांव के कजियानी गांव स्थित अपने घर पहुंचे तो गांव ही नहीं आसपास के लोग भी स्वागत में पहुंचे थे। यहां अपना दल (एस.) के राष्ट्रीय महासचिव व सोरांव के पूर्व विधायक जमुना प्रसाद सरोज, क्रीड़ा अधिकारी विमला सिंह, प्रयागराज एथलेटिक्स एसोसिएशन के संयुक्त सचिव सत्येंद्र सिंह समेत अन्य लोगों ने अजय का फूल माला से स्वागत किया। अजय की मां रानी देवी व पिता धर्मपाल सरोज भी तीन साल बेटे से मिलकर भावुक हो गए।

मां बोली, बेटे की सफलता के बाद बुरे दिन भूल गई :अजय की मां रानी देवी और पिता धर्मपाल सरोज अपने बेटे की मेहनत और संघर्षों की कहानी बताते हैं। मां कहती हैं..बेटे ने आज जो कर दिखाया है वह उसने तो कभी सोचा भी नहीं थाह्व 06 बच्चे थे, जिनके खान पान तक की व्यवस्था अच्छी नहीं थी। घर में खाना तक नहीं होता था लेकिन मेरा बेटा कभी हिम्मत नहीं हारा। कई दिन भी देखे जिस दिन एक टाइम खाना नहीं बनते थे। दाना खाकर बेटा दौड़ की प्रैक्टिस करता था, लोग ताने मारते थेह्वलेकिन मेरे बेटे ने आज जो कर दिखाया है उसके आगे मैं सबकुछ भूल गई हूं.. यह कहते हुए अजय की मां की आंखे नम हो गई और वह रोने लगती हैं।

अजय को पहले मिल चुका है गोल्ड मेडल : अजय सरोज को इसके पहले भी कई अहम मेडल मिल चुके हैं। 2017 में एशियन चैंपियनशिप में 1500 मीटर की रेस में इन्हें गोल्ड मेडल मिला था। दोहा में 2019 में हुए एशियन चैंपियनशिप में 1500 मीटर की दौड़ में सिल्वर मेडल मिला था। इसके अलावा कई मेडल हासिल कर अजय ने देश का मान पूरी दुनिया में बढ़ाया है।

हंडिया में मनाया गया पूर्व मुख्यमंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी की 33वीं पुण्यतिथि

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता ओम प्रकाश तिवारी के नेतृत्व में जेएन मिश्रा की अध्यक्षता में रविवार को संविधान सभा के सदस्य रहे पंडित कमला पति त्रिपाठी की 33वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी गई ' इस दौरान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजेश मिश्रा पूर्व सांसद वाराणसी ने सर्वप्रथम पंडित कमला पति त्रिपाठी के फोटो चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित व माल्यार्पण कर नमन किया 'कार्यक्रम के दौरान पूर्व सांसद राजेश मिश्रा ने कहा कि पंडित कमला पति त्रिपाठी एक राजनीतिक लेखक और पत्रकार के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी थे ' इसके साथ ही पंडित कमला पति त्रिपाठी वरिष्ठ कांग्रेस के नेता रहते हुए संविधान सभा के सदस्य रहे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री व रेलवे केंद्रीय मंत्री रहकर देश को अपनी सेवा प्रदान की थी।कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिलाध्यक्ष गंगापार सुरेश यादव, महेंद्र सिंह ब्लॉक प्रमुख हंडिया, कुलाधिपति नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय जेएन मिश्रा, कमलभान सिंह, विपिन मिश्रा, चंद्र प्रकाश मिश्रा, महेंद्र सिंह, सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

संचारी रोगों की रोकथाम स्वच्छता ही एक मात्र विकल्प : डॉक्टर समीम

अखंड भारत संदेश

मेजा। संचारी रोगों के खिलाफ योगी सरकार की मुहिम अक्तूबर माह में भी जारी रहेगी। 3 अक्तूबर से 31 अक्तूबर तक प्रदेश भर में विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान (16 से 31 अक्तूबर) के तहत विशेष सतर्कता बरती जाएगी। खास बात ये है कि इस पूरे अभियान की प्रतिदिन निगरानी और रिपोर्टिंग होगी तथा शिथिलता या लापरवाही बरतने वाले उत्तरदायी कर्मियों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई भी की जाएगी। उक्त बातें सीएचसी मेजा के वरिष्ठ डॉक्टर समीम अख्तर ने एक वार्ता के दौरान कही।उन्होंने कहा की संचारी रोगों की रोकथाम के लिए अपने आस पास का वातावरण साफ सुथरा रखें।परिवार में किसी भी सदस्य को कोई दिक्कत हो तत्काल तरल पदार्थ का इस्तेमाल करें और शीघ्र डॉक्टर से संपर्क करें।उल्लेखनीय है कि प्रदेश में संचारी रोगों व दिमागी बुखार पर प्रभावी नियंत्रण व रोकथाम के लिए योगी सरकार ने कई विभागों के समन्वय से विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान और दस्तक अभियान संचालित कर रही है। इसमें न सिर्फ संचारी रोगों को फैलने से रोकने की कार्यवाही की जा रही है, बल्कि पीड़ित रोगियों के इलाज की भी समुचित व्यवस्था की गई है। डॉक्टर समीम ने बताया कि प्रदेश में 3 अक्टूबर से 31 अक्टूबर के मध्य विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं 16 से 31 अक्टूबर तक दस्तक अभियान का प्रभावी संचालन किया जाना है। उन्होंने बताया कि शासन की मंशा है कि निर्धारित माइक्रोप्लान के अनुसार अभियान के दौरान प्रतिदिन गतिविधियों का संचालन सुनिश्चित हो। साथ ही प्रतिदिन संपन्न गतिविधियों की सूचना निदेशालय के गूगल लिंक पर अनिवार्य रूप से प्रेषित की जाएं। विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान के प्रभावी संचालन के लिए योगी सरकार ने विशेष रणनीति बनाई है। कई विभागों के बीच समन्वय से इस अभियान को आगे बढ़ाया जा रहा है। इन विभागों में चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायती राज विभाग, शिक्षा विभाग, नगर निगम, शहरी विकास, कृषि विभाग, पशु पालन विभाग, दिव्यांग कल्याण, स्वच्छ भारत मिशन, सूचना विभाग, संस्कृति विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। वहीं, यूनिसेफ, पाथ, डब्ल्यूएचओ एनपीएसपी, टाटा ट्रस्ट, प्लान इंडिया और गोदरेज सीएसआर न सिर्फ बतौर पार्टनर इस अभियान से जुड़े हैं।

भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की मौत की सीबीआई जांच की याचिका पर पांच सप्ताह बाद होगी सुनवाई

अखंड भारत संदेश

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की संदिग्ध मौत के मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग में दाखिल याचिका पर राज्य सरकार व विपक्षियों से तीन हफ्ते में जवाब मांगा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की संदिग्ध मौत के मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग में दाखिल याचिका पर राज्य सरकार व विपक्षियों से तीन हफ्ते में जवाब मांगा है। याचिका को पांच सप्ताह बाद सुनवाई के लिए पेश करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अंजनी कुमार मिश्र तथा न्यायमूर्ति विवेक सिंह की खंडपीठ ने मृतका की मां मधु दूबे की आपराधिक याचिका पर दिया है।याचिका पर सौरभ तिवारी, आर्य सुमन पांडेय, सीबीआई की तरफ से संजय कुमार यादव व राज्य सरकार की तरफ से अपर शासकीय अधिवक्ता ने पक्ष रखा। तथ्यों के अनुसार वाराणसी के सारनाथ इलाके के एक होटल में गत 26 मार्च 2023 को संदिग्ध हालत में आकांक्षा दुबे का शव पाया गया था। आकांक्षा दुबे के परिवार वालों ने भोजपुरी गायक समर सिंह पर खुदकुशी के लिए उकसाने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने समर सिंह व एक अन्य के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। अभी विवेचना जारी है। याची की मां मधु दूबे ने याचिका दायर कर पुलिस विवेचना पर सवाल उठाए हैं और सीबीआई जांच की मांग की है।

शतक की ओर बढ़ता बैगन,टमाटर हुआ ढेर

अखंड भारत संदेश

मेजा। बारिश के कारण भले ही दूसरे कई फायदे हुए हों, लेकिन सब्जियों पर इसका प्रभाव विपरीत पड़ता है। एक माह पहले लगातार हुई तेज बारिश के कारण सब्जियों को नुकसान पहुंचा था और अब इनके भाव आसमान छूने लगे थे। बारिश से पहले की स्थिति के मुकाबले सभी सब्जियों के भाव दोगुना हो गए हैं। एक माह पूर्व जहां टमाटर लगातार दोहरे शतक तक जा रहा था वही बैगन की कीमत ट्वेंटी तक सीमित था।अब जब टमाटर का दम ट्वेंटी के करीब आ गया तो बैगन रंग बदलना शुरू कर अर्ध शतक से ऊपर पहुंच गया है।यह केवल पिछले सप्ताह में काफी बढ़ी है। तीन दिन पहले बैगन 30 से 35 रुपए प्रति किलो था। लेकिन आज बैगन हाफ सेंचुरी पार कर 80 से 85 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गया है। इसी प्रकार से करैला का भाव भी अर्ध शतक की ओर बढ़ रहा है। जबकि करैला पिछले सप्ताह महज 15 रुपए प्रति किलो ही था।बता दें कि कभी सब्जी की कीमतों में दोहरा शतक लागने वाले टमाटर का रंग इन दिनों फीका पड़ गया है। जिस टमाटर की तस्करी दूसरे देशों से हो रही थी, अब आवक के होने के चलते मंडी में औने-पौने दाम पर बिक रहा है। आवक के अनुपात में खपत कम होने के चलते टमाटर दुकानों पर सड़ने लगा है। मेजा रोड नवीन मंडी में व्यापारी उसे कचड़े में फेंक दे रहे हैं। अगस्त तक टमाटर की कीमतें आसमान छू रही थीं। लोगों की थालियों से टमाटर गायब था। सलाद में टमाटर देखने को नहीं मिल रहा था। थोक मंडी में टमाटर 170 से 180 रुपये किलो बिका। जबकि फुटकर मंडी में 200 रुपये प्रति किलो से लेकर 240 रुपए प्रति किलो तक था। दुकानदार भी किलो की जगह पाव का हिसाब बताते थे। उसी टमाटर को अब थोक मंडी में कोई पूछने वाला नहीं है। रविवार को टमाटर का भाव 12 से 15 रुपये किलो था। खरीदने के लिए ग्राहक नहीं मिल रहे थे। फुटकर बाजार में भी टमाटर 20 रुपए प्रति किलो तक बिक रहा है। मेजा रोड नवीन सब्जी मंडी में टमाटर के व्यापारी सुभाष चंद सोनकर ने बताया कि कर्नाटक और महाराष्ट्र में जुलाई व अगस्त में बारिश ज्यादा हुई, जिसके चलते उस समय मंडी में टमाटर की आवक कम थी। मांग की तुलना में आवक कम था। लेकिन अब वहां मौसम अच्छा होने के चलते टमाटर की पैदावार बढ़ गई है। लेकिन अब टमाटर की पूछ नहीं है। वहीं, थोक व्यापारी रोहित सोनकर के मुताबिक टमाटर इतना ज्यादा आ गया है कि सड़ने के चलते फेंकना पड़ रहा है।दूसरी तरफ प्याज भी रंग बदलने लगा है। पिछले दो- तीन दिनों से नासिक में भी बारिश हुई है। इससे प्याज भीग गई है और आवक कम हो गई है। जिसका असर प्याज की कीमतों पर भी पड़ा है। नासिक और मध्य प्रदेश से प्याज की आवक कम होने से मेजा रोड थोक मंडी में प्याज की कीमत शनिवार को पांच रुपये किलो बढ़ गया। प्याज मंडी में 30 से 32 रुपये किलो बिका वहीं फुटकर बाजार में प्याज 35 से 40 रुपये किलो के बीच बिक रहा है।गृहणियों के लिए कभी टमाटर,कभी बैगन तो कभी प्याज व करैला से थाली सजाने में कंजूसी करनी पड़ती है।जिससे कोई भी सब्जी मंहगी ही या सस्ती झेलना किचन की रानी को ही होता है।

शुआट्स के वानिकी महाविद्यालय में मनाया गया 69वाँ वन्य जीव सप्ताह मनाया

नैनी। पर्यावरण की रक्षा के लिए माननीय प्रधान मंत्री के दृष्टिकोण के समर्थन में सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, वानिकी महाविद्यालय 2 से 8 अक्टूबर, 2023 तक ह्यवन्यजीव संरक्षण के लिए साझेदारीह्य विषय के साथ वन्यजीव सप्ताह का 69वां संस्करण मना रहा है। वन्यजीव सप्ताह उत्सव भारत में वन्यजीव संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण अवसर है और देश की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण में सहयोगात्मक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। इस अवसर के मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ. एंटनी जोसेफ राज, प्रो-वाइस चांसलर और डीन, वानिकी महाविद्यालय ने बताया कि भारत सबसे समृद्ध जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट में से एक है, जिसमें दुनिया की सभी दर्ज प्रजातियों में से 7-8 प्रतिशत जानवरों की लगभग 91.797 प्रजातियां और पौधों की 46.340 प्रजातियां शामिल हैं। प्रो.(डॉ.) एंटनी ने गर्व से उल्लेख किया कि जैविक विविधता की प्रचुर संपदा वाला भारत, स्तनधारियों की 411 प्रजातियों, 1.232 पक्षियों, 456 सरीसृपों, 219 उभयचरों, 2.546 मछलियों, 83.436 प्रकार के अकशेरुकी और 50,000 से अधिक पौधों की प्रजातियों का घर है। उन्होंने इसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे देश में वन्यजीव संरक्षण के प्रयास, जिन्होंने 53 बाघ अभयारण्यों की मदद से बाघों की वृद्धि में एक उल्लेखनीय सफलता की कहानी लिखी है।

चौड़ीकरण वाले मार्ग पर चला पीडीए का बुल्डोजर

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी रेलवे स्टेशन रोड पर महाकुम्भ मेले के लिए नैनी क्षेत्र में लेप्रोसी से मेवालाल बगिया तक प्रस्तावित सड़क चौड़ीकरण का काम शुरू हो गया। पीडीए के जोनल अधिकारी संजीव चौबे एवं भवन निरीक्षक कुवंर आनंद की टीम ने लेप्रोसी रोड प्रयागपुरम वाली गली के बगल एवं सामने कार्रवाई करते हुए दो स्थानों पर बाउंड्रीवाल गिराई और लोगो को अल्टीमेटम दिया कि जल्द से जल्द लाल निशान तक हुए निर्माण को वह खुद अपने से तोड़ लें। बतादें कि लेप्रोसी से चिनिमिल, मलहरा फाटक, नैनी रेलवे स्टेशन रोड, हनुमान नगर चौड़ीकरण की जद में आ रहा है। लोग तरह तरह की बातें कर रहे हैं।

तहसील स्तरीय एथेलेटिक्स प्रतियोगिता 10 और 11 को

करछना। प्रयागराज 67वीं संभागीय माध्यमिक विद्यालयीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन 10 एवं 11 अक्टूबर को कौंधियारा ब्लॉक के मोतीलाल नेहरू पीजी कॉलेज के प्रांगण में संपन्न होगा, यह जानकारी श्रीमती इंदिरा गांधी इण्टर कॉलेज के संयोजक प्रधानाचार्य अमित पाण्डेय ने दी। कार्यक्रम का उद्घाटन 10 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे होगा जिसमें मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज पी०एन० सिंह जी होंगे, साथ ही समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम दिनांक 11 अक्टूबर को सम्पन्न होगा जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश अध्यक्ष उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ एवं निवर्तमान एमएलसी सुरेश कुमार त्रिपाठी होंगे

चाका में ट्यूबवेल भष्ट होने से सैकड़ो घरों में पानी के लिए त्राहि-त्राहि

नैनी। नैनी के चाका ब्लॉक स्थित जल निगम के अंर्तगत आने वाले डांडी, घनुहा, चाकाब्लॉक, दादरी समेत एक दर्जन मोहल्ले में पिछले एक सप्ताह से पानी की सप्लाई नही हो पा रही है। शिकायत करने पर पर पता चला कि ट्यूबवेल क्षेत्र में सप्लाई किये जाने वाले ट्यूबवेल नंबर दो भष्ट हो गया है। जिससे पानी की सप्लाई नही हो पा रही है। दादरी गांव में रहने वाले संदीप ने बताया कि अधिकारियो से शिकायत करने चाका ब्लाक परिसर में स्थित संबंधित विभाग के कार्यालय पर भी कई बार गए, लेकिन वहां कोई नही मिला। स्थानीय लोगों ने टैंकर से पानी की सप्लाई कराने की मांग की है।

जमीन के लिए खत्म की जा सकती है इंसानियत

ग्राम समाज की करोड़ों की भूमि से अतिचारियों व राजस्व कर्मियों का कनेक्शन

अखंड भारत संदेश

पसना/ कोरांव। पूरे प्रदेश में इन दिनों भूमि विवाद को ले कर अप्रिय घटनाओं,खूनी खेल का सिलसिला जारी है। उसकी खास वजह है कि ग्राम समाज की बंजर,नवीन परती,चकमार्ग, नाली, खलिहान, चारागाह, नदी,नाला आदि की सरकारी जमीनों पर ग्राम के ही दबंग किस्म के बड़े काश्तकार लोगों का और सरकारी जॉब में नियुक्त लोगों का अवैध कब्जा काफी समय से चला आ रहा है। उल्लेखनीय है कि कोरांव तहसील में कई ग्राम पंचायतों में उक्त ग्राम समाज की जमीनें सरहग के दबाव में दबे कुचले आरक्षित सीट के ग्राम प्रधान गरीब पात्रों भूमि हिनो को आवंटित नहीं कर सके। जिस कारण गरीब समाज की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पा रहा। जो अन्य वर्ग के ग्राम प्रधान निर्वाचित हुए तो पात्रों गरीबों के कृषि तथा आवास निर्माण हेतु प्रस्ताव किए तो भू अतिचारियों ने गांव के लेखपालों पर दबाव या प्रलोभन का प्रभाव डाल कर पांच साल कार्यकाल बीता दिए जाते हैं। और पट्टे नहीं कर पाते। या फिर स्वार्थ के लिए नहीं करते। जिससे ग्राम समाज की करोड़ों की कीमती जमीनों पर अवैध कब्जा बरकरार है,राजस्व विभाग कुछ नहीं कर पाता। क्योंकि संबंधित ग्राम सभा के राजस्व कर्मियों को पटा लिया जाता है। दर असल कोराव तहसील के ग्राम सभा मडफा कला में भी चक्मार्ग की जमीनों पर जबरन कब्जे की ग्राम प्रधान महिला पुस्पा देवी आदि कई ग्रामों के प्रधान आमजन,अधिवक्ता और ग्राम सभा अल्हवा में ज्यादातर ग्राम समाज की जमीनों पर अल्हवा प्रधान, ग्रामीणों ने अवैध कब्जे की शिकायत निरंतर राजस्व अधिकारियों तक हो रही है। किंतु कोई सही परिणाम सामने नहीं आ रहा है। ग्राम प्रधान अल्हवा अहद अहमद सिद्दीकी प्रधान संगठन लीडर ने डीएम से ले कर तमाम राजस्व अधिकारियों को ग्राम समाज की अतिक्रमित जमीनें खाली कराने का पत्राचार किया है साथ ही ग्राम समाज की जमीनों को सरकारी कार्य प्रयोग के अतिरिक्त पात्र गरीब दलितों भूमि हीनों को गुजर बसर करने हेतु आवंटन की कार्यवाही की है जिससे ग्राम के गरीब भूमिहीन सभी समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें। किंतु सरहग काश्तकार भू अतिचारी पट्टे में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। ग्राम प्रधान अल्हवा ने इस मामले की शिकायत जब तत्कालीन एसडीएम से वर्ष 2021 में की थी तो उन्होंने राजस्व टीम गठित कर भूमि संख्या 1036 ख नाला से कोटेदार अल्हवा द्वारा बीस साल से करीब कब्जा कर फसल उगा कर अवैध लाभ उठाने के आरोप में प्रधान की शिकायत पर राजस्व टीम और पुलिस बल ने भू अतिचारी कोटेदार की सरकारी जमीन से कब्जा मुक्त कराया। किंतु कोटेदार ने जबरन पुनः फसल बो लिया। और राजस्व लेखपाल और अधिकारी उसके विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे। बल्कि भू अतिचारी उल्टा प्रधान के ही पीछे चंदा एकत्रित कर सारा खेल ही समाप्त करने पर तुले बताए जाते हैं। इसी तरह अल्हवा की भूखंड संख्या 755,756,नवीन परती से तथा 757 चकमार्ग को एवम भू खंड संख्या 280, क ख नवीन परती और रास्ता राजस्व टीम ने खाली कराया सीमांकन किया,किंतु काश्तकारों ने जबरन कब्जा कर लिया साथ ही सीमांकन नष्ट कर दिए और धान की फसल बो लिए। किंतु तहसील के अधिकारी शिकायतों के बावजूद सरकारी ग्राम समाज की जमीन से कब्जा नहीं हटवा पा रहे। उक्त भू अतिचारियों ने हल्का लेखपाल पर इतना दबाव बना दिया है कि उसकी हिमाकत ही नहीं की दुबारा कार्यवाही करा सके। क्योंकि अतिचारी ग्राम प्रधान के खिलाफ फर्जी शिकायत करा कर जेल भेजवाने या जान से मरवाने की धमकी देते रहते हैं। फिलहाल भूमि के चलते कई अप्रिय घटनाएं घटित हुई और निरंतर हो रही हैं। हाईकोर्ट के स्पष्ट आदेश जारी हो चुके हैं कि ग्राम समाज की जमीनों से अवैध कब्जे मुक्त कराए जाएं,प्रदेश के उपमुख्य मंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी ग्राम समाज हितार्थ ग्राम समाज की जमीनों से अवैध कब्जे हटाने गरीबों को परेशान न करने तथा लोकल तीन साल से नियुक्त एक ही तहसील के राजस्व कर्मियों को स्थानांतरण किए जाने के भी निर्देश दिए हैं। जो सराहनीय कदम हैं। किंतु भू विवाद में अप्रिय घटनाओं या शर्मसार होने वाली वारदातों में पुलिस कर्मी ही दंडित किए जाते हैं राजस्व कर्मी क्यों बचता है। दोषी तो राजस्व के लोग भी हैं। जिलाधिकारी प्रयागराज नवनीत कुमार चहल ने भी प्रधान अल्हवा की शिकायती पत्र और पट्टे किए जाने की मांग पत्र के अनुसार उप जिलाधिकारी कोराव प्रयागराज को कार्यवाही हेतु आदेशित किया है। किंतु राजस्व कर्मियों की सेहत पर कोई असर नजर नहीं दिखता। इस निमित ग्राम प्रधान अल्हवा सोशल वर्कर ने सुनवाई न होने पर उच्च न्यायालय की शरण में जाने को बाध्य बताया हैं और भू अतिचारियों द्वारा जान माल सम्मान की सुरक्षा की जिला प्रशासन से मांग भी की है। जिससे ग्राम समाज की जमीनें मुक्त कराकर सरकारी विकास निर्माण कार्यों हेतु रिजर्व रख कर सेस और गरीबों को पट्टा किया जा सके।

24 वीं बार समाधान दिवस पहुंचे पीड़ित सुखलाल विश्व कर्मा

सुखलाल विश्व कर्मा पत्रकार खजूरी कोरांव में स्थित साठ साल पुराने मकान को बरसात में ढह जाने के बाद सरकार द्वारा मिले सीएम आवास को दो साल से अधिक समय से सम्पूर्ण समाधान और थाना सम्पूर्ण समाधान दिवस में हाजिरी देते हैं किंतु उन्हें अपनी ही मौरूसी घर जमीन पर मकान का निर्माण नहीं होने दे रहा स्त्रहंग। पत्रकार ने एक बड़ी बात कही कि जैसे हर जगह अप्रिय घटनाएं घट रही हैं। शायद तहसील और थाना के अधिकारी तभी मुझे न्याय देंगें जब मेरी हत्या हो जायेगी तब। क्योंकि आज कल जिंदा रहते न्याय नहीं मिल रहा। जब घटना कोई घटेगी तब ही न्याय मिल जायेगा और राजस्व अफसर भी पुलिस अधिकारी भी न्याय देंगें। शायद मुझे मेरी बली दी जाएगी ऐसा लगता है। कि मैं अपनी ही बपौती जमीन पर बरसात में गिरे मकान को निर्मित मरम्मती करण नहीं करा पा रहा हूं। यदि लाठी धन होता तो न्याय मिल जाता, दोनों से बेबस हूं। देखना है कि क्या स्थानीय प्रसासन न्याय देता है।

सूचना

सूचित किया जाता है कि प्रार्थी के कुछ शैक्षणिक अभिलेखों में प्रार्थी का नाम धरमबीर पुत्र श्री किशन लाल अंकित है तथा कुछ शैक्षणिक अभिलेखों में धरमबीर भास्कर पुत्र श्री किशन लाल अंकित है। उपरोक्त दोनों नाम मेरा ही है। भविष्य में मुझे धरमबीर भास्कर पुत्र श्री किशन लाल के नाम से जाना व पहचाना जाये।

प्रार्थी
धरमबीर भास्कर
145इ/19अ - 1चांदपुर
सलोरीपोस्ट, तेलियरगंज
मो. 9695052745

भारतीय राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे कांशीराम जी

सपा कार्यालय पर मनाई गई पुण्यतिथि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी कार्यालय मीराभवन पर दलितों, शोषितों एवं वंचितों के मसीहा कांशीराम की पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति पर माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर गोष्ठी के रूप में मनायी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष मनीष पाल व संचालन नगर अध्यक्ष निसार अहमद ने किया।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि कांशीराम जी भारतीय राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने भारतीय वर्ण व्यवस्था में बहुजनों के राजनीतिक एकीकरण तथा उत्थान के लिए कार्य किया। इसके अंत में उन्होंने दलित,

पुण्यतिथि पर आयोजित गोष्ठी में बोलते पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष मनीष पाल।

शोषित संघर्ष समिति में अखिल भारतीय पिछड़ा और अल्पसंख्यक समुदायों कर्मचारी महासंघ और बहुजन समाज को आगे बढ़ाने का कार्य किया। इस अवसर पर बाबा साहब वाहिनी के जिला अध्यक्ष विपिन सरोज, एससी/एसटी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष लक्ष्मी रमन पासी, अधिवक्ता सभा के जिला अध्यक्ष सुनील यादव, पिछड़ा वर्ग जिला उपाध्यक्ष जियाउल इसहाक, सुनील पुष्पजीवी, सुशील सागर, सुजीत गौतम, राजकुमार विश्वकर्मा, मानवेंद्र वर्मा, उत्तम यादव, अरविंद यादव, इमरान सभासद, मो. सारिक, मुस्तफा जाफरी, स्वामीनाथ यादव, शिवकुमार यादव, ओपी यादव, राजाराम पटेल, अमर बहादुर वर्मा, विपिन पाल, रामसुंदर यादव, फिरोज अहमद, आलोक यादव, उमंग यादव, खुर्शीद आलम, रोशन लाल पटेल, वीरेंद्र कुमार विरू पासी, नफीस अहमद, विजय मौर्य, विकास यादव, जगन्नाथ सरोज आदि लोग उपस्थित रहे।

कांग्रेसियों ने कांशीराम का मनाया परिनिर्वाण दिवस

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर काशीराम जी का परिनिर्वाण दिवस मनाया गया। कांग्रेस जनो ने काशीराम जी को पुष्पांजलि अर्पित किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ.लाल जी त्रिपाठी संचालन नगर अध्यक्ष इरफान अली ने किया। जिला अध्यक्ष डॉ. लालजी त्रिपाठी ने कहा कि काशीराम जी भारतीय राजनीति एवम सामाजिक न्याय के पुरोधा थे। यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ.नीरज तिवारी ने कहा कि काशीराम जी महान समाज सुधारक थे। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, महेंद्र शुक्ला,राम रतन तिवारी, पृथ्वीराज गौतम, सुधीर तिवारी, मनीष सिंह, उत्सव भूषण पाल, ओंकार नाथ मिश्रा आदि लोगों ने काशीराम जी को पुष्पांजलि अर्पित किए।

शराब पिलाकर पिस्टल स्टाकर दी जान से मारने की धमकी

20 लाख की जमीन की कीमत 20 हजार दिया

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जिले के भूमाफियाओ पर प्रदेश की योगी सरकार का तनिक भी खौफ नही दिखाई दे रहा है तभी तो कानून ब्यवस्था को दर किनारे रखते हुए लाखो रुपये की जमीन की कीमत का 20 हजार मे दारु व पिस्टल स्टाकर कर खेल कर दिया। मामला सोशल मीडिया पर वायरल होने पर हड़कंप मच गया।

जनपद के थाना संग्रामगढ़ लवाना के मूल निवासी रामफेर नाई पुत्र बैजनाथ ने पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ को दिये गये शिकायत पत्र मे आरोप लगाया है कि मै अपनी निजी भूमि गाटा संख्या 641 रकबा 0.8230हे0 ग्राम देवारा थाना संग्रामगढ़ के खेत में आलू की खुदाई कर रहे थे कि दो तीन युवक पड़ोसी जनपद के आये और मेरे पुत्र दीपक को पकड़ कर ले गयें जहा युवकों ने अपने दोस्त के घर मे दीपक को शराब पिलाई और लात घुसो से पिटाई करने के बाद् कनपटी पर पिस्टल सटाते हुए धमकी दिया कि मै जंहा कहूं वहा चलना होगा इसके बाद दीपक को कमरे मे बन्द कर दिया और दीपक को रात लगभग 8 बजे बेहोशी की हालत मे घर के बाहर छोड़ गये कहा कि यदि इसकी शिकायत करोगे तो जान से मार दूंगा। जब रामफेर खेत की जोताई करने के लिए अपने खेत 5 जुलाई 23 को गया तो वहाँ से युवको ने भगा दिया कहा मैं आधा खेत का बैनामा करा लिया, जिस पर पैरो तले जमीन खिसक गई । पीड़ित परिजनों ने पुलिस अधीक्षक से जानमाल की सुरक्षा की गुहार लगाते हुए मामले मे कड़ी कारवाई करने की मांग की है जिससे पीड़ित का खेत उसे वापस मिल सके।

मनरेगा लेवर का पैसा ग्राम पंचायतों के खाता में न आने से गांव का कामकाज ठप

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास खण्ड कालाकांकर के ग्राम पंचायतो मे मनरेगा लेवर का पैसा पंचायत निधि खाते मे न आने से ग्राम पंचायतो मे होने वाले काम काज बंद पड़े हुए है जिससे गांव का विकास कार्य सुचारु रूप से नही हो पा रहा है जिसको लेकर ग्राम पंचायत की जनता ग्राम प्रधानों पर विकास कार्य न करने का आरोप लगा रही है।

ग्राम प्रधानों में काम काज न होने से मायूसी

उधर ग्राम प्रधानों का कहना है कि जब खाते मे पैसा आएगा तभी तो हम लोग काम कराने की मजदूरी देंगे अभी हम लोग खुद ही कर्ज मे डूबे हुए है किसी तरह इधर उधर से लोगों से मांगकर पिछले काम का पैसा थोड़ा थोड़ा करके लेवरो को दिया गया है ताकि उनका भी परिवार का खर्च चल सके पंचायत निधि खाता मे अभी तक पैसा न आने से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मालूम हो कि ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर मे मनरेगा लेवर का भुगतान पंचायत निधि खाता मे न आने से सन्नाटा पसरा हुआ हैं। ग्राम प्रधान लोग ब्लाक का रोज सुबह शाम चककर लगाते है कि शायद खाता में पैसा आ गया होगा लेकिन जब पता करते हैं तो निराशा हाथ लगती है। इस बाबत जानकारी करने पर खण्ड विकास अधिकारी प्रवीन कुमार श्रीवास्तव व मनरेगा आपरेटर शिव बहादुर ने बताया कि ग्राम पंचायतो मे पिछले माह 23 अगस्त के बाद 2 सितम्बर 23 से मनरेगा लेवर का शासन स्तर से ग्राम पंचायत निधि के खाते मे पैसा नही आया। ग्राम प्रधानों ने जिलाधिकारी व सीडीओ का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया है।

फीस की जानकारी करना अभिभावक को पड़ा महंगा

लालगंज, प्रतापगढ़। स्कूल में बढ़ी फीस की जानकारी करना एक अभिभावक को महंगा पड़ गया।स्कूल के प्रबंधक ने जानकारी न देकर कर्मचारी के साथ मिलकर उसकी पिटाई कर दी। पीडित ने मामले में पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार की है। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के वर्मा नगर निवासी श्याम सुंदर यादव पुत्र राजाराम यादव ने पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया है कि उसकी पुत्री इलाके के एक विद्यालय में कक्षा छः की छात्रा है। कक्षा छः की फीस में की गई बढोत्तरी के बाबत जानकारी हासिल करने वह छः अक्टूबर को शाम साढ़े चार बजे विद्यालय गया था। आरोप है कि यहां अभिभावक द्वारा फीस बढ़ोत्तरी की जानकारी मांगने के दौरान प्रबंधक ने उसे जानकारी न देकर विद्यालय के अनुचर के साथ मिलकर उसे मारा-पीटा व जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने स्कूल प्रशासन की मनमानी व की गई अभद्रता की शिकायत पुलिस की है।

उद्योग व्यापार मण्डल ने जीएसटी को लेकर अधिकारियों के साथ की बैठक

समस्याओं का समाधान कराने का अधिकारियों ने दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल प्रतापगढ़ के जिला अध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी के ने बताया कि प्रयागराज मंडल के वाणिज्य कर विभाग के जॉइंट कमिश्नर आर. के. त्रिपाठी, डिप्टी कमिश्नर राम भवन राम, असिस्टेंट कमिश्नर खंड एक आनंद कुमार सिंह, असिस्टेंट कमिश्नर खंड 2 सुनील कुमार चैधरी, राज्य कर अधिकारी संदीप मिश्रा, सहायक अधिकारी दिव्या तिवारी, प्रशासनिक अधिकारी सुशील बाबू एवं सुरेश बाबू के साथ विभाग के कार्यालय में जीएसटी के संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को लेकर एक बैठक आहूत की गई।

अधिकारियों के साथ बैठक करते व्यापार मण्डल के पदाधिकारी।

बैठक में मुख्य रूप से गत वर्ष से इस वर्ष में जीएसटी संकलन में राज्य सरकार के कोष में अधिक टैक्स की बढ़ोतरी हुई, जिसके लिए जॉइंट कमिश्नर ने व्यापार मंडल जिला अध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी एवं समस्त पदाधिकारी और समस्त व्यवसाईयों को बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। नगर सहित ग्रामीण अंचलों में जीएसटी रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु सभी व्यवसाईयों को जागरूक करना और ज्यादा से ज्यादा रजिस्टर्ड कराने हेतु व्यापार मंडल से अनुरोध किया एवं उन्हें जीएसटी विभाग द्वारा जो महत्वपूर्ण विभिन्न सरकारी योजनाएं एवं महत्वपूर्ण लाभ जो राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा विभाग से व्यवसाईयों को प्राप्त होती है इसका लाभ उठाएं, साथ ही अन्य विभिन्न जीएसटी सरलीकरण के नियमों से भी अवगत कराते हुए उनके किसी भी प्रकार के विभागीय समस्याओं का निराकरण हेतु अधीनस्थ अधिकारियों को उदाराता पूर्वक समस्याओं का समाधान का निर्देश दिया। बैठक में महत्वपूर्ण रूप से जिला महामंत्री संजय सोनी, जिला मंत्री राहुल केसरवानी, प्रदेश संगठन मंत्री प्रमोद केसरवानी, अरविंद जैन, अशोक केसरवानी, सुधीर केसरवानी, स्वप्नील जयसवाल एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

संग्रामगढ़ थाना क्षेत्र में विवाहिता ने फांसी लगाकर दी जान

जानकारी मिलने पर मृतिका के परिजन लोग पहुँचे

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जिले के संग्रामगढ थाना क्षेत्र के भददिव डीह निवासी अंकित पांडेय पुत्र भरतलाल पांडे की शादी नवाबगंज थाना क्षेत्र के आलापुर रेलवे क्रांसिंग निवासी श्याम मूर्ति पांडेय की पुत्री आयुषी देवी (24) वर्षीय के साथ अप्रैल 2018 मे हुई थी।

उसके लगभग एक साल का एक बेटा है जिसका नाम नाना ने शिव रखा था। रविवार की भोर पहर लगभग तीन बजे आयुषी का शव कमरे में पंखा के सहारे दुपट्टा से लटकता देख हड़कंप मच गया। घटना की जानकारी मृतिका के ससुर भरतलाल ने आयुषी के पिता श्याममूर्ति पांडेय को दी। मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सभी मृतिका के ससुराल भद्दीव पहुंच गये और घटना की जानकारी संग्रामगढ़ पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने तहसीलदार की मौजूदगी में शव को परिजनों की मदद से नीचे उतारा और लिखा पढ़ी करके पीएम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया।

मलिन बस्ती सहित रुपापुर व देवकली में हुई व्यापक सफाई

नाला क्लीनिंग मशीन, फागिंग मशीन व एंटी लार्वा मशीन के साथ जुटे रहे 50 कर्मचारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शासन के निर्देश पर तीन अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक चलाये जा रहे संचारी रोग नियंत्रण अभियान को नगर पालिका पूरे शहर में अध्यक्ष हरिप्रताप सिंह व ईओ राम अचल कुरील के निर्देशन में रोस्टर के अनुसार नियमित रुप से नाले-नालियों की सफाई, झाड़ियों की कटाई, एंटी लार्वा का छिड़काव व फागिंग का छिड़काव किया जा रहा है।

जेसीबी मशीन से कूड़ा उठाते नगर पालिका कर्मी।

आज सोमवार को रुपापुर व देवकली में नालियों की सफाई, झाड़ियों की कटाई, एंटी लार्वा का छिड़काव व फागिंग का छिड़काव किया गया। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि आज सफाई के इस अभियान में सरोज चैराहे के कांशीराम कालोनी में भी नाला क्लीनिंग मशीन, डम्पर व टैज्क्टर लगाकर सफाई कार्य किया गया। आज के इस सफाई अभियान में 50 सफाई कर्मचारी लगाए गए थे। इसके अलावा दो नाला क्लीनिंग मशीन, दो फागिंग मशीन व जेसीबी का प्रयोग किया गया।

सीएमओ की अध्यक्षता में हुई समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आज सीएमओ जी एन शुक्ला की अध्यक्षता में संचारी रोग अभियान की बैठक जिसमें नगर पालिका, जिला मलेरिया के अलावा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। सीएमओ ने बताया कि संचारी रोग अभियान से हम चिकनगुनिया, डेंग आदि संक्रामक रोगों से बच सकते हैं इसलिये इस अभियान को तेजी से चलाने और मच्छरों का प्रकोप रोकने का प्रयास किया जाना चाहिये। इसी के तहत यह अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कई सुझाव भी अधिकारियों को दिये।

अरविन्द यादव बने सपा के जिला सचिव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर एवं प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पार्टी नरेश उत्तम पटेल के संस्तुति से अरविंद यादव उर्फ गुड्डू नेता क्रांतिकारी अकेला नि० ग्राम सभा मरुआन थाना दिलीपपुर ब्लाक बाबा बेलखरनाथ धाम तहसील व विधानसभा क्षेत्र 250 रानीगंज प्रतापगढ़ को समाजवादी पार्टी जिला कार्यकारिणी में जिला सचिव नियुक्त किया गया। आज प्रतापगढ़ पार्टी के कार्यवाहक जिला अध्यक्ष गुलशन यादव ने अरविंद यादव उर्फ गुड्डू नेता क्रांतिकारी अकेला को जिला सचिव नामित किया है। इसके अलावा शिवकुमार यादव एडवोकेट को पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ जिला कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किया गया। इस दौरान अरविन्द यादव उर्फ गुड्डू किसान को सपा कार्यालय पर नियुक्त पत्र सौंपा गया।

अरविन्द यादव को नियुक्ति पत्र देते मनीष पाल।

मुंशी प्रेमचंद की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित कर अर्पित की श्रद्धांजलि

सृजना साहित्यिक संस्था ने किया आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 87वीं पुण्यतिथि पर सरस कुटीर सगरा सिटी रोड में कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम मुंशी प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई।जीवन के आरंभिक सेवाकाल में प्रतापगढ़ के डिस्ट्रिक्ट स्कूल में शिक्षण कार्य करने वाले एवं प्रतापगढ़ की माटी पर साहित्य साधना करने वाले महान कथाकार के कृतित्व व व्यक्तित्व पर गहन चर्चा भी हुई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद का साहित्य यकीनन आम जनमानस का साहित्य दर्पण है। उन्होंने आमजन की व्यथा एवं व्यवस्था की वास्तविक स्थिति का यथार्थ लेखन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कहानीकार प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ अंतिम व्यक्ति की व्यथा का सजीव चित्रण है।उनकी

कार्यक्रम में बोलते वरिष्ठ साहित्यकार दयाराम मौर्य रत्न।

प्रत्येक कहानी समाज को आईना दिखाने का कार्य करती है। इस अवसर पर कुंजबिहारी लाल मौर्य काकाश्री, श्रीनाथ मौर्य सरस, अनिल कुमार निलय, सूरज मौर्य आदि साहित्यकारों ने मुंशी प्रेमचंद की जीवनयात्रा पर विचार-विमर्श करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अनिल कुमार निलय ने किया।

पीस कमेटी की बैठक संपन्न, क्षेत्राधिकारी पट्टी रहे नदारद

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। नवरात्रि तथा दुर्गा पूजा के अवसर पर शांति व्यवस्था कायम करने के लिए पट्टी कोतवाली में दुर्गा पूजा समिति के सदस्यों पदाधिकारियो तथा क्षेत्र के संभ्रांत लोगों के साथ पुलिस ने पीस कमेटी की बैठक किया, जिसमें सभी को शांति व्यवस्था कायम करने की अपील करते हुए लोगों से सौहार्दपूर्ण तरीके से त्योहार मनाने के लिए अपील किया गया। पट्टी कोतवाल अर्जुन सिंह ने इस संबंध में कहा के नवरात्रि का पर्व भक्ति और आस्था का त्यौहार है साथ ही साथ शांति और सौहार्द का भी प्रतीक है इसलिए सभी को आपसी सामंजस्य बनाकर नवरात्रि का पर्व मनाना चाहिए उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की अराजकता बर्दाश्त नहीं की जाएगी हालांकि पीस कमेटी की बैठक में पट्टी कक्षेत्राधिकारी दिलीप सिंह नदारद दिखाई दिए। पीस कमेटी की बैठक में मुख्य रूप से उदय सिंह प्रधान रंजीत यादव फूलचंद शर्मा, राधे चैरसिया, विद्यासागर चैरसिया, रामसागर चैरसिया ,पंकज सिंह, रामकरण, विजयपाल यादव, हीरालाल, जगदीश यादव, विजय कुलदीप प्यार वर्मा महेंद्र वर्मा सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

सफाई कर्मचारी के परिवार वालों को दी गई सहायता राशि

पट्टी, प्रतापगढ़। सफाई कर्मचारी की मौत के बाद संगठन के लोगों ने हाथ बढ़ाकर मदद किया जिससे परिवार वालों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। सैफाबाद बाजार में सड़क दुर्घटना में भूशहर में सफाई कर्मचारी भोलानाथ की मौत हो गई। रविवार को उत्तर प्रदेश ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष अयोध्या प्रसाद यादव भोलानाथ के घर पहुंच कर परिवार वालों को ढांढस बंधाया और कहा कि संगठन आपके साथ खड़ा है। आसपुर देवसा ब्लॉक के सभी सफाई कर्मचारियों की सहायता से मृतक भोलानाथ की पत्नी डायना को आर्थिक सहायता के रूप में 70 हजार रुपये भी दिए गए हैं। इस मौके पर उत्तर प्रदेश ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के अस्सिटेंट ब्लॉक के अध्यक्ष कमलेश कुमार सरोज, बरसाती लाल, गिरजाशंकर, संजीव कुमार, राजेश, प्रदीप, दोस्ती, राकेश, रामशरण, दिनेश, कमलेश कुमार सरोज और अन्य ब्लॉक आसपुर देवसा के सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।

विश्वकर्मा परिवार की निर्मम हत्या के विरोध में विश्वकर्मा विकास परिषद ने जताया विरोध

मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को दिया गया

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। विश्वकर्मा विकास परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्यामलाल विश्वकर्मा के नेतृत्व में जनपद कानपुर देहात के थाना गजनेर अंतर्गत ग्राम शाहजहांपुर में विश्वकर्मा परिवार के दीनू विश्वकर्मा रामदेव विश्वकर्मा की पीट पीट कर निर्मम हत्या किए जाने की घटना की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन जिलाधिकारी प्रतापगढ़ को दिया गया।

ज्ञापन में मृतक परिवार को पांच करोड रुपए की आर्थिक मदद देने का साथ परिवार के एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी दिए जाने की मांग की गई है। पीड़ित परिवार के जान माल की सुरक्षा के लिए दो शस्त्र लाइसेंस जारी करने व घटना के दोषी लोगों के मकान पर बुलडोजर चलाने के साथ संपूर्ण घटना की उच्च स्तरीय जांच की मांग भी की गई है। दोषियों के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में अपराध पंजीकृत कर कड़ी कार्रवाई की अपेक्षा की गई है। इस मौके पर कमलेश विश्वकर्मा, जिला पंचायत सदस्य पूनम इंसान, पवन कुमार विश्वकर्मा, राजेश कुमार विश्वकर्मा, भरत व्यास शर्मा एडवोकेट, राकेश कुमार, राजू विश्वकर्मा, रंजना विश्वकर्मा, ज्ञान प्रकाश विश्वकर्मा, राम करन विश्वकर्मा, अभिनव, बाबूलाल, राजू विश्वकर्मा, बालकृष्ण, देवीदीन, सुरेंद्र, दिनेश कुमार, दूधनाथ सहित विश्वकर्मा समाज के दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

हत्या का विरोध जताते विश्वकर्मा विकास परिषद के पदाधिकारी।

तीसरे दिन भी नदी में उतराये शव का नहीं हो सका शिनाख्त

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नदी में उतराये अधेड़ के शव की तीसरे दिन भी सिनाख्त नहीं हो सकी। सांगीपुर थाना के डभियार जलालाबाद से गुजरी सई नदी में शनिवार की शाम पुलिस ने एक बहते हुए शव को कब्जे में लिया था। काफी छानबीन के बाद भी पुलिस शव की शिनाख्त नहीं कर सकी। अगले दिन रविवार को पुलिस ने अज्ञात में शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। घुइसरनाथ धाम चैकी इंचार्ज राजेश शुक्ला का कहना है कि रायबरेली की तरफ से बहते हुए अधेड़ का शव यहां तक पहुंचा। काफी प्रयास के बाद भी उसकी शिनाख्त नही हो सकी। शिनाख्त के लिए शव मर्चरी हाउस में रखा हुआ है। मामले की छानबीन की जा रही है।

उधार का पैसा मांगने पर युवक की पिटाई, दी तहरीर

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के धारूपुर गौखाड़ी गांव निवासी कृष्ण कुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि छः अक्टूबर को वह अझारा गांव निवासी एक व्यक्ति को दिये गये अपने उधार के बारह सौ रुपए को मांगने गया था। आरोप है कि वहां आरोपी ने उसे जमकर मारापीटा व जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित का यह भी आरोप है कि आरोपी ने अगले दिन सात अक्टूबर की रात उसके दरवाजे पर बने मड़हा में आग लगाकर जला दिया। आरोपी पीड़ित को कहीं शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी भी दे रहे हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच के बाद उचित कार्रवाई की जाएगी।

छोटे भाई ने बड़े भाई को लाठियों से पीटकर उतारा मौत के घाट

अखंड भारत संदेश

थाना पुलिस ने आईपीसी की धारा 304 के तहत दर्ज किया मुकदमा

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र में दलित परिवार के तीन लोगों की हत्या का मामला अभी ठंडा भी नहीं पड़ा था कि रविवार की शाम को अपने सगे भाई को छोटे भाई ने लाठियों से पीट दिया है गंभीर अवस्था में उसे परिवार के लोग अस्पताल लेकर पहुंचे लेकिन डॉक्टर ने उसकी मौत की पुष्टि कर दी है हत्या की जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामलों की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई मौत की पुष्टि होने के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक संदीपन घाट थाना क्षेत्र के काजीपुर गांव में महादेव प्रसाद उम्र 45 वर्ष पुत्र मसूरिया दीन का अपने छोटे भाई से किसी बात को लेकर विवाद चल रहा है रविवार की शाम को महादेव उम्र लगभग 45 वर्ष का सरपट को लेकर छोटे भाई से विवाद हो गया घर इसी बीच उसके छोटे भाई ने लाठियां से पीटना शुरू कर दिया बेरहमी से लाठियां की पिटाई से महादेव जमीन पर गिर पड़ा खून से लहूलुहान हो गया मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुँची पुलिस मसूरिया दीन को अस्पताल लेकर पहुंची लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृतक घोषित कर दिया है मसूरिया दीन की मौत होते ही परिवार में कोहराम मच गया है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है हत्या करने के बाद हत्यारा भाई मौके से फरार है जिसकी तलाश पुलिस कर रही है मामले में पुलिस ने गैर इरादतन हत्या आईपीसी की धारा 304 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है।

दंगल देखकर घर लौट रहे किशोरों को डम्फर ने कुचला, एक की मौत दूसरा गंभीर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सरायअकिल थाना क्षेत्र के फकीराबाद चौराहे के समीप रविवार शाम दंगल मेला देखकर साइकिल से घर जा रहे किशोरों को तेज रफ्तार डंफर ने कुचल दिया। हादसे में दोनों घायल हो गए, अस्पताल ले जाते समय रास्ते में किशोर वली की मौत हो गई,जबकि दूसरा अस्पताल में भर्ती है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मोहम्मद वारिश (14) पुत्र मोबिन अहमद एवं वली अहमद मेला दंगल देखने गए थे,साइकिल से मेला देख कर वह वापस घर जा रहे तभी फकीराबाद चौराहे के पास करन चौराहा की तरफ से तेज रफ़्तार से आ रहे डंफर ने साइकिल में टक्कर मार दिया जिससे दोनो टायर के नीचे आ गए और वारिश का पैर टूट गया वली की हालत गम्भीर देख सरायअकिल सीएचसी से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जिला अस्पताल ले जाते वक्त उसकी रास्ते में मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया है। किशोर की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

न्यूज झरोखा

05 दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के लिए 60 किसान रवाना

डीएम ने सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन योजना के तहत कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसान भाइयों के प्रतिभाग के लिए बस को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने कृषि विभाग द्वारा संचालित सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजना के तहत चित्रकूट में आयोजित कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के किसान भाइयों के प्रतिभाग के लिए चित्रकूट जाने वाली बस को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उप कृषि निदेशक सतेन्द्र तिवारी ने बताया कि सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 में अन्तः राज्यीय 05 दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनॉक 09 अक्टूबर 2023 से 13 अक्टूबर 2023 तक तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवा जनपद चित्रकूट में किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसान भाइयों को कृषक हितार्थ आगामी रबी फसलोत्पादन कीट रोग प्रबन्धन जलप्रबन्धन, जैविक खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन आदि की नवीनतम जानकारी उपलब्ध करायी जायेंगी। जनपद के 60 प्रगतिशील कृषकों को बस के माध्यम से भेजने की व्यवस्था सहयोगी संस्था सदाचार समिति, प्रयागराज द्वारा करायी गई है।इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ0 विश्राम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

हाजी अब्दुल खालिक इण्टर कॉलेज के छात्रों का क्रिकेट टीम मण्डल में हुआ चयन

अझुवा कौशाम्बी। सरकार द्वारा चल रहे खेल कूद प्रतियोगिता में सिराथू सम्भाग से जीत कर हाजी अब्दुल खालिक इण्टर कॉलेज के छात्र जिला स्तरीय क्रिकेट मैच में शामिल हुए जिला स्तरीय क्रिकेट मैच का आयोजन सोमवार को विद्या पब्लिक स्कूल इमली गांव में आयोजित हुआ जिसमे जिला स्तरीय क्रिकेट मैच जीत कर हाजी अब्दुल खालिक इण्टर कॉलेज परास सिराथू के छात्रों ने फिर परचम लहराया और मण्डल स्तर के लिए चयनित हुए है उक्त जानकारी प्रधानाचार्य प्रेम गुप्ता प्रबंधक मुंसाब अली उस्मानी ने सयुक्त रूप से दी है

टिकरा गांव का दो दिवसीय मेला और दंगल सकुशल संपन्न

कौशाम्बी। महेवाघाट क्षेत्र के टिकरा गांव में रविवार और सोमवार को दो दिवसीय मेला और दंगल का आयोजन किया गया मेले में दूर दराज के हजारों महिला पुरुष बच्चे बूढ़े मेला देखने पहुँचे मेले के अखाड़ा मैदान में दंगल का आयोजन किया गया जहां तमाम पहलवानों ने अखाड़ा मैदान में अपनी कुश्ती का प्रदर्शन किया रोचक कुश्ती को देखने के लिए लगातार ग्रामीणों की भीड़ मौजूद रही और लगातार तालियां बजाकर पहलवानों का हौसला अफजाई करती रही फाइनल कुश्ती मुजफ्फरपुर के रजत पहलवान और टेवा के राजेश पहलवान के बीच हुई रोचक कुश्ती में कौशांबी टेवा के राजेश पहलवान ने मुजफ्फरपुर के रजत पहलवान को पटकनी दे कर कुश्ती की चैंपियन जीती है राजेश पहलवान मेला चैंपियन घोषित किए गए। दो दिवसीय मेले में खाने-पीने मिठाई चाट खिलौना श्रृंगार सामग्री आदि की दुकानें मेले का आकर्षण बढ़ाती रही मेले में जमकर ग्रामीणों ने खरीददारी की है सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस भी लगातार गस्त करती रही टिकरा गांव में दो दिवसीय मेले के आयोजक भगवती प्रसाद श्रीवास्तव, शिवप्रसाद तिवारी, विमल मिश्रा अधिवक्ता, अजय श्रीवास्तव, दिनेश कुमार, रामबरन, बृजलाल एव ग्रामीणों की मौजूदगी में विजई पहलवानों को पुरस्कृत कर उनका हौसला अफजाई किया गया है।

अखाड़ा चैंपियन रहे कौशांबी के आकाश तिवारी

कौशाम्बी। चायल तहसील के बसुहार गांव मे हो रहे दो दिवसीय दंगल के दूसरे एवं अन्तिम दिन सोमवार को बाहर से आए हुए पहलवानों के बीच अच्छी तथा रोचक कुश्तिया लडी गयी कुश्ती मे पहलवानों ने अपने प्रतिद्वंदी पहलवान को चित कर विजय प्राप्त की है दंगल के दूसरे दिन सोमवार को होने वाली कुश्ती प्रतियोगिता में तीन स्तर पर चैंपियन रखा गया था अखाड़ा चैंपियन तहसील चैंपियन जिला चैंपियन की श्रेणी बनाई गई थी जिसमें रंजीत कदीलाबाद कौशाम्बी ने बांदा के नीरज पहलवान को चित कर जीत दर्ज की है। वही पर गामा निवासी चायल कौशाम्बी पहलवान ने अपने प्रतिद्वंदी हरियाणा से आए हुए भूपेंद्र पहलवान को परास्त कर प्रथम चैंपियन होने का इनाम जीता है वहीं पर जिला चैंपियन का इनाम कौशांबी के सुजातपुर बमरौली निवासी आकाश तिवारी से अखाडा मे उपस्थित प्रतिद्वंदी पहलवानो ने हाथ मिलाने की हिम्मत नही की जिससे अखाड़ा चैंपियन का इनाम आकाश तिवारी ने हासिल कर जनपद का मान बढ़ाया है।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा स्वच्छता शपथ एवं कराया श्रमदान

कौशाम्बी। जन शिक्षण संस्थान कौशांबी कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा दिनांक दिनांक 1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2023 तक स्वच्छता अभियान के तहत मुख्यालय पर संस्थान के निदेशक राजकुमार पांडे द्वारा 9 अक्टूबर को स्वच्छता शपथ दिलाई गई तथा साफ सफाई एवं श्रमदान सभी स्टाफ एवं प्रतिभागियों द्वारा किया गया जिसमें संस्थान के निदेशक ने सभी प्रशिक्षार्थियों से स्वच्छता के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा किया इस कार्यक्रम में संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी संजय सिंह सहायक कार्यक्रम अधिकारी विजेंद्र मिश्रा राजू शुक्ला अनुदेशिका रूपा करिश्मा सरिता ज्योति हिमांशु सूरज आकांक्षा कविता आदि लोग मौजूद रहे

सनातन धर्म में मानव, पशु और प्राकृति सभी का आदर- अवधेश

कौशाम्बी। हिंदू जागरण मंच नगर पंचायत दारानगर कड़ा धाम की एक बैठक नगर के फरीदागंज स्थित प्राचीन शनि मंदिर में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि संगठन के जिला अध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला रहे अध्यक्षता नगर अध्यक्ष कृष्ण दत्त ओझा ने किया। बैठक में जिले में हिंदू समाज में फैली कुरीतियों समस्याओं तथा दूसरे धर्म के लोगों द्वारा हिंदू धर्म के मानने वाले पर विभिन्न प्रकार से किए जा रहे उत्पीड़नों पर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि अवधेश नारायण शुक्ला ने कहा कि सनातन धर्म सभी जीवों पर दया करता है यह जियो और जीने दो की अवधारणा पर चलता है लेकिन मौजूदा समय में दूसरे धर्म के लोगों द्वारा सनातन को मानने वालों पर विभिन्न प्रकार से चोट पहुंचाई जा रही हैं। जिसमें चंगाई सभाओं के नाम पर हिंदुओं को लालच देकर जिले में बड़ी मात्रा में मत अंतरण कराया जा रहा है। जिले में लैंड जिहाद और लव जेहाद की भी घटना सामने आती रहती हैं जो यह दिखाता है कि दूसरे धर्म के लोगों द्वारा हिंदू धर्म को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने कार्यकताओं से कहा कि जब आप एकजुट होकर अपने संगठन का संस्कारों का प्रचार प्रसार करते रहेंगे तो कोई भी हमें कमजोर नहीं कर पाएगा। इस मौके पर प्रमुख रूप से संगठन की उपाध्यक्ष यसवंत यादव, संजीत मोदनवाल, कामता यादव, शिखर मिश्रा, शनि मौर्य, उदय सिंह मोहित, गोविंद, सुधीर, विजय, गांधी यादव, दिरगज मौर्य, उदय, विकास, वाल्मीकि सहित सैकड़ों की संख्या में संगठन के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पारिवारिक कलह के चलते फांसी के फंदे से झूलकर अधेड़ किसान ने की आत्महत्या

कौशाम्बी जिले के कोखराज थाना क्षेत्र में पारिवारिक कलह के चलते अधेड़ किसान ने अपने घर पर कमरा बंद कर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है सुबह लोगो ने देखा तो हड़कंप मच गया परिवार में कोहराम मच गया मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और जांच में जुट गई। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के नगर पालिका परिषद भरवारी के रसूलपुर गिरसा निवासी भैय्यन उम्र 52 वर्ष पुत्र विश्वनाथ को कोई भी बच्चे नही थे,पत्नी मायके चली गई थी,जिससे वह परेशान रहता था,इसी दौरान रविवार की रात में वह अपने घर का दरवाजा बंद कर फांसी के फंदे से लटक गया और उसकी मौत हो गई।पत्नी को सूचना मिली तो वह भी रोते बिलखते पहुंची ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची कोखराज थाना क्षेत्र की सिंघिया चौकी पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई।

ट्रॉली सहित ट्रैक्टर खंदक में पलटने से चालक की मृत्यु

कल्यानपुर कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी टेड़ी मोड़ शहजादपुर के अंतर्गत कल्यानपुर निवासी रविन्द्र कुमार पटेल उम्र 26 वर्ष पुत्र आशा राम पटेल सोमवार की शाम 4 बजे अपने चचेरे भाई के ट्रैक्टर से मलाक रेजमा से फंटी बल्ली लादकर ककोढा उतारने जा रहा था कि खोजवापुर के जूनियर स्कूल के पास पुल के पास ट्राली सहित ट्रैक्टर रोड के किनारे खंदक में जाने से ट्रॉली में दबने से चालक रविन्द्र कुमार की मृत्यु हो गई ग्रामीणों ने चौकी टेडीमोड पुलिस को सूचना दिया घटना स्थल पर पुलिस पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम को भेज दिया है मौत की जानकारी मिलती ही परिवार में कोहराम मच गया है।

धर्म परिवर्तन कराने वाले नौ लोग गिरफ्तार

अझुवा कौशाम्बी चमत्कार के बहाने बीमारी ठीक करने की आड़ में प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराने वाले नौ लोगों को सैनी कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तार कर आरोपियों के विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। जानकारी के मुताबिक सैनी कोतवाली क्षेत्र के महुलीतीर गांव में शिव शंकर के घर में ग्रामीणों को एकत्रित कर चमत्कार के बहाने बीमारी ठीक कराने का झांसा देकर उन्हें प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था मामले की भनक सैनी कोतवाली पुलिस को लग गयी सूचना मिलते ही सैनी कोतवाली के उपनिरीक्षक तीर्थ राज गौतम सिपाहियों के साथ मौके पर जा पहुंचे पुलिस ने मौके से झुरी लाल पुत्र मिठाई लाल वा उसके बेटे बृजेश पटेल वा वीरेंद्र कुमार पुत्र जवाहरलाल वा शिव शंकर और चक्रधारी पुत्रगण मेवालाल वा चिंगा पुत्र शिवपाल निवासी मलाक निंदुरा महुली तीर और पवन उर्फ भोला साहू पुत्र संतोष कुमार निवासी टेडीमोड थुलगुला वा छेदीलाल पुत्र रामदेव पासी और अरुण कुमार मौर्य पुत्र रुद्रपाल निवासी गण चौरा मलाक निंदुरा थाना सैनी को मौके से गिरफ्तार किया है पकड़े गए आरोपियों पर धर्म परिवर्तन कराने का आरोप है पुलिस ने धर्म परिवर्तन का मुकदमा दर्ज कर आरोपियों को अदालत में पेश किया है।

पूर्व सांसद के दामाद के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज

प्रतापगढ़ के ठेकेदार का कौशाम्बी की रेल लाइन पर शव मिलने का मामला

कौशाम्बी। जिले के कोखराज थाना क्षेत्र में शुक्रवार की देर रात प्रतापगढ़ के युवक की हत्या कर लाश को रेलवे लाइन के किनारे फेंक दिया गया था मृतक के परिजनों ने बलरामपुर के पूर्व सांसद के दामाद पर हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस ने शनिवार देर रात सीसीटीवी फुटेज के जरिए कई जगहों पर छापेमारी की, साथ ही कोखराज टोल प्लाजा में लगे सीसीटीवी कैमरों का वीडियो खंगाला। पुलिस ने रविवार को मृतक के भाई शाहीद की तहरीर पर बलरामपुर के पूर्व सांसद के दामाद रमीज खान पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्रतापगढ़ के जेठवारा निवासी मो. शकील उम्र 35 वर्ष पुत्र मोहम्मद याकूब प्रॉपर्टी के कारोबार के अलावा ठेकेदारी भी करता था। मो. शकील की शुक्रवार की देर रात रोही बाईपास के समीप रेलवे पटरी के किनारे लाश मिली थी। शव से कुछ ही दूरी पर शकील की कार लावारिस हालत में मिली थी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर कार को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी थी।शनिवार को पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे परिजनों ने शव की शिनाख्त की। शिनाख्त के बाद मृतक के भाई मोहम्मद शाहिद ने मो. शकील की हत्या करने का आरोप बलरामपुर के पूर्व सांसद के दामाद रमीज खान पर लगाया। परिजनों का आरोप था कि रुपये के लेनदेन को लेकर पूर्व सांसद के दामाद ने शकील को फोन करके हाईवे पर बुलाया था और एक ढाबा में रुकने के बाद बहाने से उसको मार डाला और रोही में रेलवे लाइन पर लाश फेंक दी गई। शनिवार की देर रात एसओजी व कोखराज थाना पुलिस ने रोही बाईपास के पास स्थित ढाबे से मिले सीसीटीवी फुटेज के आधार पर कई जगहों पर छापेमारी की साथ ही कातिलों की सुरागरशी शुरू कर दी है। पूरे मामले में कोखराज थाना प्रभारी विनोद मौर्य ने बताया कि मृतक के भाई शाहीद की तहरीर पर बलरामपुर के पूर्व सांसद के दामाद रमीज खान के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। फिलहाल घटना की जांच की जा रही है जल्द ही मामले का खुलासा किया जाएगा।

विद्युत मीटर रीडर ने ग्रामीणों पर लगाया छिनैती का आरोप

महगाव कौशांबी। विद्युत पावर हाउस अमनी लोकीपुर में विद्युत रीडिंग करने वाले अभिषेक सिंह पुत्र ओमप्रकाश निवासी जलालपुर बोरियों थाना संदीपन घाट 09 अक्टूबर को लगभग 4 बजे चरवा थाना क्षेत्र के काजू गांव में विद्युत मीटर रीडिंग करने गए थे इसी बीच गांव के कुछ लोगों ने उन्हें रोक लिया और कहा कि बेवजह रात में विद्युत कटौती कर देते हो जिससे ग्रामीणों को परेशानी होती है वाद विवाद बढ़ गया आरोप है कि ग्रामीणों ने विद्युत मीटर रीडर के साथ मारपीट की है पीड़ित का कहना है कि उसे जमीन पर पटक के मारा गया है जान से मारने की धमकी दी गयी है पुलिस को दिए शिकायती प्रार्थना पत्र में विद्युत मीटर रीडर ने बताया कि मारपीट के बाद उससे 22 हजार रुपए छीन लिया गया है।

अवैध अतिक्रमण के खिलाफ नगर पंचायत की एकतरफा कार्यवाही से मोहल्ले में नाराजगी

अखंड भारत संदेश

चायल, कौशाम्बी। चायल तहसील के नगर पंचायत चायल में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ अधिशासी अधिकारी प्रवीण कुमार ने सख्त रूप अपनाया और तालाब के किनारे बने शौचालय को जमीदोज किया लेकिन कार्यवाही में पक्षपात साफ दिखाई पड़ा केवल एक ही लोगों का शौचालय ध्वस्त किया गया अन्य लोगों को अभयदान दे दिया गया है वहीं लोगों की माने तो सैकड़ो ऐसे अवैध कब्जा धारक हैं बीते दिनों उनको भी नोटिस दिया जा चुका है। उन लोगों पर कार्यवाही न होने से मोहल्ले में नाराजगी है। वहीं लोगों की माने तो नगर पंचायत चायल में अवैध तरीके से नल कनेक्शन को बन्द कराया और जिन नल में टोटी नहीं लगी उनको भी बन्द कराया और कुछ लोगो को जल्द टोटी लगाने की हिदायत दिया हालाकि नगर प्रशासन ने पूर्व में भी कई लोगो को नोटिस देकर हिदायत दिया लेकिन नोटिस पर अमल नहीं किया जिसको लेकर सोमवार को नगर प्रशासन ने कर्मचारियों के साथ जाकर कार्यवाही की बड़ी बात तो यह है की नगर प्रशासन ने पूर्व में कई लोगो को नोटिस दिया था लेकिन सिर्फ एक ही लोग का शौचालय जमींदोज किया गया अवैध तरीके से बना और लोगो का शौचालय नहीं गिराया गया उन पर प्रशासन कब सख्त रुख अपनाएगा।

चौकी सिपाहियों पर मारपीट कर छिनैती का आरोप

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी मूरतगंज के सिपाहियों पर राजगीर से मारपीट कर रुपए छीनने का आरोप लगा है मामले की शिकायत राजगीर ने थाना पुलिस से की है। जानकारी के मुताबिक मूरतगंज पुलिस चौकी क्षेत्र के मितवापुर मोड में 8 अक्टूबर की रात में मकान का निर्माण हो रहा था मकान निर्माण में लेबरों के साथ छोटे लाल मिस्त्री मकान के निर्माण में लगा था काम खत्म करने के बाद मिस्त्री मजदूरों को मजदूरी देने जा रहा था इसी बीच पुलिस चौकी का एक सिपाही दो अन्य लोगो के साथ मौके पर पहुंचे और छोटेलाल से कहा यहां क्या कर रहे हो उसने बताया कि मकान निर्माण हो गया है लेबरों को मजदूरी देनी है इतनी बात पर सिपाहियों ने छोटे लाल को मारपीट कर जबरिया पुलिस चौकी उठा ले आए सिपाहियों पर आरोप है कि पुलिस चौकी में दरोगा की मौजूदगी में सिपाहियों ने राजगीर मिस्त्री पिटाई की है मजदूरी का पैसा 15000 राजगीर से सिपाहियों ने छीन लिया है और आधी रात के बाद 2:00 बजे मिस्त्री को पुलिस चौकी से छोड़ा गया है मामले की तहरीर लेकर 9 अक्टूबर को जब राजमिस्त्री संदीपन घाट थाना पहुंचा तो राजमिस्त्री की फरियाद सुनने की वजह उसी पर आरोप लगाया जाने लगा कि तुमने सिपाहियों का कॉलर पकड़ लिया है राजमिस्त्री की तहरीर लेने के बजाए उसे डॉट डपट कर थाना से भगा दिया गया है।

चोरी के दो अन्य अभियुक्तों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

टेडीमोड कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के टेंगाई पहलवान बाबा के पास 10 सितंबर की रात्रि में ज्ञानचंद उर्फ. नेताजी पुत्र फूलचंद के घर चोरी की घटना में दो अभिकयों को पुलिस गिरफ्तार कर पहले जेल भेज चुकी है इस मामले में प्रकाश में आए नाम अभियुक्त गयादीन पुत्र राजाराम पासी व सत्यम पुत्र रंजीत कुमार उर्फ रंगबाज निवासी थाना व गांव कोखराज को 9 अक्टूबर को उप निरीक्षक वीरेंद्र कुमार शुक्ला ने टेढ़ीमोड़ अंदावा के पास से गिरफ्तार किया है इनके कब्जे से एक देसी तमंचा जिंदा कारतूस दो देसी बम चोरी से संबंधित एक अंगूठी बाइक चैन 16 सौ रुपए नगद तथा घटना के समय प्रयोग में लाई गई मोटरसाइकिल बजाज डिस्कवर को पुलिस ने बरामद किया है और पकड़े गए आरोपियों के विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा दर्ज करके न्यायालय चालान कर दिया है।

महाराजा कड़ादीन पासी मुक्ति आंदोलन पासी समाज की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। महाराजा कड़ादीन पासी मुक्ति आंदोलन पासी समाज की बैठक रविवार को मूरतगंज ब्लॉक के बड़े गांव में जिला पंचायत सदस्य रामनरेश पासी के यहां सम्पन्न हुई, बैठक के संयोजक रामनरेश पासी रहे बैठक की अध्यक्षता पांचूलाल भारती ने किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से वक्ताओं ने कहा कि महाराज कड़ेदीन पासी के किले को मुक्त करने के लिए समाज इसका पूरा साक्ष्य इकट्ठा कर-के कड़ादीन पासी के किले को मुक्त कराया जाएगा साथ ही साथ समाज के लोगो को शिक्षित करने पर जोर दिया गया। इस मौके पर उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि प्राथमिक व जूनियर विद्यालयों में शिक्षा के सुधार के लिए बहुत जल्द जिलाधिकारी कौशाम्बी को ज्ञापन दिया जायेगा साथ ही साथ किसी के खिलाफ होने वाले अत्याचार अन्याय के खिलाफ हमारा संगठन इस पूरी लड़ाई को लड़ेगा! इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष चरवा जगनारायण पासी, पूर्व ब्लॉक प्रमुख सोनू पासी, पूर्व ब्लॉक प्रमुख गिरीश पासी, पंचूराम भारती पूर्व ब्लॉक प्रमुख, धनंजय पासी एडवोकेट, प्यारेलाल सरोज, विश्वनाथ प्रधान, प्रहलाद प्रधान, देशराज पूर्व प्रधान, राजन सरोज, ब्रह्मानंद पासी, प्यारेलाल सरोज, राजू पासी, रामकिशोर प्रधान, अशर्फी लाल पूर्व प्रधान, धारा सिंह पासी, होरीलाल पूर्व प्रधान, बसंत लाल पूर्व प्रधान, रामबालक पूर्व प्रधान, रामलौटन प्रधान आदि लोगो ने बैठक के दौरान समाज को संगठित करने का मुद्दा उठाया।

भ्रष्टाचार की खबर लिखने से पत्रकारों से रंजिश रखते हैं सहायक सूचना अधिकारी

अखंड भारत संदेश

सरकार और अधिकारियों तक हकीकत भेजने के बजाय सच्चाई छुपाने का भरसक प्रयास करने वाले सहायक सूचना अधिकारी को दंडित किए जाने की मांग

कौशाम्बी। योगी सरकार के निर्देश के विपरीत कार्य करने वाले अधिकारियों के कारनामे उजागर करने वाले पत्रकारों से सहायक सूचना अधिकारी रंजिश रखने लगे हैं आखिर सरकार के विरोध में कार्य करने वाले भ्रस्ट अधिकारियों भ्रस्ट कर्मचारियों से सहायक सूचना अधिकारी रवि जायसवाल के क्या रिश्ते हैं उच्च स्तरीय जांच कर इसे उजागर करने की जरूरत है जिससे हकीकत सरकार तक पहुंचती रहे।

भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों कर्मचारियों के कारनामों की सच्चाई समाचार पत्रों में उजागर करने के बाद सच्चाई की जांच कराने के बजाय हकीकत पर पर्दा डालने का प्रयास सहायक सूचना अधिकारी द्वारा शुरू हो जाता है फोन करके पत्रकारों को हकीकत लिखने से रोका जाता है भ्रष्ट अधिकारियों के कारनामे प्रकाशित किए जाने के बाद सरकार की बदनामी कहकर सूचना अधिकारी द्वारा हकीकत पर कुठाराघात किया जाने का प्रयास किया जा रहा है लगातार लोकतंत्र का गला इनके द्वारा घोटा जा रहा है आखिर भ्रष्टाचार के कारनामे सरकार तक पहुंचने से सूचना अधिकारी को क्यों खराब लगता है भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों से इनके क्या रिश्ते हैं यह तमाम सवाल बड़ी जांच का विषय है सूचना अधिकारी के द्वारा दायित्व के विपरीत किए जा रहे कार्यों की शासन स्तर से जांच हुई तो सहायक सूचना अधिकारी पर गाज गिरना तय है सहायक सूचना अधिकारी का वर्षों से लगातार यही प्रयास रहता है।

आला अधिकारियों तक जिले की हकीकत ना पहुंच पाए इसी उद्देश्य के चलते सहायक सूचना अधिकारी द्वारा लगातार सच्चाई की कलम रोकने का प्रयास किया जा रहा है। सूचना कार्यालय का गठन इसलिए हुआ था कि जनमानस के बीच की चर्चा अधिकारियों और शासन तक पहुंचे शासन की योजनाओं का प्रचार प्रसार आम जनमानस तक करे लेकिन यह पूरे दिन आराम तलब हो गए हैं अधिकारियों के आगे पीछे एसी रूम में बैठकर मौज मस्ती करते रहते हैं इतना ही नहीं आम जनता के बीच की चर्चा को अधिकारियों और शासन तक पहुंचाने के बजाए सहायक सूचना अधिकारी द्वारा उसे दबाने का प्रयास किया जाता है यह अपने को खुद सरकार समझने लगे हैं भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों के कारनामे की हकीकत उजागर होने के बाद सहायक सूचना अधिकारी कौशाम्बी क्यों बौखला जाते हैं। हकीकत लिखने वाले पत्रकारों से सूचना अधिकारी क्यों रंजिश रखते हैं संगठित अपराध में लिप्त लोग भी सूचना अधिकारी के नजदीक बताए जाते हैं यह तमाम कारनामें बड़ी जांच का विषय है। सहायक सूचना अधिकारी द्वारा सच्चाई के समाचार को रोकने से सरकार और अधिकारियों तक हकीकत नहीं पहुंच पाती है और भ्रष्ट्र अधिकारियों के मंसूबे सफल हो रहे हैं जिससे सरकार की बार-बार किरकिरी हो रही है।

सहायक सूचना अधिकारी का यह कारनामा बेहद संवेदनशील है इस पर गहन चिंतन मनन करने की जरूरत है सहायक सूचना अधिकारी के कारनामे के चलते दर्जनों पत्रकारों में आक्रोश व्याप्त है और पत्रकारों ने आपात बैठक कर सहायक सूचना अधिकारी के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया है और योगी सरकार से मांग किया है कि अपने पद के विपरीत कार्य करने वाले सहायक सूचना अधिकारी रवि जायसवाल के कारनामों की उच्च स्तरीय जांच कराकर इन्हें दंडित कर कौशांबी में नए सूचना अधिकारी की तैनाती की जाए।

संपादक की कलम से

स्वस्थ समाज के लिए स्वस्थ मानसिकता जरुरी

संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस हर साल 10 अक्टूबर को मनाया जाता है द्य इस साल की थीम मानसिक स्वास्थ्य एक सार्वभौमिक मानव अधिकार है रखा गया है। मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर समस्या के तौर पर देखी जाती है।आज के दौर में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरी हैं। एक बेहतर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वस्थ मानसिकता अत्यंत आवश्यक है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का समग्र उद्देश्य दुनिया भर में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और मानसिक स्वास्थ्य के समर्थन में प्रयास जुटाना है। यह दिन मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम करने वाले सभी हितधारकों को अपने काम के बारे में बात करने का अवसर प्रदान करता हैए और दुनिया भर के लोगों के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल को वास्तविकता बनाने के लिए और क्या करने की आवश्यकता हैए इसके बारे में बात करने का अवसर प्रदान करता है। इस दिन पूरी दुनिया में मानसिक बीमारी से जुड़े हुए विषय पर कई प्रकार के स्वास्थ्य संबंधित प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं। जिसमें लोगों को किस प्रकार आप अपने आप को मानसिक रूप से स्वस्थ रखेंगे उसके बारे में डॉक्टर के द्वारा कई प्रकार के टिप्स और जानकारी उपलब्ध करवाए जाते हैंए ताकि आप उन टिप्स और जानकारी का अनुसरण कर अपने आप को मानसिक रूप से मजबूत बना सके। तनावए चिंता और अवसाद या फिर किसी भी तरह की मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या मानसिक रोगों की श्रेणी में आता है। मानसिक रोगी की मनोदशा और स्वास्थ्य का असर उसके स्वभाव में देखने को मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाता है। एक सर्वे के मुताबिक देश के 59 फीसदी से अधिक लोगों को लगता है कि वह अवसाद की स्थिति से जूझ रहे हैं। लेकिन वह अपने परिवार व दोस्तों से इसका जिक्र नहीं करते हैं। क्योंकि कहीं ना कहीं आज भी मानसिक बीमारी हमारे देश एक वर्जित विषय के तौर पर देखा जाता है। मानसिक रोग के लक्षण लगातार उदास रहना मूड का बार .बार बदलना असामान्य बर्ताव करना अचानक से गुस्सा होना और अचानक से हंसना घबराहट या दर्द होना आदि।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनियाभर में 280 मिलियन ;28 करोड़द्ध से अधिक लोग डिप्रेशन के शिकार हैं। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर सामाजिक टैबू के चलते इनमें से ज्यादातर लोगों का समय पर इलाज नहीं हो पाता है। भारत में 9ए000 मनोचिकित्सक हैं या प्रति 100ए000 लोगों पर एक। प्रति 100ए000 लोगों पर मनोचिकित्सकों की आदर्श संख्या तीन है। परिणामस्वरूपए भारत में 18ए000 मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी है। डब्ल्यूएचओ का यह भी अनुमान है कि लगभग 7० 5 प्रतिशत भारतीयों को मानसिक बीमारी है और इस साल के अंत तक लगभग 20 प्रतिशत भारतीयों को मानसिक बीमारी होगी। आंकड़ों के मुताबिकए 56 मिलियन भारतीय अवसाद से पीड़ित हैं। अन्य 38 मिलियन लोग चिंता विकारों से पीड़ित हैं।ॅभ्व के अनुसारए 2012 से 2030 के बीच मानसिक स्वास्थ्य विकारों के कारण भारत को 1०03 ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक नुकसान होगा।

मेंटल हेल्थ को ठीक रखने के लिए जरूरी है कि आप शारीरिक रूप से सक्रिय रहें। सेंडेंटरी लाइफस्टाइल यानी शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण गुड हार्मोन सेरोटोनिन का रिलीज कम हो जाता हैए जो सीधे तौर पर मूड को ठीक रखने के लिए आवश्यक है।

फ्रीबीज कल्चर देश के लिए घातक

हाल ही में 6 अक्टूबर को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने फ्रीबीज मामले पर सुनवाई करते हुए केंद्र और दो राज्य सरकारों को नोटिस जारी किए हैं और अदालत ने चार हफ्तों में इस मामले में सरकारों से अपना जबाब प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। दरअसल माननीय सुप्रीम कोर्ट ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह नोटिस जारी किए हैं। यह बहुत ही संवेदनशील है कि चुनावों के दौरान राजनितिक दलों द्वारा वोटर्स को फ्रीबीज या मुफ्त के उपहार के वादे किए जाते हैं और फ्रीबीज की रेवड़ियां बांटी जाती हैं। ये मुफ्त की रेवड़ियां बांटना किसी भी हालत में ठीक व जायज नहीं ठहराया जा सकता है। यदि देश में फ्रीबीज जारी रहता है तो निश्चित ही यह हमारे देश को भविष्य की आर्थिक आपदा की ओर ले जाएगा। जानकारी देना चाहूंगा कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया हाल ही में कुछ समय पहले की 31 मार्च 2023 तक की रिपोर्ट में सामने आया है कि मप्र, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल जैसे राज्य टैक्स की कुल कमाई का 35% तक हिस्सा फ्री की योजनाओं पर खर्च कर देते हैं। पंजाब 35.4% के साथ सूची में टॉप पर है। मप्र में यह हिस्सेदारी 28.8%, राजस्थान में 8.6% है। आंध्र अपनी आय का 30.3%, झारखंड 26.7% और बंगाल 23.8% तक फ्रीबीज के नाम कर देता है। केरल 0.1% हिस्सा फ्रीबीज को देता है। सच तो यह है कि भारतीय राजनीति में सत्ता पाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दल विभिन्न प्रकार की लोक लुभावन घोषणाएं करने में पीछे नहीं रहते हैं और भारतीय राजनीति में यह सिलसिला आज से नहीं चला है, यह बहुत पहले से ही चला आ रहा है। जैसे ही चुनाव नजदीक आते हैं, वैसे ही राजनीतिक दल लोकलुभावन घोषणाओं का अंबार लगा देते हैं और फ्रीबीज के नाम पर वोटर्स को अपनी ओर खींचते हैं।पिछले कई सालों से तो

यह सिलसिला लगातार चला आ रहा है, जो लोकतंत्र के लिए बहुत ही घातक है।चुनाव आते ही राजनीतिक पार्टियां वोटरों को लुभाने के लिए बड़े-बड़े वादे कर देती हैं और इसे इसे ही वास्तव में राजनीतिक भाषा में फ्रीबीज या रेवड़ी कल्चर कहा जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने भाषणों में इस रेवड़ी कल्चर को देश के लिए नुकसानदायक परंपरा बता चुके हैं। किसी ने फ्रीबीज कल्चर पर बिल्कुल ठीक ही कहा है कि 'गरीब की थाली में पुलाव आ गया है...लगता है शहर में चुनाव आ गया है।' वास्तव में भारत की राजनीति पर ये दो पंक्तियां सटीक टिप्पणी हैं। बहरहाल, यहां यह बात उल्लेखनीय है कि अभी राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना व मिजोरम में विधानसभा के चुनाव नवंबर-दिसंबर में होने वाले हैं और अब विभिन्न सरकारें आए दिन लोक लुभावन घोषणाएं कर रही हैं। यहां पाठकों को जानकारी देता चलूं कि हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने लोक लुभावन घोषणाओं पर सख्ती दिखाते हुए मुफ्त की रेवड़ियां बांटने के बारे में जहां एक ओर मध्यप्रदेश व राजस्थान की सरकार से जवाब मांगा है तो चुनाव आयोग से भी इस संदर्भ में चार हफ्ते में जवाब देने को कहा गया है। जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में शीर्ष अदालत ने केन्द्र सरकार व भारतीय रिजर्व बैंक को भी इस संबंध में नोटिस जारी किया है। फ्रीबीज के नाम पर कोई फ्री बिजली दे रहा है तो कोई इंटरनेट, मोबाइल, लैपटॉप,स्कूटी, पानी। कोई फ्रीबीज के नाम पर आम आदमी के खातों में रूपए भेज रहा है तो कोई फ्री अनाज, चावल,आटा, तेल बांट रहा है। चुनाव नजदीक आते ही यह सिलसिला शुरू हो जाता है। इस संबंध में पाठकों को यह जानकारी भी देना चाहूंगा कि इस संबंध में केन्द्र ने भी यह कहा कि अगर ऐसी मुफ्त की योजनाएं जारी रही तो यह देश को भविष्य की आर्थिक आपदाओं की ओर ले जाएगी। उल्लेखनीय है कि भारतीय रिजर्व बैंक की वर्ष 2022 की एक रिपोर्ट में फ्रीबीज को ह्यएक लोक कल्याणकारी उपाय (जो निःशुल्क प्रदान किया जाता है)ह्न के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें यह कहा गया है कि फ्रीबीज स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे व्यापक एवं दीर्घकालिक लाभ प्रदान करने वाली सार्वजनिक/ मेरिट वस्तुओं से भिन्न हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि फ्रीबीज और लोककल्याण कारी योजनाओं में फर्क होता है। वास्तव में फ्रीबीज वे वस्तुएँ और सेवाएँ हैं जो उपयोगकताओं को बिना किसी शुल्क के मुफ़्त में प्रदान की जाती हैं। इनको आमतौर पर अल्पावधि में लक्षित आबादी को लाभान्वित करने के उद्देश्य से प्रदान किया जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि उन्हें प्रायः मतदाताओं को लुभाने या लोकलुभावन वादों के साथ रिश्वत देने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है।निःशुल्क लैपटॉप, टीवी, साइकिल, बिजली, पानी आदि उपलब्ध कराना फ्रीबीज के कुछ उदाहरण हैं। वहीं दूसरी ओर यदि हम कल्याणकारी योजनाओं की बात करें तो कल्याणकारी योजनाएँ सुविचारित योजनाएँ होती हैं जिनका उद्देश्य लक्षित आबादी को लाभान्वित करना और उनके जीवन स्तर के साथ संसाधनों तक पहुँच में सुधार करना होता है।निःसंदेह भारत जैसे देश में जहां करोड़ों लोगों को गरीबी से उबारना है वहां जन कल्याण की योजनाएं चलाने की जरूरत है, लेकिन जन कल्याण के काम करने और रेवड़ियां बांटने में बहुत अंतर होता है। लेकिन यह हमारे देश की विडंबना ही है कि आज इस अंतर को समझने की बजाए रेवड़ी संस्कृति को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है। यह बात हमें अपने जेहन में रखनी चाहिए कि वास्तव में गरीब व पिछड़े लोगों का उत्थान तभी किया जा सकता है, जब राज्य आर्थिक रूप से सक्षम बने रहेंगे। यहां प्रश्न यह उठता है कि यदि राजनीतिक दल अपने स्वार्थ और फायदों के लिए आम आदमी को यूं ही फ्रीबीज के नाम पर रेवड़ियां बांटते रहे तो क्या इससे उस राज्य में वित्तीय संकट नहीं पैदा होगा ? वास्तव में आज देश के विभिन्न राजनीतिक दलों को यह समझने की जरूरत है कि वित्तीय नियमों की अनदेखी करके विकास के कार्यों को कभी भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। यह बहुत ही संवेदनशील, दुखद है कि आज देश के अधिकतर राज्य कर्ज के घने व बड़े बोझ से डूबे हैं और वे आर्थिक रूप से भी पिछड़े हैं फिर भी मुफ्त की रेवड़ियां बांटने में जुटे हैं। वास्तव में सच तो यह है कि मुफ्त की संस्कृति राज्यों व देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा असर ही डालेगी।

माननीय सुप्रीम कोर्ट की फ्रीबीज पर चिंता जायज है क्यों कि इस मुफ्त की संस्कृति से राज्य लगातार पिछड़ रहे हैं।

बालिकाएं कब तक बेचारगी का जीवन जीयेगी?

– ललित गर्ग–

दुनियाभर में बालिकाओं की बेचारगी को दूर करने, सुरक्षित एवं सम्मानपूर्ण जीवन प्रदत्त करने, उनके सेहतमंद जीवन से लेकर शिक्षा और करियर के लिए मार्ग बनाने के उद्देश्य से हर साल 11 अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। इस दिन बालिकाओं को उनके अधिकारों, उनके सुरक्षित जीवन और सशक्तिकरण के प्रति जागरूक किया जाता है। भारत समेत कई देशों में बालिकाओं को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एक बच्ची के जन्म से लेकर परिवार में उसकी स्थिति, शिक्षा के अधिकार और करियर में बालिकाओं के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए जागरूकता फैलाना ही इस दिवस का उद्देश्य है। एक गैर सरकारी संगठन ने प्लान इंटरनेशनल प्रोजेक्ट के रूप में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने की शुरूआत की। इस एनजीओ ने एक अभियान चलाया, जिसका नाम ह्यक्योंकि मैं एक लड़की हूंह्न रखा गया। इस अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाने के लिए कनाडा सरकार से संपर्क किया गया। कनाडा सरकार ने एक आम सभा में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। 19 दिसंबर 2011 के दिन संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव को पारित किया और 11 अक्तूबर 2012 को पहली बार अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया और उस समय इसकी थीम ह्नबाल विवाह को समाप्त करनाह्न था। 2023 की थीम है ह्नउसके साथ: एक कुशल लड़की का बलह्न।

आज दुनिया में कन्याओं एवं बालिकाओं के समग्र विकास के साथ उनके जीवन को सुरक्षित करना ज्यादा जरूरी है, क्योंकि छोटी बालिकाओं पर हो रहे अन्याय, अत्याचारों की एक लंबी सूची रोज बन सकती है। न मालूम कितनी अबोध बालिकाएं, कब तक ऐसे जुल्मों का शिकार होती रहेंगी। कब तक अपनी मजबूरी का फायदा उठाने देती रहेंगी। सख्त कानूनों के बावजूद, देश में हर 15 मिनट पर एक बालिका यौन अपराध का शिकार होती है। निर्भया मामले में जनांदोलन के बाद सख्त कानून बनने के बावजूद देश में बलात्कार एवं बाल–दुष्कर्म मामलों में भारी बढ़ोतरी हुई है। सुझाव दिए गए हैं कि स्कूली पाठ्यक्रमों में यौन शिक्षा को शामिल किया जाए। लेकिन संस्कृति और परंपरा आदि का हवाला देकर इस तरह के विचारों को दरकिनार किया जाता रहा है। जबकि संवेदनशील तरीके से की गई यौन शिक्षा की व्यवस्था बच्चों को अपने शरीर और उसके साथ होने वाली हरकत को समझने और समय पर उससे बचने या विरोध करने में मददगार साबित हो सकती है।

इस खास दिन मनाने का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं यानी नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि महिलाएं भी देश और समाज के विकास में योगदान दे सकें। उन्हें सम्मान और अधिकार दिलाने के लिए बालिका दिवस के मौके पर कई देशों में कार्यक्रमों का आयोजन होता है। देश में लड़कियों के लिये ज्यादा समर्थन और नये मौके देने के लिये इस उत्सव की शुरूआत की गयी। बालिका शिशु के साथ भेद–भाव एक बड़ी समस्या है जो कई क्षेत्रों में फैला है जैसे शिक्षा में असमानता, पोषण, कानूनी अधिकार, चिकित्सीय देख–रेख, सुरक्षा, सम्मान, बाल विवाह आदि। सामाजिक लोगों के बीच उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिये और समाज में लड़कियों की स्थिति को बढ़ावा देने के लिये यह दिवस मनाया जाता है। ये बहुत जरूरी है कि विभिन्न प्रकार के समाजिक भेदभाव और शोषण को समाज से पूरी तरह से हटाया जाये जिसका हर रोज लड़कियाँ अपने जीवन में सामना करती हैं।

समाज में व्याप्त अत्यधिक गरीबी ने बालिकाओं के खिलाफ सामाजिक बुराई जैसे दहेज प्रथा को जन्म दिया है जिसने बालिकाओं की स्थिति को बद से बदतर (बहुत बुरा) बना दिया है। आमतौर पर माता–पिता सोचते है की लड़कियाँ केवल रुपये खर्च कराती है जिसके कारण वो लड़कियों को बहुत से तरीकों (कन्या भ्रूण हत्या, दहेज के लिये हत्या) जन्म से पहले या बाद में मार देते हैं, कन्याओं या महिलाओं को बचाने के लिये ये मुद्दे समाज से बहुत शीघ्र खत्म करने की आवश्यकता है। हम तालिबान–अफगानिस्तान आदि देशों में बच्चियों एवं महिलाओं पर हो रही क्रूरता, बर्बरता, शोषण की चचार्ओं में मशगूल दिखाई देते हैं लेकिन भारत में आए दिन नाबालिग बच्चियों से लेकर वृद्ध महिलाओं तक से होने वाली छेड़छाड़, बलात्कार, हिंसा की घटनाएं पर क्यों मौन साध लेते हैं? इस देश में जहां नवरात्र में कन्या पूजन किया जाता है, लोग कन्याओं को घर बुलाकर उनके पैर धोते हैं और उन्हें यथासंभव उपहार देकर देवी मां को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं वहीं इसी देश में बेटियों को गर्भ में ही मार दिये जाने एवं नारी अस्मिता एवं अस्तित्व को नौंचने की त्रासदी भी है। इन दोनों कृत्यों में कोई भी तो समानता नहीं बल्कि गजब का विरोधाभास दिखाई देता है।

दुनियाभर में बालिकाओं के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिये जागरूकता एवं आन्दोलनों के बावजूद बालिकाओं पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। हमारे देश में भी बालिकाओं की स्थिति, कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती घटनाएं, लड़कियों की तुलना में लड़कों की बढ़ती संख्या, तलाक के बढ़ते मामले, गांवों में बालिका की अशिक्षा, कुपोषण एवं शोषण, बालिकाओं की सुरक्षा, बालिकाओं के साथ होने वाली बलात्कार की घटनाएं, अश्लील हरकतें और विशेष रूप से उनके खिलाफ होने वाले अपराधों पर प्रभावी चर्चा एवं कठोर निर्णयों से एक सार्थक वातावरण का निर्माण किये जाने की अपेक्षा है। क्योंकि एक टीस–सी मन में उठती है कि आखिर बालिकाओं कब तक भोग की वस्तु बनी रहेगी? उसका जीवन कब तक खतरों से घिरा रहेगा? बलात्कार, छेड़खानी, भ्रूण हत्या और दहेज की धधकती आग में वह कब तक भस्म होती रहेगी? कब तक उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नौचा जाता रहेगा?

दरअसल छोटी लड़कियों या महिलाओं की स्थिति अनेक मुस्लिम और अफ्रीकी देशों में दयनीय है। जबकि अनेक मुस्लिम देशों में महिलाओं पर अत्याचार करने वालों के लिये सख्त सजा का प्रावधान है, अफगानिस्तान–तालिबान का अपवाद है। वहां के तालिबानी शासकों ने महिलाओं को लेकर जो फरमान जारी किए हैं वो महिला–विरोधी होने के साथ दिल को दहलाने वाले हैं। नये तालिबानी फरमानों के अनुसार महिलाएं आठ साल की उम्र के बाद पढ़ाई नहीं कर सकेंगी। आठ साल तक वे केवल कुरान ही पढ़ेंगी। 12 साल से बड़ी सभी लड़कियों और विधवाओं को जबरन तालिबानी लड़कों से निकाह करना पड़ेगा। बिना बुर्के या बिना अपने मर्द के साथ घर से बाहर निकलने वाली महिलाओं–बालिकाओं को गोली मार दी जाएगी। दूसरे मर्द से रिश्ते बनाने वाली बालिकाओं को कोडों से पीटा जाएगा। महिलाएं अपने घर की बालकनी में भी बाहर नहीं झांकेंगीं। इतने कठोर, क्रूर, बर्बर और अमानवीय कानून लागू हो जाने के बावजूद अफगानिस्तान की पढ़ी–लिखी और जागरूक महिलाएं बिना डरे सड़कों पर जगह–जगह प्रदर्शन कर रही हैं। दुनिया की बड़ी शक्तियों को इन बालिकाओं के स्वतंत्र अस्तित्व को बचाने के लिये आगे आना चाहिए।

तमाम जागरूकता एवं सरकारी प्रयासों के भारत में भी बालिकाओं की स्थिति में यथोचित बदलाव नहीं आया है। भारत में भी जब कुछ धर्म के ठेकेदार हिंसात्मक और आक्रामक तरीकों से बालिकाओं को सार्वजनिक जगहों पर नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं तो वे भी तालिबानी ही नजर आते हैं। विरोधाभासी बात यह है कि जो लोग बालिकाओं को संस्कारों की सीख देते हैं, उनमें से बहुत से लोग, धर्मगुरु, राजनेता एवं समाजसुधारक महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति कितनी कुत्सित मानसिकता का परिचय देते आए हैं, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। इनके चरित्र का दोहरापन जगजाहिर हो चुका है।

अन्न, भोजन की बबार्दी न करें

आज संपूर्ण विश्व की आबादी लगातार बढ़ रही है और बढ़ती हुई आबादी के बीच 29 सितंबर का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्यों कि बढ़ती आबादी को जीवित रहने के लिए भोजन की जरूरत होती है और आज के समय में भोजन को बहुत बड़े पैमाने पर बर्बाद या यूं कहें कि भोजन की बबार्दी की जाती है, तो इसमें कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। उल्लेखनीय है कि आज विश्व की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है और भूख से प्रभावित लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। लेकिन हम हर दिन बहुत सारा खाना(अन्न या भोजन)बर्बाद कर देते हैं। भारतीय संस्कृति में अन्न को भगवान का दर्जा दिया गया है लेकिन आज आधुनिकता व पाश्चात्य सभ्यता की दौड़ में हम इतने अंधे हो गए हैं कि थाली में भोजन छोड़ने को हम फैशन समझ बैठे हैं। बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य है कि जिस देश में अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णु: का घोष किया गया है, वहां हर व्यक्ति प्रतिवर्ष 50 किलो खाना बर्बाद कर देता है। दुनिया में हर साल तकरीबन 1.3 अरब टन आहार व्यर्थ हो रहा है, जिससे अन्यथा 1.6 अरब लोगों की भूख मिटाई जा सकती थी। आधुनिक समय के साथ थाली में जूठन छोड़ना हमारी आदत सी हो गया है, जबकि हमें जितनी जरूरत हो उतना ही भोजन अपनी थाली में लेना चाहिए। यह बहुत ही गलत है कि हम थाली में एकबार में ही बहुत सारा भोजन डाल लेते हैं और हम उसे खा नहीं पाते हैं। दरअसल, आज हम दिखावा, प्रदर्शन अधिक करते हैं। वास्तव में, भोजन की हानि और बबार्दी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए ही अंतर्राष्ट्रीय खाद्य हानि और बबार्दी जागरूकता दिवस (इंटरनेशनल डे आफ अवेयरनेस आप फूड लोस एंड वेस्ट) मनाया जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2019 में, 74वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 29 सितंबर को ह्यभोजन की हानि और बबार्दी में कमी पर अंतरराष्ट्रीय जागरूकता दिवसह्न के रूप में नामित किया था और वर्ष 2021 का विषय या थीम 'लोगों के लिए, ग्रह के लिए, भोजन की हानि और बबार्दी को रोकें' (स्टाप फूड लोस एंड वेस्ट, फोर द पीपल, फोर द प्लेनेट) रखी गई थी। जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2022 में खाद्य हानि और अपशिष्ट के बारे में जागरूकता का अंतर्राष्ट्रीय दिवस (आईडीएएफएलडब्ल्यू) तीसरी बार मनाया गया था और तब आईडीएएफएलडब्ल्यू ने सार्वजनिक और निजी संस्थाओं, खाद्य प्रणाली और उपभोक्ताओं से मिलकर काम करने का स्पष्ट आह्वान किया था। इस बार हम चौथी बार इसे मनाने जा रहे हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि खाद्य हानि और अपशिष्ट के बारे में जागरूकता का अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2023 की थीम 'खाद्य हानि और बबार्दी को कम करना: खाद्य प्रणालियों को बदलने के लिए कार्रवाई करना' रखी गई है। एक अनुमान के अनुसार दुनिया का 14 प्रतिशत भोजन फसल और खुदरा बिक्री के बीच नष्ट हो जाता है, और अनुमानित 17 प्रतिशत खुदरा और उपभोग स्तर पर बर्बाद हो जाता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण और संवेदनशील है कि खुदरा और उपभोक्ता स्तर पर प्रति व्यक्ति भोजन की बहुत अधिक बबार्दी होती है। खाद्य उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखलाओं में भी भोजन की हानि बहुत अधिक होती है, जिससे बढ़ती आबादी के लिए भुखमरी की समस्या खड़ी हो सकती है। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि भोजन की हानि और अपशिष्ट संबंधी समस्याएं ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी अहम् योगदान करती हैं, जिससे पर्यावरणीय क्षति भी होती है। बढ़ती आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा और उसका पोषण बहुत ही जरूरी है।भोजन की हानि और बबार्दी आज के इस आधुनिक युग में एक बड़ा ही व्यापक व महत्वपूर्ण मुद्दा है, जो खाद्य सुरक्षा, देश की अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती भी है।

वास्तव में मानव जो भी अन्न या भोजन इस धरती पर उत्पादित करता है, उसका अधिकतम उपयोग होना ही चाहिए, क्यों कि उत्पादन करना बहुत ही मुश्किल कार्य है और भारत में तो वैसे भी अन्न को देवता की संज्ञा दी गई है। वैश्विक खाद्य प्रणाली में कुल ऊर्जा खपत का लगभग 38% भोजन का उत्पादन करने के लिए उपयोग किया जाता है जो या तो नष्ट हो जाता है या बर्बाद हो जाता है। इसके अलावा, भोजन पैदा करने के लिए बीज, मिट्टी और किसानों के श्रम की आवश्यकता होती है, इसके परिवहन के लिए आवश्यक ईंधन का तो जिक्र ही नहीं किया जाता है। भोजन बर्बाद होने पर ये सभी संसाधन नष्ट हो जाते हैं।

प्रकृति और मनुष्य के बीच है शाश्वत रिश्ता।

संस्कृत में कहा गया है –'शाश्वतम्, प्रकृति–मानव–सङ्गतम्,सङ्गतं खलु शाश्वतम्। तत्त्व–सर्वं धारकं, सत्त्व–पालन–कारकं, वारि–वायु–व्योम–वह्नि–ज्या–गतम्। शाश्वतम्, प्रकृति–मानव–सङ्गतम्।। अर्थात इसका भावार्थ यह है कि प्रकृति और मनुष्य के बीच का संबंध शाश्वत है।रिश्ता शाश्वत है। जल, वायु, आकाश के सभी तत्व, अग्नि और पृथ्वी वास्तव में धारक हैं और जीवों के पालनहार हैं। सच तो यह है कि प्रकृति हमें पत्र, फूल, फल, छाया, जड़, बल्क, लकड़ी और जलाऊ लकड़ी, सुगंध, राख, गुठली और अंकुर प्रदान करके हमारी इच्छाओं को पूरा करते हैं। इसीलिए संस्कृत में कहा गया है कि – '[illegible] मूलवल्कलदारुभिः।गन्धनिर्यासभस्मास्थितौस्मैः कामान् वितन्वते।।' हाल ही में 3 अक्टूबर को हम सभी ने 'विश्व प्रकृति दिवस' मनाया। प्रकृति का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है और प्रकृति के महत्व के बारे में आम लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से ही इस दिवस को मनाया जाता है। वास्तव में , प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा सम्बन्ध है। प्रकृति के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं कर सकता है। प्रकृति है तो मनुष्य व जीव जंतुओं का अस्तित्व इस धरती पर है। प्रकृति नहीं है तो कुछ भी नहीं है। जानकारी देना चाहूंगा कि प्रकृति दो शब्दों से मिलकर बनी है – 'प्र' और 'कृति।' 'प्र' अर्थात प्रकृष्टि (श्रेष्ठ/उत्तम) और 'कृति' का अर्थ है रचना। ईश्वर की श्रेष्ठ रचना अर्थात सृष्टि।प्रकृति से सृष्टि का बोध होता है। प्रकृति अर्थात वह मूलत्व जिसका परिणाम जगत है। प्रकृति ने मानव के लिए जीवनदायक तत्वों को उत्पन्न किया है।सच तो यह है कि प्रकृति मनुष्य को विरासत में बहुत सी चीजें, संसाधन(रिसोर्स) प्रदान करती है लेकिन हम प्रकृति के संरक्षण की बजाय उसे नुकसान अधिक पहुंचाते हैं , सच तो यह है कि हम प्रकृति के प्रति अपने योगदान, अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझते हैं और प्रकृति का लगातार दोहन करने में लगे रहते हैं। लेकिन हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि हर दिन हमारे हर किसी के छोटे–छोटे योगदान से ही, हम अपने ग्रह, अपनी पृथ्वी को बचा सकते हैं, इसका संरक्षण कर सकते हैं और उस प्रकृति को फिर से प्राप्त कर सकते हैं, जो कि हमें विरासत में मिली है। प्रकृति और मनुष्य वास्तव में दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति में हर किसी का अपना महत्व है। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के समान बताया गया है। संस्कृत में कहा गया है कि 'पश्यैतान् महाभागान् पराबैंकान्तजीवितान्। वातवर्षातपहिमान् सहन्तरे वारयन्ति नः।।' यानी कि पेड़ इतने महान हैं कि वे केवल दान के लिए जीते हैं। वे तूफान, बारिश और ठंड को अपने आप सहन करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में तो पेड़–पौधों को पूजने तक की परंपरा रही है, इसीलिए संस्कृत में बड़े ही सुंदर शब्दों में यह भी कहा गया है कि –'दश कूप समा वापी, दशवापी समोह्नद्रः।दशह्नद समः पुत्रों, दशपुत्रो समो द्रमुः।। यानी इसका मतलब यह है कि एक पेड़ दस कुओं के बराबर,एक तालाब दस सीढ़ी के कुएं के बराबर, एक बेटा दस तालाब के बराबर, और एक पेड़ दस बेटों के बराबर होता है। इसलिए प्रकृति की रक्षा करना हम सभी का परम दायित्व है। प्रकृति उदार है लेकिन मनुष्य प्रकृति के प्रति कभी अपनी उदारता नहीं दिखाता। वास्तव में, प्रकृति और मनुष्य का संबंध आश्रय और आश्रित का है। प्रकृति संपूर्ण पृथ्वी ग्रह को अपने भीतर संरक्षण देती है। ह्यप्रकृतिह्न किसी व्यक्ति, समाज, राज्य, या देश, की निजी संपत्ति नहीं होती। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि समस्त प्राणियों के जीवन की एकमात्र जननी प्रकृति ही है।हमें जीवन देकर इसे सुचारु रूप से चलाने वाली प्रकृति ही हमारी जननी है और इस प्रकृति को जीवन देकर सुचारू रूप से चलाने वाली वह परम शक्ति ही विधाता, ईश्वर, या सर्वोपरि सत्ता है। बहरहाल, प्रकृति की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह अपनी चीजों का उपभोग कभी भी स्वयं नहीं करती। जैसे–नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती है, पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते हैं, फूल अपनी खुशबू पूरे वातावरण में फैला देते हैं। इसका मतलब यह है कि प्रकृति किसी के साथ भेदभाव या पक्षपात नहीं करती, लेकिन मनुष्य जब प्रकृति से अनावश्यक खिलवाड़ करता है तब उसे गुस्सा आता है, जिसे वह समय–समय पर सूखा, बाढ़, सैलाब, तूफान के रूप में व्यक्त करते हुए मनुष्य को सचेत करती है। गलत नहीं है कि वर्तमान समय में व्यक्ति अतृप्त लालसाओं का बढ़ते जाना उसे अपने ही अस्तित्व की समाप्ति की ओर लेकर जा रहा है। यही कारण है जीवन के संतुलन के लिए प्रकृति और मनुष्य के बीच संबंध चरमरा गया है। यह असंतुलन मनुष्य की लालसावादी मनोवृति से उपजा है। अपनी धरती को हरा भरा, सुंदर व स्वच्छ रखना हम सभी का परम और नैतिक दायित्व है। जानकारी देना चाहूंगा कि आज के दिन जलवायु परिवर्तन, उसकी चुनौतियों व प्रकृति के महत्व और संरक्षण के बारे में आम लोगों में जागरूकता बढ़ाई जाती है। वास्तव में,यह दिवस जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाली चुनौतियों व प्रकृति की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य दे मनाया जाता है। यह दिवस पहली बार 3 अक्टूबर 2010 को मनाया गया था। यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि विश्व प्रकृति दिवस मनाने की शुरूआत यूएस के विश्व प्रकृति संगठन(वर्ल्ड नेचर आगेर्नाइजेशन) द्वारा की गयी थी। जानकारी देना चाहूंगा कि विश्व प्रकृति संगठन एक अंतर सरकारी संगठन है, यह संगठन पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करता है। इसका मुख्यालय यूएस में है। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की प्रजातियों यथा जीव–जंतुओं के साथ ही वनस्पतियां विलुप्त होती चली जा रही हैं। विलुप्त हो रहे जीव–जंतु व वनस्पतियों की रक्षा का संकल्प लेना ही विश्व प्रकृति दिवस का मूल व अहम् उद्देश्य है। आज विश्व की लगातार बढ़ती जनसँख्या, बढ़ता प्रदूषण जिसमें वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, प्लास्टिक व पालीथीन प्रदूषण शामिल किया जा सकता है, मानवजाति के लिए बहुत ही चिंता का विषय है। प्रतिवर्ष धरती बढ़ता तापमान, नष्ट होता पर्यावरण, ओजोन परत का लगातार क्षरण, आज मनुष्य के लिए घोर चिंता के विषय बन गए है और ये हमारी धरती को लगातार विनाश की ओर धकेल रहे हैं। धरती के लगातार बढ़ते तापमान के कारण आज बहुत से जीव जंतु, वनस्पतियां जहां विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई हैं, वहीं ग्लेशियर पिघल रहे हैं। मनुष्य की उपभोगवादी प्रवृति से निर्मित कार्बन उत्सर्जन है जिसने ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति को बढ़ावा दिया है।आज कभी भूस्खलन हो रहे हैं तो कहीं पर बाढ़ व कहीं पर अनावृष्टि देखने को मिल रही है। कहना गलत नहीं होगा कि ये सब प्राकृतिक असंतुलन के कारण हो रहा है। इसलिए प्रकृति की सुरक्षा करना बेहद जरूरी है। सच तो यह है कि आज हमें अपने आपको बदलने की जरूरत है, प्रकृति को नहीं। हम सबके जीवन का आधार हमारी प्रकृति को सुरक्षित रखना हम सबके हाथ में है।

मां की हत्या में महिला समेत चार को आजीवन कारावास , एक लाख 26 हजार रुपये का जुमार्ना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मां की हत्या करने वाली समेत तीन आरोपियों को आजीवन कारावास व चार आरोपियों को एक लाख 26 हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया है।

सोमवार को सूबे के पुलिस महानिदेशक के निर्देश पर आपरेशन कन्विक्शन के तहत न्यायालय में लम्बित मामलों की पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने के एसपी वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर थानाध्यक्ष बरगढ अंजनी कुमार सिंह व पैरोकार धनेश कुमार मिश्रा की पैरवी से मानीटरिंग सेल प्रभारी जयप्रकाश उपाध्याय की पैरवी से अपर जिला शासकीय अधिवक्ता अजय कुमार सिंह की प्रभावी बहस के नतीजतन न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने हत्या, सबूत नष्ट करने के मामले में मिठाईलाल पुत्र बसंतलाल चमान निवासी भानपुर को तीस हजार रुपये जुमार्ना, सुरेश जाटव पुत्र मचले थाना राजेपुर जिला फरुर्खाबाद को तीस हजार व अशोक उर्फ पिन्टू पुत्र मेघनाथ जाटव को 35 हजार, मिल्लू देवी पत्नी सुरेश जाटव को 31 हजार रुपये के जुमार्ना व आजीवन कारावास दंडित किया है।

ज्ञात है कि वादिया मिल्लू देवी ने पांच जनवरी 2011 को पहाडी थाने में रिपोर्ट लिखाई कि चार जनवरी को गांव के बेलन पुत्र चुनकू अवस्थी, विनय पुत्र राज आरख, गंगा पुत्र भोंडा, वीरेन्द्र पुत्र दीनबन्धु ने मां मीरा देवी से बात किया। थोडी देर बाद देखा कि मां का शव खेत में पडा है। पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्जकर इन आरोपियों को फर्जी पाया। मृतका की पुत्री मिल्लू देवी समेत तीन और आरोपियों पर हत्या का आरोप पत्र चार मार्च 2012 को अदालत में दाखिल किया था।

राजापुर पुलिस ने दबोचे सात जुआरी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा की अगुवाई में दरोगा कन्हैया बक्स सिंह की टीम ने रामकिशोर सोनकर पुत्र भुण्डा निवासी गयागंज भंभेट, छोटू सोनकर पुत्र भुण्डा निवासी गइला रोड़, प्रेमलाल पुत्र अमृतलाल निवासी माधवगंज, संजय सोनकर पुत्र नानबाबू निवासी छीबो रोड़, सूरज सोनकर पुत्र कल्लू निवासी सीपीएस स्कूल के सामने, धर्मेन्द्र सोनकर पुत्र बद्री प्रसाद निवासी गइला रोड व दयालु पुत्र संता निवासी गइला रोड़ को ताश के पत्तों से हारजीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते रंगेहाथ गिरफ्तार किया। जुआरियों के कब्जे से मालफड़ से ताश के 52 पत्ते व चार हजार रुपये तथा जामा तलाशी से 1070 रुपये बरामद किये। जुआरियों के खिलाफ थाने में जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा कन्हैया बक्स सिंह, दीवान मनोज, सिपाही मनोज कुमार, अजय वर्मा व रोहित कुशवाहा शामिल रहे।

राजू यादव को मिला सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। निपुण भारत के तहत प्रत्येक स्कूल में एक सर्वश्रेष्ठ छात्र का चयन कर नीति आयोग के निर्देश पर सम्मान समारोह करना है। निर्देश के क्रम में प्राथमिक विद्यालय मुस्लिमपुरवा में विद्यालय के होनहार छात्र राजू यादव का चयन कर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान प्रधानाध्यापक अभिषेक केशरवानी ने तिलक कर माल्यार्पण किया। मैडल व ट्राफी बतौर सम्मान दिया।

सोमवार को संचालन कर रहे शिक्षामित्र सर्वेश यादव ने कहा कि विभाग के ऐसे कार्यक्रमों से छात्रों का मनोबल बढ़ेगा। बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होगा। इस मौके पर शत्रुघन सोनी, दीपशिखा सिंह, अनीता सिंह, सरीफुन निशा, शारदा प्रसाद यादव, शनि, मेहंदी हसन, खुशी, अनुराधा आदि छात्र-छात्राये मौजूद रहीं।

दम्पति के विवाद को पुलिस ने सुलझाया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने को जारी प्रयास में पुलिस कार्यालय स्थित परिवार परामर्श केन्द्र ने दम्पति के आपसी विवाद को समाप्त कराकर परिवार को टूटने से बचाया।

सोमवार को राजापुर थाने के छीबों गांव की श्रीमती सीता देवी पुत्री भवानीदीन ने पति रामचरण पुत्र सुकुरु निवासी छीबो व ससुरालीजनों के खिलाफ लड़ाई-झगड़ा, मारपीट कर घर से निकाल देने बाबत पुलिस अधीक्षक को पत्र सौंपा। पुलिस अधीक्षक ने पत्र निस्तारण को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र को भेजा।

प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र निरीक्षक वीर प्रताप सिंह ने शिकायतों को विस्तार से सुन-समझकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया। दोनों पक्षों को भविष्य में आपस में विवाद न करने, पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। आपसी सुलह होने पर दोनों पक्षों ने तालमेल से रहने का भरोसा दिया। टीम में प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र निरीक्षक वीर प्रताप सिंह व महिला सिपाही सुरुचि चैधरी शामिल रहीं।

बीएसएनएल नेटवर्क ध्वस्त, उपभोक्ता परेशान

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। कहने को तो मऊ जिले की प्रमुख तहसील है, लेकिन सुविधाओं के नाम पर तहसील क्षेत्र की जनता आज भी परेशान है।

सोमवार को कुछ ऐसा ही हाल भारत संचार निगम लि का देखने को मिला। भारत सरकार का डिजिटल इंडिया बनाने का सपना है। नगर में बीएसएनएल का नेटवर्क ध्वस्त रहता है। इस सपने को पूरा करने में सबसे बडी बाधा नेटवर्क है। नगर में बीएसएनएल की फोरजी नेटवर्क न मिलने से कई आनलाइन कार्य प्रभावित हो रहे हैं। नेटवर्क सेवा कई महीनों से बंद है। ये समस्या महीनों से चली आ रही है। इस समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो पा रहा। इससे उपभोक्ता परेशान हैं। क्षेत्र के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रफुल्ल चंद्र त्रिपाठी, बार एसोसिएशन मऊ के अध्यक्ष कुंवर बृजेश सिंह, विष्णु देव त्रिपाठी, राहुल श्रीवास्तव, सुदेश श्रीवास्तव, नरेंद्र खरे, अमन सिंह बघेल, राजू अग्रहरी, प्रशांत तिवारी, विपुल पांडेय, बेटू वाजपेई, प्रकाश शुक्ला, अजय राज त्रिपाठी समेत क्षेत्र के तमाम लोगों ने बीएसएनएल नेटवर्क सही करवाने की मांग की है

दहेज हत्या में मृतका के पति को आठ साल की सजा, सास-ससुर को भी हुई सात-सात साल की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सात माह की दुधमुही बेटी की मां की दहेज हत्या में फास्ट ट्रैक कोर्ट ने दोषसिद्ध होने पर मृतका के पति को आठ वर्ष की सजा सुनाई है। मृतका के सास-ससुर को भी सात-सात साल की सजा सुनाई है।

सोमवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी गोपाल दास ने बताया कि बांदा जिले के कमासिन थाने के ममसी गांव के रामनारायण पुत्र कोदा ने पहाड़ी थाने में 21 जून 2015 को रिपोर्ट लिखाई थी कि उसने अपनी बेटी अभिलाषा यादव का विवाह पहाड़ी थाने के नहरा गांव के दिनेश पुत्र सत्यनारायण के साथ वर्ष 2013 में किया था। शादी के बाद से ही ससुरालीजन दहेज को अभिलाषा का उत्पीड़न करते थे। कुछ दिन बाद अभिलाषा ने एक बेटी को जन्म दिया, किंतु ससुरालीजनों का उत्पीड़न जारी रहा। 19 जून 2015 की रात ससुरालीजनों ने अभिलाषा को लाठी-डंडों से पीटकर मार डाला और फांसी पर टांग दिया। सूचना पर नहरा पहुंचा तो पूरे घटना क्रम की जानकारी हुई। उसने पहाड़ी थाने में तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। बचाव व अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद त्वरित न्यायालय के अपर जिला जज संजय कुमार ने दोषसिद्ध होने पर मृतका के पति दिनेश कुमार को आठ वर्ष, मृतका के ससुर सत्यनारायण व सास रेखा देवी को सात-सात वर्ष की सजा सुनाई। प्रत्येक को सात हजार के जुमार्ना से दंडित किया।

रेडक्रास के गोद लिए क्षय रोगियों को डीएम ने बांटी निक्षय किट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द की अध्यक्षता में रेडक्रॉस सोसायटी ने गोद लिए सौ नये क्षय रोगियों में से आज पचास क्षय रोगियों को कलेक्ट्रेट सभागार में निक्षय पोषण किट बांटी। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रधानमंत्री के संकल्प 2025 तक टीवी मुक्त भारत का सपना सभी को साकार करना है।

सोमवार को जिलाधिकारी ने क्षय रोगियों को पोषण किट देते हुए कहा कि रेडक्रास सोसाइटी ने पहले भी जन उपयोगी कार्य किये हैं। इन सभी रोगियों के लिए लाभ प्रद होगा। क्षय रोगियों से कहा कि किट में मिले पोषण आहार का नियमित प्रयोग करें। दवा और भी कारगर सिद्ध होगी। इम्यूनिटी पावर भी मजबूत होगी। रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव केशव शिवहरे से कहा कि अभियान में जिले के पेट्रोल पंप डीलर, गैस एजेंसी डीलर, शिक्षकों, पुलिस विभाग, आपूर्ति विभाग एवं बैंको को भी जोड़ें। ज्यादा से ज्यादा क्षय रोगियों को गोद लेने को प्रेरित करें। गोद लेने वाले जिले के सम्भ्रांत नागरिक डॉ सुधीर अग्रवाल, डॉ शशांक अग्रवाल, डॉ सीताराम गुप्ता, अजय अग्रवाल, विवेक अग्रवाल, डॉ सीएन सिंह, देवेश जैन, संजय अग्रवाल एड को रेडक्रॉस सोसायटी की ओर से प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। रेडक्रॉस सोसायटी के कार्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

सीडीओ अमृतपाल कौर ने कहा कि ऐसे पुनीत कार्यों में आमजनता की सहभागिता होनी चाहिए। सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने कहा कि जिले में इस समय 1358 क्षय रोगी नोटीफाइड हैं, जिसमें 155 रोगियों को रेडक्रॉस सोसायटी ने गोद लिया है। शेष लोगों को शीघ्र ही गोद लिया जायेगा। रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव केशव शिवहरे ने कहा कि सोसायटी सदस्यों के सहयोग से सौ क्षय रोगियों को गोद लिया था, जो स्वस्थ होकर जीवनयापन कर रहे हैं। वर्तमान में पुनः जिले से एक सैकड़ा क्षय रोगियों को गोद लिया है। इस मौके पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एआईजीआर रामसुंदर यादव, डीआईओएस संजय मिश्रा, बीएसए लव प्रकाश, एलडीएम तुलसी राम, डीटीओ डॉ दया शंकर, डॉ मुकेश पाण्डे, ज्ञानचंद्र शुक्ला, विवेक मिश्र, मुन्ना प्रसाद, रामप्रताप, अम्बरिष कुमार, जिला सूचना अधिकारी सुरेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे।

परदवां-मऊ संपर्क मार्ग ध्वस्त होने से लोग परेशान

ग्रामीणों ने उठाई सडक बनवाने की मांग

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। पूरब पताई मऊ संपर्क मार्ग के ध्वस्त होने से राहगीरों को आवागमन में भारी दिक्कतें हो रही हैं। क्षेत्र के युवा समाजसेवी ठा अमन सिंह बघेल ने कहा कि परदवां से मऊ तक रोड कई वर्षों से ध्वस्त पडी है।

सोमवार को समाजसेवी ने बताया कि पूरब पताई से मऊ जाने में मुश्किल से दस मिनट लगते थे। उबड़-खाबड़ रोड के चलते मऊ पहुंचने में एक घंटे से ज्यादा लगता है। सबसे ज्यादा दिक्कतें मरीजों को लाने में तीमारदारों को होती है। गांव का कोई व्यक्ति या महिला बीमार पड़ जाये तो इस खराब रास्ते को सकुशल पार करने को मन्नत मांगनी पड़ती है।

इस मार्ग से दर्जन भर से अधिक गांवों के लोगों का प्रतिदिन मऊ आवागमन होता है। खराब रास्ता होने से मजबूरी में लोग आवागमन करते हैं। रोड खराब होने से आए दिन लोग चोटहिल भी होते हैं। इसी मार्ग से बच्चों का विद्यालय आवागमन होता है। सड़क की बदहाली व जलभराव से कई वर्षों से जारी है। पूरब पताई-मऊ संपर्क मार्ग में जगह-जगह गड्ढों में पानी भरा हुआ है। इससे राहगीरों को आवागमन में रोज मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोगों ने सरकार से मांग की है कि जल्द सड़क बनवाई जाए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को बिना किसी अवरोध के राष्ट्रीय राजमार्ग मऊ तक आवागमन सुनिश्चित हो सके। समाजसेवी ठा अमन सिंह बघेल ने सरकार से मांग किया कि सड़क को जल्द बनवाया जाए, ताकि आवागमन सुलभ हो सके। ग्रामीण रवि सिंह, अर्जुन सिंह, नरेश बहादुर सिंह, श्रेयांश श्रीवास्तव समेत क्षेत्र के कई लोगों ने मार्ग बनवाने की मांग की है।

इसी रास्ते पर है प्राचीन ऋषियन आश्रम

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। इसी रास्ते पर प्राचीन ऋषियन आश्रम व बरियारी कला हनुमान मंदिर भी है। प्राचीन ऐतिहासिक महत्व के स्थल ऋषियन आश्रम, जो पुरातत्व विभाग से संरक्षित है। किवदंतियों में इस स्थल को भगवान राम से भी जोड़ा जाता है। चंदेल कालीन ऐतिहासिक महत्व के अवशेष भी यहां हैं। आसपास के सैकड़ों लोग प्रत्येक सोमवार को ऋषियन आश्रम जाते हैं। प्रत्येक शनिवार व मंगलवार को सैकड़ों श्रद्धालु बरियारी कला हनुमान मंदिर भी जाते हैं। ऐसे में उबड़-खाबड़ रास्ता होने से लोगों को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। रास्ता बन जाने से पर्यटन विकास होगा, जिससे स्थानीय लोगों की आय के स्रोत बढेंगे। क्षेत्र के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रफुल्ल चंद्र त्रिपाठी, बार एसोसिएशन मऊ के अध्यक्ष कुंवर बृजेश सिंह, विष्णु देव त्रिपाठी, राहुल श्रीवास्तव, सुदेश श्रीवास्तव, नरेंद्र खरे, राजू अग्रहरी, प्रशांत तिवारी, विपुल पांडेय, बेटू वाजपेई, प्रकाश शुक्ला, अजय राज त्रिपाठी समेत क्षेत्र के तमाम लोगों ने परदवां-मऊ सम्पर्क मार्ग बनवाने की मांग की है।

नौकरी सरकार की, काम जमीनों की दलाली

जमीनों की दलाली के गिरोह का खुलासा- टिकरिया की 442 नम्बर पर कितने साल में होगा दाखिल-खारिज?- सूरजदीन के सभी मेडिकल हैं फर्जी

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर तहसील में कार्यरत लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता का भू-माफियाओं के प्रति लचीला रुख होने से लोग खासे परेशान हैं। भू-माफियाओं से मिलीभगत कर इन दिनों वह नौकरी सरकार की कर रहा है, लेकिन काम जमीनों की दलाली का करता है।

सोमवार को लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता के जमीनों की दलाली के गिरोह का खुलासा हुआ। बताया गया कि टिकरिया की जमीन नम्बर 442 पर कई आदिवासियों ने सीधेतौर पर आपत्ति जताई है। आदिवासियों ने कहा कि जमीन नम्बर 442 पर उनकी जमीने हैं। इसके बाद भी भू-माफियाओं ने दीवार खडी कर ली है। आदिवासियों के आपत्ति करने पर अब देखते हैं कि इस जमीन का दाखिल-खारिज कितने साल में तहसील प्रशासन करता है। ढाई बीघा अमचुर नेरुआ की जमीन के दाखिल-खारिज में तो तहसील प्रशासन को भारी आपत्ति है। तहसील प्रशासन ने प्रधान से दबाव डालकर आपत्ति कराई है। ग्रामीणों की माने तो लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता के तहसील क्षेत्र में जमीनों के कारोबार में लिप्त है। वह इटवा-डुडैला के सूरजदीन व टिकरिया के रमाकान्त के साथ मिलकर पूंजीपतियों को जमीनें खरीदवाने के कारोबार में लम्बे समय से जुटा है।

ग्रामीणों ने बताया कि सूरजदीन ने इटवा-डुडैला गांव में वेटनरी अस्पताल के पीछे पांच बीघा गांव समाज की जमीन पर एक बीघा में पट्टा कराकर पूरी जमीन पर कब्जा कर लिया है। सडक किनारे वृक्षारोपण के नाम पर पांच बीघा जमीन पर उसका कब्जा है। उसने अपने सजातीय कलुआ, रामदास की खेती योग्य जमीनों पर कब्जा कर रखा है। राजा आरख के आवासीय पट्टे पर भी उसका कब्जा है। क्षेत्र के ब्राम्हणों को एससी-एसटी में फंसाने की धमकी देकर ब्राम्हणों की जमीन पर भी उसके कब्जे हैं। लेखपाल के सहयोग से उसने पं रामनिहोर पुत्र चुनबाद प्रसाद की जमीन पर भी कब्जा कर लिया है। इसका मामला चल रहा है। आदिवासियों के आवासों की आवंटित जमीन के नाम पर खुलकर वसूली करता है। ग्रामीणों ने ये भी बताया कि वह दस्यु संरक्षण में मप्र में जेल भी जा चुका है। डकैतों का लम्बे समय तक संरक्षणदाता भी रहा है। क्षेत्र में उसकी दबंगई के चलते लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता ने उसे अपना कारखास बना रखा है। जमीनों की खरीद-फरोख्त सूरजदीन से करवाता है। सूरजदीन के नाम से फर्जी मेडिकल प्रमाण पत्र आसानी से बनवाकर बडे व्यापारियों को मोटी रकम में जमीन बेंचता है। ग्रामीणों की माने तो लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता का इसके घर आना-जाना है।

लेखपाल जितेन्द्र गुप्ता ने अपने रिटायर्ड चाचा अवधेश गुप्ता के नाम पर भी तहसील मानिकपुर में खसरा 995 में एक आदिवासी से जमीन खरीदवाई है। मानिकपुर तहसील के पूर्व लेखपाल अशोक वर्मा, जो वर्तमान में कर्वी तहसील में तैनात हैं। इसमें भी किहुनिया न्याय पंचायत में एक आदिवासी की जमीन खरीदी है। इसने बिना अधिकारियों के अनुमति से जमीन ली है।

इन सब मामलों की बारीकी से जांच हो तो अधिकारियों का भ्रष्टाचार सामने आ जायेगा। दलितों व आदिवासियों की जमीन की अनुमति लेने में एडीएम कार्यालय में भी भारी लूट-खसोट मची है। अब तक लेखपाल का गिरोह तकरीबन पांच पूंजीपतियों को दलितों की जमीन खरीदवा चुका है। सभी में सूरजदीन का मेडिकल लगता है।

रमाकान्त भी है गिरोह का सदस्य

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर तहसील के टिकरिया गांव के रमाकान्त लम्बे समय से बैंकों के अधिकारियों से मिलीभगत कर गरीब आदिवासियों के लोन भारी कमीशन लेकर करवा रहा है। टिकरिया, मनगवां, डोंडा आदि गांवों में उसकी दलाली के चर्चे हैं। ग्रामीणों की मानें तो जब भी उसे पैसों की कमी होती है तो वह आदिवासियों की बस्ती में जाकर वरासत, बैंक के काम, अस्पताल के काम आदि के नाम पर वसूली कर जमकर शराब पीता है। जितने भी लोग क्षेत्र में बैंक का लोन जमा करने को परेशान हैं, आधे से ज्यादा लोगों से उसने दलाली खाई है। जमीनों की दलाली से उसने अच्छी खासी गांव में हवेली बनवा ली है। लोगों ने कहा कि जब वह कोई काम नहीं करता तो उसकी हवेली कैसे खडी हो गई।

सीएम के कडे निदेर्श: डीएम ने एसडीएम-तहसीलदारों को चेताया, जल्द निपटायें भूमि संबंधी मामले

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना व राजस्व वादों को विशेष अभियान चलाकर निस्तारित करने के निर्देश दिये।

सोमवार को जिलाधिकारी कक्ष में हुई बैठक में जिलाधिकारी ने कृषक दुर्घटना, सड़क दुर्घटना, झटका व सदमा दुर्घटना, नदी दुर्घटना, पेड़ से गिरने की दुर्घटना, खेत में सिंचाई से ठंड लगने से मृत्यु, पागल कुत्ते की काटने से मृत्यु आदि मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना पर चर्चा की। कहा कि मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के तहत लंबित दावा बाबत सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि लंबित दावों का स्थलीय निरीक्षण कर समितियों को फाइल भेजकर पुनः सत्यापित कराकर जल्द निस्तारण करायें। संबंधित लेखपालों से कहा कि जो बटाईदार हैं, क्लेम में जांच आख्या भी दें। लेखपाल गांवों में जाकर सत्यापन करेंगे, तभी हो पाएगा। जल्द जो जांच आख्या आती है, रिपोर्ट अनुसार निस्तारण करायें।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने समीक्षा कर कडे आदेश दिये हैं कि देवरिया, कानपुर देहात, कौशांबी में भूमि बाबत घटना हुई है, पुनः न होने पाए। सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि शासन की मंशानुसार कार्यवाही करें। उप जिलाधिकारियों व लेखपाल तथा सभी राजस्व कर्मियों से कहा कि समय से निस्तारण करायें। संबंधित उप जिलाधिकारी व थाना प्रभारी भूमि संबंधी विवाद में मौके पर जाकर निस्तारण करायें, ताकि कोई अप्रिय घटना न हो सके। सभी तहसीलों में भूमि विवाद सुलझायें। पुलिस व प्रशासन से मिलकर वादों का निस्तारण जल्द करायें। धारा 24 के लंबित मामलों का निस्तारण जल्द हो। तीन माह के बाद जितने दावे हैं, उसकी सूची की समीक्षा करें। धारा 33 बाबत कहा कि नायब तहसीलदार व तहसीलदार विवाद का निस्तारण करायें। धारा 34 के बाबत कहा कि मऊ व राजापुर में लंबित मामलों का निस्तारण करायें। कोई भी मामला लंबित नहीं रहना चाहिए। वकीलों से तालमेल कर छोटी तारीख देकर निस्तारण करायें। मामलों में देरी में स्टाफ कर्मियों का हाथ होता है।

कांग्रेस ने काशीराम को दी श्रद्धांजलि, प्रदेश अध्यक्ष के बरी न होने पर करेगी आन्दोलन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कुशल सिंह पटेल की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्यालय में काशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर कांग्रेसियों ने श्रद्धांजलि दी।

सोमवार को कांग्रेस कार्यालय में रंजनाबराती लाल पांडे ने काशीराम को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने समाज के निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति में नई क्रांति लाने का काम किया। समाज में उनके योगदान को कभी बुलाया नहीं जा सकता, उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। कांग्रेस ने हमेशा गरीबों के उत्थान को काम किया, आगे भी करेगी। इसके बाद राज्यपाल संबोधित ज्ञापन तहसीलदार कर्वी को सौंपा। कांग्रेस अध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने कहा कि काशी में गणेश प्रतिमा विसर्जन में हुए लाठीचार्ज के विरोध में पांच अक्टूबर 2015 को अन्याय प्रतिकार यात्रा निकाली गई थी। प्रशासन ने 82 लोगों के खिलाफ मामला दर्जकर किया था। हाल में 81 लोगों को बरी कर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को बरी नहीं किया, इसमें राजनीतिक साजिश दिख रही है। जिला कांग्रेस कमेटी ने मांग किया कि प्रदेश अध्यक्ष को भी बरी किया जाए।

उन्होंने चेताया कि कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के बरी न होने पर सड़कों पर उतरकर आंदोलन करेगी। इस मौके पर अवधेश करवरिया, कालीचरण राजपूत, तीरथ सिंह, राजनारायण निषाद, कुलदीप मिश्रा, कृष्णराज सिंह, मानवेंद्र पटेल, राजेश पटेल, आशीष मिश्रा, सलमान सिद्दीकी, राजेश निषाद, प्रेमचंद, शिवचंद आदि मौजूद रहे।

नहरों की सफाई कर टेल तक पहुंचायें पानी: शैलेन्द्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाकियू की मासिक किसान पंचायत तहसील कर्वी व ब्लॉक पहाड़ी में हुई। तहसील अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह की अगुवाई में सैकड़ों किसानों ने किसान पंचायत में बताया कि रबी फसल बुवाई दौरान अभी तक नहरों की सिल्ट सफाई नही हुई।

सोमवार को कर्वी तहसील में किसान पंचायत में तहसील अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि अविलम्ब सिल्ट सफाई कराते हुए नहरों में टेल तक पानी पहुंचाया जाए, ताकि किसान समय से पलेवा कर रबी की बुवाई कर सकें। ब्लॉक अध्यक्ष जसवंत सिंह ने कहा कि अभी किसानों को अन्ना प्रथा से निजात नही मिली। बछरन गांव में अन्ना जानवरों का आतंक इस कदर है कि किसान रात भर जान जोखिम में डालकर खेतो की रखवाली करते हैं। ब्लॉक अध्यक्ष नरेश सिंह ने कहा कि समितियों में खाद भेजी जाये। बीज गोदामों में अच्छे बीज नहीं हैं। किसानों को बाजार से महंगे बीज खरीदना पड रहा है। जिला मीडिया प्रभारी देवेन्द्र सिंह ने बताया कि विद्युत विभाग रोस्टर बदलते हुए समय से ज्यादा दिन में बिजली दे, ताकि टयूबवेल से किसानों को सिंचाई का लाभ मिल सके। समय से किसान पलेवा कर सकें।

भाकियू समय-समय पर जिला प्रशासन से किसानों की समस्याओं को कहता रहता है, लेकिन समस्याओं के प्रति जिला प्रशासन संवेदनशील नही है। किसान रात- दिन जंगली जानवरों बन्दरों, नील गायों से परेशान हैं। वन विभाग निरंकुश हो चुका है। बार-बार ज्ञापन देने पर भी जंगली जानवरों का निदान नहीं करता। पंचायत में तमाम किसानों ने भाकियू की सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर राजकिशोर सिंह, छेदीलाल, शिव सिंह, अर्जुन सिंह, उदयनारायण सिंह, राजकुमार, कमलेश, सन्तगोपाल, साधो प्रसाद, जयनारायण सिंह, रामशरण राजपूत, रामेश्वर आदि किसान मौजूद रहे।

चुप्पी तोडो खुलकर बोलो, रुक सके उत्पीडन , स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट छात्रों को किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर नोडल अधिकारी/सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की देखरेख में महिलाओं-बालिकाओं में सुरक्षा एवं विश्वास का माहौल बनाने की गरज से जारी मिशन शक्ति एवं शक्ति दीदी तथा स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट अभियान में थाना बरगढ़ के दरोगा प्रभुनाथ सिंह ने राजकीय हाईस्कूल मुरका में छात्र/छात्राओं को पुलिस कार्यशैली बाबत विस्तार से जानकारी देकर जागरुक किया।

सोमवार को हुई गोष्ठी में स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट के बच्चों को सुरक्षा-सहायता को महिला व बाल अपराध के बारे में प्रशिक्षित किया। शासन से जारी विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर 1090 वीमेन पावरलाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 108 एम्बुलेंस सेवा, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098 चाइल्ड लाइन, 102 स्वास्थ्य सेवा तथा थानों में स्थापित महिला हेल्प डेस्क के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया। शासन के विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों के पम्पलेट बांटे। फायर ब्रिगेड की टीम ने स्कूली बच्चों को आग बुझाने के यंत्र के उपयोग के बारे में बताया। आपदा प्रबन्धन के प्रकार एवं तरीके मानव जनित, रेल दुर्घटना, भूकम्प, बाढ़, भूस्खलन, चक्रवात, आगजनी, आकाशीय बिजली के बारे में जानकारी दी।

स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट को मिशन शक्ति-शक्ती दीदी के तहत बताया कि उनके साथ हो रहे किसी भी प्रकार के उत्पीड़न की बाबत पुलिस से चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो, ताकि उत्पीड़न रोका जा सके। स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट को गुड-टच, बैड-टच बाबत जानकारी दी। अक्सर छोटे-छोटे बच्चों को जानने वाले ही बैड-टच करते हैं। हम समझ नहीं पाते, इस बाबत खुलकर बतायें तथा घर में छोटे भाई/बहन को भी गुड-टच, बैड-टच के बारे में बतायें।

बाल्टिक सागर में फिनलैंड और एस्टोनिया के बीच की गैस पाइपलाइन रिसाव ठीक किया गया

हेलसिंकी। फिनलैंड और एस्टोनिया ने बताया कि बाल्टिक सागर में दोनों देशों की बीच बिछी 'बाल्टिक कनेक्टर' गैस पाइपलाइन को रिसाव अस्थायी रूप से बंद कर दिया है। पाइपलाइन का संचालन करने वाली फिनलैंड की 'गैसग्रिड फिनलैंड' और एस्टोनिया की 'एलेरिंग' कंपनी ने बताया कि देर रात दो बजे पाइपलाइन के प्रेशर में असामान्य गिरावट देखी जिसके बाद उन्होंने गैस का प्रवाह बंद कर दिया। फिनलैंड की कंपनी 'गैसग्रिड फिनलैंड' ने एक बयान में कहा कि अवलोकनों के आधार पर, यह संदेह है कि फिनलैंड और एस्टोनिया के बीच अपतटीय पाइपलाइन लीक हो रही थी। अपतटीय पाइपलाइन में वाल्व अब बंद कर दिए गए हैं रिसाव बंद हो गया है। रिसाव किस कारण हुआ फिनिश ऑपरेटर ने अभी कोई कारण नहीं बताया है। उन्होंने कहा कि वह एलरिंग के साथ मिलकर इसकी जांच कर रहे हैं। सितंबर 2022 में, बाल्टिक सागर के बीच से होते हुए जर्मनी पहुंचने वाली प्राकृतिक गैस की दो पाइप लाइन में हुए असामान्य रिसाव के बाद, इसे सोची-समझी चाल के तहत नुकसान पहुंचाने की आशंका जताई गई थी।

इधर इस्राइल पर हुए हमलों की निंदा कर रहे थे पीएम ट्रूडो, उधर कनाडा में ही फलस्तीन के झंडे के साथ जश्न

टोरंटो । कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हमास द्वारा इस्राइल पर किए गए हमले की कड़ी निंदा की है। इस्राइल पर हुए इस हमले पर ट्रूडो की प्रतिक्रिया तब आई है जब वह खुद खालिस्तानी समर्थकों के खिलाफ पर्याप्त कार्रवाई न कर पाने की वजह से भारत की आलोचना का सामना कर रहे हैं। हमास के हमले पर ट्रूडो की प्रतिक्रिया के बाद इंटरनेट पर एक वीडियो सामने आया है, जिसमें ओंटारियो के मिसिसॉगा की सड़कों पर कुछ युवाओं को फलस्तीन के झंडे के साथ इस्राइल पर इस हमले का जश्न मनाते हुए देखा गया है।

ओंटरियों की सड़कों पर युवाओं ने मनाया जश्न

फलस्तीन के आतंकी संगठन हमास ने इस्राइल पर हमला किया, जिसमें अबतक 700 से अधिक लोगों मारे गए तो वहीं 2000 के करीब घायल हुए हैं। हालांकि, इस्राइली सेना ने आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ किए गए अधिकांश क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल कर लिया है। कनाडाई मीडिया ने एक वीडियो जारी किया, जिसमें कई युवाओं को फलस्तीन झंडे के साथ वाहनों पर नारे लगाते हुए देखा गया। केवल कनाडा ही नहीं बल्कि स्वीडेन, जर्मनी और तुर्की में भी हमास द्वारा किए गए इस हमले का जश्न मनाने वाला वीडियो भी सामने आया है।

इस्राइल पर हमले का लंदन में मना जश्न, लोगों ने सड़कों पर लगाए फलस्तीन-हमास के समर्थन में नारे

लंदन। स्राइल पर हमास के हमले के बाद लंदन की सड़कों पर जश्न की वीडियो सामने आई है। बता दें कि हमास के हमले में इस्राइल में 700 से ज्यादा लोगों की जान गई है। जहां इस हमले से पूरी दुनिया स्तब्ध है, वहीं लंदन की सड़कों पर लोग हमास के हमले के समर्थन में जश्न मनाते दिखे। घटना के बाद लंदन मेट्रोपेलिटन पुलिस ने पेट्रोलिंग बढ़ा दी है। मेट्रोपोलिटन विभाग ने एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए बताया कि 'हमें इन घटनाओं की जानकारी है, जिनमें गाजा की सीमा पर इस्राइल में जारी संघर्ष से संबंधित खबरों को सोशल मीडिया पर साझा किया जा रहा है। हम विभिन्न समुदायों के नेताओं के संपर्क में हैं।'

लंदन पुलिस ने ये भी लिखा कि हमें इस बात की जानकारी है कि आने वाले दिनों में विरोध प्रदर्शन होंगे लेकिन हम सुनिश्चित करेंगे कि विरोध प्रदर्शन का अधिकार मिलने के साथ ही कानून व्यवस्था भी ना बिगड़े। बता दें कि एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जिसमें कुछ लोग लंदन की सड़कों पर फलस्तीन का झंडा लेकर समर्थन में नारे लगा रहे हैं। हालांकि सोशल मीडिया पर इस वीडियो की आलोचना भी हो रही है और कई यूजर्स ने कहा है कि 'इस्राइल में लोग बेरहमी से मारे जा रहे हैं और लंदन में लोग इसका जश्न मना रहे हैं!'सोशल मीडिया पर कई ऐसे वीडियो सामने आ रहे हैं, जहां लोग इस्राइल और फलस्तीन के समर्थन में इकट्ठा हुए हैं और नारेबाजी कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसे अमेरिका के न्यूयॉर्क का बताया जा रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि इस्राइल और फलस्तीन समर्थक आमने-सामने आ गए हैं और उनके बीच कहासुनी हो रही है।

इजराइली महिलाओं से दुष्कर्म और बंधक बच्चों को हथियार बना रहे हमास आतंकी

यरुशलम। इजराइल पर हमला करने वाले हमास आतंकी इजराइली महिलाओं से दुष्कर्म और बंधक बच्चों को हथियार बना रहे हैं। हमास आतंकी महिलाओं से दुष्कर्म करने के साथ ही बच्चों को बंधक बनाकर उन्हें जानवरों की तरह पिंजरों में कैद किये हुए हैं। इजराइल पर हमास के हमले के बाद आम इजराइली नागरिकों पर सर्वाधिक गाज गिरी है।

इजराइली सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल जोनाथन कॉनरिकस ने बताया कि गाजा पट्टी में हमास ने कई इजराइली नागरिकों को बंधक बनाकर रखा हुआ है, जिसमें महिलाओं के साथ भारी संख्या में बच्चे भी हैं। इजराइली वॉर रूम ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर कुछ तस्वीरें साझा करते हुए लिखा है कि हमास ने भारी संख्या में महिलाओं को बंधक बनाया

हुआ है। इस बात की पुष्टि भी हुई है कि हमास के आतंकी दुष्कर्म को युद्ध के हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। हमास के प्रवक्ता ने बयान में यह भी कहा कि इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू जितना सोच रहे हैं, बंधकों की संख्या उससे कई ज्यादा है।

कई इजराइली नागरिकों ने अपहरण हुए अपने परिजनों की तस्वीरें भी साझा की हैं। ऐसे ही कुछ चित्रों में बंधक बनाए गए बच्चे पिंजरे में कैद दिख रहे हैं। इजराइली प्रशासन ने बंधक बनाए गए लोगों के परिवारवालों को अपना सामान पुलिस स्टेशनों में सौंपने के लिए कहा है, जिससे डीएनए सैंपल लिया जा सके। इस बीच इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बंधकों के लिए हमास को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि जो भी बंधकों को कोई नुकसान पहुंएगा, इजराइल उससे हिसाब बराबर करेगा।

इससे पहले इंटरनेट पर एक वीडियो जारी किया गया, जिसमें हमास के आतंकी एक 25 वर्षीय इजराइली महिला को शांति उत्सव से उठाकर ले गए। इस वीडियो में देखा जा सकता था कि उक्त महिला अपने जीवन के लिए विनती कर रही थी। महिला के चिल्लाने के बावजूद आतंकी उसे जबरन ले गए।

'हम दुनिया को अपने देश पर हुए अत्याचारों को भूलने नहीं देंगे',यूएन में इस्राइल के स्थायी प्रतिनिधि

न्यूयार्क। आतंकी संगठन हमास के इस्राइल पर अचानक किए गए हमले के बाद दोनों के बीच संघर्ष जारी है। इन हमलों में अभी तक एक हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। इस बीच, न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में इस्राइल के स्थायी प्रतिनिधि गिलाद एर्दान ने कहा कि यह इस्राइल का 9/11 है। साथ ही, संयुक्त राष्ट्र (यूएन) पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि जब इस्राइल की बात आती है तो संयुक्त राष्ट्र की याददाश्त बहुत कमजोर हो जाती है, जिस आतंक को हम जल्दी से खत्म करते हैं, वह एक साइड नोट बनकर रह जाता है। हालांकि, इस बार ऐसा नहीं होगा।

गौरतलब है, आतंकी संगठन हमास ने गाजा से शनिवार की सुबह अचानक इस्राइली शहरों पर ताबड़तोड़ रॉकेट दाग दिए थे। यही नहीं, हमास के बंदूकधारी इस्राइली शहरों में भी घुस गए और कुछ सैन्य वाहनों पर कब्जा कर हमले किए। कई इस्राइली सैनिकों को बंधक भी बना लिया। इस पर इस्राइल ने भी जवाबी हमला किया। फिलहाल, दोनों के बीच यह संघर्ष जारी है। एर्दान ने कहा, ' पिछले दिन इस्राइली के लिए विनाशकारी रहे हैं। हमारे देश को खतरनाक हमले का सामना करना पड़ रहा है। मरने वालों की संख्या डराने वाली है। पिछले दो दिनों में हमास के हमले में मेरे देश के सैकड़ों लोगों की मौत हुई है।'

उन्होंने कहा कि हमास के आतंकवादियों ने इस्राइल में हजारों रॉकेट दागे। हमास के सैकड़ों आतंकवादियों ने इस्राइल में घुसपैठ की और सड़क पर निर्दोष इस्राइली नागरिकों को गोली मारी। आतंकवादियों ने घरों में भी तोड़फोड़ की और लोगों को गोली मारी। ये युद्ध अपराध है। गिलाद एर्दान ने आगे कहा कि यह इस्राइल 9/11 है।

शिकागो में रेस्तरां के बाहर गोली चली, आठ लोग घायल

शिकागो। अमेरिका के शिकागो में रिवर नॉर्थ क्षेत्र में स्थित ब्लम रेस्तरां और बार के बाहर तड़के हुई गोलीबारी में आठ लोग घायल हो गए। शिकागो पुलिस ने कहा कि वेस्ट एरी स्ट्रीट के 300 ब्लॉक में सुबह करीब 2:40 बजे गोली चली। इस गोलीबारी में आठ लोग घायल हो गए। यह जानकारी मीडिया रिपोर्ट्स में दी गई है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पांच घायलों को नॉर्थ वेस्टर्न मेमोरियल अस्पताल ले जाया गया। पुलिस ने कहा कि जिन तीन अन्य लोगों को गोली मारी गई, उन्हें स्ट्रोगर अस्पताल

ले जाया गया। घायलों में महिलाएं भी शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आसपास के लोग लंबे समय से इस रेस्तरां और बार को बंद करने की मांग कर रहे हैं।

चीन के बीआरआई प्रोजेक्ट की नीतियों में व्यापक सुधार की जरूरतः नेपाल

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' ने चीन के बेल्ट एंड रोड इनिसिएटिव (बीआरआई) प्रोजेक्ट की नीतियों में व्यापक सुधार की जरूरत बताई है। प्रचंड ने काठमांडू में पदस्थ चीनी राजदूत छेन सोंग के समक्ष कहा कि बीआरआई की ऋण और निवेश नीति में यदि सुधार नहीं किया गया तो नेपाल जैसे देश के लिए इस पर आगे बढ़ना मुश्किल होगा। चीनी राष्ट्रपति सी जिनपिंग के महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट बीआरआई के 10 वर्ष पूरा होने पर आयोजित एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री प्रचंड ने कहा कि नेपाल बीआरआई प्रोजेक्ट पर आगे बढ़ाने का इच्छुक है। हम बीआरआई के जरिए नेपाल में विकास को गति देना चाहते हैं,

लेकिन इसकी ऋण एवं निवेश की नीतियां हमारे अनुकूल नहीं है। इस कार्यक्रम का आयोजन नेपाल-चीन मैत्री फोरम ने किया था।प्रचंड ने कहा कि वैश्विक रूप से बीआरआई के आर्थिक पक्ष को लेकर जो संदेह है उसको लेकर चीन को गंभीर होने की जरूरत है। बीआरआई प्रोजेक्ट के तहत जो ऋण उपलब्ध कराया जाता है उसकी दरें पूरी दुनिया में सर्वाधिक हैं। चीन बीआरआई के तहत पांच प्रतिशत ब्याज पर ऋण देता है, जबकि अन्य कोई देश या निकाय 0.5 प्रतिशत से लेकर 0.25 प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराता है। नेपाल वर्ष 2017 में ही बीआरआई में सहभागी होने के लिए हस्ताक्षर कर चुका है, लेकिन 6 साल बाद आज भी नेपाल में बीआरआई के एक भी प्रोजेक्ट पर काम नहीं हो सका है। हालांकि चीन पोखरा स्थित अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट को बीआरआई के अंतर्गत होने का दावा करता रहा है और नेपाल भी चीन के इस दावे को सिरे से खारिज करता आ रहा है।

अफगानिस्तान भूकंप : मलबों कें नीचे सिसक रही जिंदगी, चारो तरफ चीख-पुकार और मदद की गुहार

काबुल। अफगानिस्तान भूकंप से हजारों परिवार बरबाद हो गए हैं, करीब 2500 से अधिक लोगों की मौत चुकी है और लाखों लोग इस विभीषिका से जूझ रहे हैं। भूकंप के बाद अफगानिस्तान के शासक तालिबान ने अन्य देशों से मदद की गुहार लगाई है। ये आंकड़ा तालिबान सरकार के प्रवक्ता ने दिया है। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय मामलों के दफ्तर से एक अपडेट में कहा गया है कि 465 घरों के तबाह होने की सूचना है और 135 क्षतिग्रस्त हो गए हैं। इतना ही नहीं कई लाशें अभी भी घरों के मलबे के नीचे दबी हुई है जिन्हें बाहर निकालने का काम लगातार जारी है। तो कहीं घर परिवारों ने अपने किसी न किसी एक सदस्य को खो दिया है। संयुक्त राष्ट्र के दफ्तर ने कहा, भागीदारों और स्थानीय अधिकारियों का अनुमान है कि

हताहतों की संख्या बढ़ सकती है क्योंकि ध्वस्त इमारतों के नीचे कुछ लोगों के फंसे होने की खबरों के बीच खोज और बचाव प्रयास जारी हैं। लोग मदद की गुहार लगा रहे हैं।

जानकारी के अनुसार 5.9 तीव्रता वाला लेटेस्ट भूकंप हेरात के 'जिंदा जान' जिले में 7.7 किमी की गहराई पर आया। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भूकंप आसपास के फराह और बदगीस प्रांतों में भी महसूस किया गया। अफगानिस्तान में भूकंप आने का खतरा रहता है, खासकर हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला में, जो यूरेशियन और भारतीय टेक्टॉनिक प्लेटों के अभिसरण के पास स्थित है।

उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान में भूकंप फराह और बदगीस प्रांतों में महसूर किया गया। अफगानिस्तान का बड़ा इलाका भूकंप संभावित है। हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला में यूरेशियन और भारतीय टैक्टोनिक प्लेटों के अभिसरण की वजह से यहां भूकंप अकसर आता रहता है। कई बार हिंदुकुश के भूकंप का असर भारत के दिल दिल्ली तक होता है।

चीन बना रहा बेहद खतरनाक परमाणु पनडुब्बी, ड्रैगन के नए पैंतरे ने बढ़ाई दुनिया की परेशानी

बीजिंग । ताकत का केंद्र एशिया बन चुका है और यही वजह है कि एशिया में हथियारों की होड़ लगी हुई है। अब इस हथियारों की होड़ में चीन के नए पैंतरे ने दुनिया की परेशानी बढ़ा दी है। दरअसल चीन एक बेहद खतरनाक परमाणु पनडुब्बी का विकास कर रहा है। इस पनडुब्बी की खासियत ये है कि यह बेहद शांत रहकर समुद्र में गश्त करने में सक्षम होगी, जिसके चलते इसका पता लगा पाना बेहद मुश्किल होगा। अनुमान है कि इस दशक के अंत तक चीन इस नई परमाणु पनडुब्बी का निर्माण पूरा कर लेगा।

रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि चीन 096 टाइप की बैलेस्टिक मिसाइलों का निर्माण कर रहा है। इन परमाणु पनडुब्बियों में रूसी तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे ये समुद्र में संचालन के दौरान बेहद कम आवाज करेगी, जिससे इसे ट्रैक कर पाना अमेरिका समेत अन्य सहयोगी देशों के लिए बेहद मुश्किल होगा। बीती मई में यूएस नेवल वॉर कॉलेज में आयोजित हुए सम्मेलन में इस पर चर्चा हुई और चीन के मेरीटाइम स्टडीज इंस्टीट्यूट ने अगस्त में प्रकाशित एक लेख में नई परमाणु पनडुब्बी की खासियतों के बारे में जानकारी दी है। अभी चीन की परमाणु पनडुब्बियां परमाणु हमला करने की पूरी ताकत के साथ दक्षिण चीन सागर और हिंद प्रशांत महासागर में गश्त करती रहती हैं। अमेरिका और भारत-जापान समेत उसके अन्य सहयोगी देश चीन की परमाणु पनडुब्बियों पर नजर रखते हैं लेकिन 096 पनडुब्बी के आने के बाद इन देशों की चुनौती कई गुना बढ़ जाएगी।

इजरायल में हुए हमले में 10 नेपाली छात्रों की मौत

काठमांडू। इजरायल पर हमास के हमले में 10 नेपाल के छात्रों की मौत हो गई है। इजरायल स्थित नेपाली दूतावास ने इन छात्रों की मौत होने की आधिकारिक जानकारी नेपाल सरकार को भेजी है। मृत छात्रों के शवों को जल्द ही नेपाल भेजने की व्यवस्था की जा रही है। इजरायल स्थित नेपाली राजदूत कान्ता रिजाल ने काठमांडू स्थित विदेश मंत्री एनपी साउद को फोन करके 10 नेपाली छात्रों की मौत होने की जानकारी दी है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक को भेजी गई जानकारी के मुताबिक मरने वालों में कैलाली

के नारायण न्यौपाने, बझांग के गणेश कुमार नेपाली, कैलाली के आशिष चौधरी, दार्चुला के दीपेश राज विष्ट, धनुषा के आनन्द साह और सुनसरी के राजेश कुमार पदम थापा, सल्यान के प्रवेश भण्डारी और दार्चुला के लोकेन्द्र सिंह धामी की मौत की पुष्टि हुई है। इसके अलावा जो नेपाली नागरिक हमले में गम्भीर रूप से स्वर्णकार का नाम शामिल है। इसी तरह डोटी के राजन फुलारा व घायल हो गए हैं, उनमें गोरखा जिला के हिमाचल कट्टेल, दांग निवासी प्रवीण डांगी और सल्यान निवासी विधान सेजुवाल हैं जिनका इलाज स्थानीय अस्पताल में किया चल रहा है। कैलाली के धन बहादुर क्षेत्री को इलाज के बाद वापस उस बंकर में भेज दिया गया है, जहां अन्य नेपाली नागरिकों को सुरक्षित रखा गया है।

विदेश मंत्री एनपी साउद ने बताया कि इजरायल में मारे गए छात्रों के शव को जल्द से जल्द नेपाल मंगवाने की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे अन्य नागरिकों को भी सुरक्षित स्वदेश वापसी के लिए इजरायल सरकार और स्थानीय प्रशासन से समन्वय शुरू कर दिया गया है।

इजरायल में 12 नेपाली छात्रों से संपर्क टूटा: विदेश मंत्री

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्री एनपी साउद ने हमास के हमले के बाद इजरायल में फंसे 12 नेपाली छात्रों से संपर्क न होने की जानकारी दी है। इजरायल की ताजा घटना के बाद नेपाली प्रतिनिधिसभा की बैठक में विदेश मंत्री साउद ने कहा कि सुदूर पश्चिम विश्वविद्यालय में पढ़ने गए छात्रों से संपर्क नहीं हो पाया है। सदन में विदेश मंत्री साउद ने कहा कि दक्षिणी इज़राइल के किबुत्ज़ एल्युमिन नामक स्थान पर पढ़ने वाले नेपाली छात्रों से अब संपर्क नहीं हो पा रहा है। इजरायल स्थित नेपाली दूतावास का हवाला देते हुए विदेश मंत्री साउद ने बताया कि ये जगह गाजा इलाके के करीब है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रारम्भिक जानकारी के मुताबिक हमास के हमले की वजह से 17 नेपाली नागरिकों के घायल होने की भी खबर है,

जिनमें दो की हालत चिंताजनक बताई गई है। सभी नेपाली नागरिकों का इलाज स्थानीय अस्पताल में चल रहा है।

हमास के हमले में कुछ नेपाली नागरिकों के हताहत होने की आशंका भी विदेश मंत्री ने जताई है। उन्होंने कहा कि संपर्क विहीन छात्रों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए इजरायल में नेपाली दूतावास वहां की स्थानीय प्रशासन के संपर्क में है। उन्होंने सदन को यह भी बताया कि इजराइल में नेपाली नागरिकों की वास्तविक स्थिति की पहचान करने, उन्हें सुरक्षित रखने, उन्हें बचाने और उनकी मदद करने के लिए आवश्यक सुविधा और समन्वय किया जा रहा है।

विदेश मंत्री साउद ने कहा कि इस समय इजराइल में करीब 4,500 नेपाली नागरिक केयरटेकर के रूप में काम कर रहे हैं। इसके अलावा 265 नेपाली छात्र इज़राइली सरकार के 'सीखो और कमाओ' कार्यक्रम के तहत गए हैं। इसी तरह नेपाल के अलग-अलग विश्वविद्यालय से करीब ढाई सौ से अधिक छात्र इस समय इजरायल में शैक्षिक भ्रमण पर हैं, जिनमें कृषि विश्वविद्यालय से 119 छात्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय से 97 और सुदूर पश्चिम विश्वविद्यालय से 49 छात्र इजरायल की यात्रा पर हैं।

भारत को स्विट्जरलैंड से अपने नागरिकों के बैंक खातों का ब्योरा मिला

बर्न/नई दिल्ली। भारत को स्विट्जरलैंड से अपने नागरिकों और संगठनों के स्विस बैंक खातों का ब्योरा मिला है। भारत को लगातार पांचवें साल ये जानकारी सालाना आधार पर सूचनाओं के स्वतः आदान-प्रदान की व्यवस्था के तहत मिली है। स्विट्जरलैंड ने 104 देशों के साथ करीब 36 लाख वित्तीय खातों का विवरण साझा किया है।

आधिकारियों ने सोमवार को बताया कि स्विट्जरलैंड और भारत के बीच सूचनाओं का यह पांचवां वार्षिक आदान-प्रदान है। भारतीय अधिकारियों के साथ साझा किया गया स्विस बैंक अकाउंट का नया विवरण ह्यसैकड़ों वित्तीय खातोंह्ल से संबंधित हैं, जिनमें कुछ लोगों, कॉरपोरेट और न्यास (ट्रस्ट) से जुड़े खातों की जानकारी है। हालांकि, अधिकारियों ने गोपनीयता से जुड़े नियमों और आगे की जांच पर इसके प्रतिकूल प्रभाव का हवाला देते हुए अन्य

विवरण में शामिल राशि का खुलासा नहीं किया है। स्विट्जरलैंड से साझा किए गए इस विवरण में पहचान, खाता और वित्तीय जानकारी शामिल है। इसमें नाम, पता, निवास का देश और कर पहचान संख्या के साथ ही रिपोर्टिंग वाले वित्तीय संस्थान, खाता शेष तथा पूंजीगत आय से संबंधित विस्तृत जानकारी शामिल है। अधिकारियों ने बताया कि यह आदान-प्रदान पिछले महीने हुआ। स्विट्जरलैंड से अब सितंबर, 2024 में फिर से ऐसी जानकारियां साझा की जाएंगी। भारत को सितंबर, 2019 में एईओएल के तहत स्विट्जरलैंड से पहली बार स्विस बैक खातों का ब्योरा मिला था। भारत उस वर्ष ऐसी जानकारी प्राप्त करने वाले 75 देशों में से एक था। स्विट्जरलैंड ने पहली बार सितंबर, 2018 के अंत में ऐसा आदान-प्रदान किया था। इसमें 36 देश शामिल थे, लेकिन भारत उस समय सूची में शामिल नहीं था।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।